अ० नेक्रासोव
किस्सा कप्तान व्रुंगेल का
चित्रकार
अजोर्गी यूदिन
प्रगति प्रकाशन
मास्को
१९८२

अनुवादक डा० मदनलाल मधु

Андрей Некрасов

ПРИКЛЮЧЕНИЯ КАПИТАНА ВРУНГЕЛЯ

На языке хинди

A Nekrasov

Visiting Captain Fibbur

हिन्दी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९८१

सोवियत संघ में मुद्रित

Н $\frac{70803-948}{014(01)-81}$ 730-79

4803010102

पहला अध्याय,

जिसमे लेखक अपनी पुस्तक के नायक से पाठको का परिचय करवाता है और जिसमे कोई खास बात नहीं है

हमारे नाविकी के विद्यालय मे ख्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच गपोडशख मार्ग-निर्देशन का विषय पढाते थे।

' मार्ग-निर्देशन की विद्या," उन्होने पहले पाठ मे ही कहा, "हमे कही कम खतरनाक और अधिक उपयोगी समुद्र-मार्ग चुनना, नक्शे पर इन मार्गो को अकित करना और उन्ही पर जहाजो को चलाना सिखाती हे मार्ग-निर्देशन की विद्या अचूक नही हे," उन्होने बाद मे इतना और जोड दिया। "इस विद्या पर पूरी तरह से अधिकार पाने के लिये जहाजरानी का लम्बा अमली तजरबा जरूरी ह "

यह साधारण-सी भूमिका हमारे बीच बहुत गमागर्म बहस का कारण बन गयी और सारे विद्यार्थी दो दलो मे बट गये। एक दल का साधार यह कहना था कि गपोडशख समुद्र को बहुत अच्छी तरह से जानने-पहचाननेवाले बडे अनुभवी जहाजी है, जो अब अध्यापन-कार्य करते है। मार्ग-निर्देशन की विद्या वे वास्तव म ही बहुत अच्छी तरह से जानते थे, खूब दिलचस्प तरीके से और जोश के साथ पढाते थे और उनके पास शायद तजरबे की भी कुछ कमी नही थी। ऐसा लगता था कि गपोडशख ने सचमुच ही सारे सागर और महासागर छान डाले थे।

लेकिन, जैसा कि सर्वविदित है, तरह-तरह के लोग होते है। कुछ तो हद से ज्यादा एतबार करनेवाले और कुछ, इसके उलट, हर चीज को शक की नजर से देखते है और हर चीज की आलोचना करने का रुझान रखते है। हमारे बीच भी ऐसे

लोग थे, जो जोर देकर यह कहते थे कि हमारे ये प्रोफेसर नाविकी के अन्य मार्ग निर्देशको जैसे नही ह और खुद तो कभी जहाज पर गये ही नही।

अपनी इस बेतुकी बात के सबूत मे वे प्रोफेसर गपोडशख की शक्ल-सूरत का उल्लेख करते थे। उनकी शक्ल-सूरत सचमुच ही एक बढिया जहाजी की हमारी कल्पना के अनुरूप नही थी।

प्रोफेसर गपोडशख चुन्नटदार लम्बी कमीज पहनते थे, उस पर कढाईदार पेटी बाधते थे, चिकने-चमकते बालो को गुद्दी से माथे की ओर सवारते थे, बिना कमानी का डोरीवाला चश्मा लगाते थे, सफाचट दाढी बनाते थे, खासे मोटे और नाटे व्यक्ति थे, उनकी आवाज सयत और प्यारी थी, वे अक्सर मुस्कराते थ, हाथ मलते थे, नसवार सूघते थे और अपने सारे रग-ढग से महासागरो मे जानेवाले जहाज के कप्तान के बजाय अवकाशप्राप्त दवाफरोश कही ज्यादा प्रतीत होते थे।

चुनाचे इस बहस का फैसला करने के लिये हमने एक दिन गपोडशख से यह कहा कि वे हमे अपनी समुद्री यात्राओ के बारे मे कुछ बताये।

'यह भी क्या सूझी है आप लोगो को। अब यह सुनाने का वक्त नही है," उन्होने मुस्कराकर आपत्ति की और अगला व्याख्यान देने के बजाय बेवक्त ही मार्ग-निर्देशन की विद्या की परीक्षा लेने का निर्णय कर दिया।

घटी बजने पर जब वे बगल मे कापियो का बडल दबाये हुए बाहर निकले, तो हमारी बहस खत्म हो गयी। उस क्षण मे किसी को भी इस बात का सन्देह नही रहा कि प्रोफेसर गपोडशख ने दूसरे मार्ग-निर्देशको से भिन्न, सागरो-महासागरो की यात्रा किये बिना घर बैठे ही तजरबा हासिल किया है।

अगर बहुत जल्द और बिल्कुल अप्रत्याशित ढग से मुझे खुद गपोडशख के मुह मे उनकी खतरो और बहादुरी के कारनामो से भरपूर असाधारण दिलेरीवाली दुनिया की यात्रा की दास्तान सुनने को न मिलती, तो प्रोफेसर गपोडशख के बारे म हमारी यह गलत धारणा ही बनी रहती।

ऐसा सयोग से ही हुआ। परीक्षा के बाद गपोडशख कही गायब हो गये। तीन दिन बीतने पर हमे यह पता चला कि घर लौटते समय ट्राम मे उनके गालोश* खो गये, उनके पाव भीग गये, उन्हे ठण्ड लग गयी और वे बीमार पडे हुए है। हमारे लिये वह काफी व्यस्तता का समय था। वसन्त के दिन थे, रिकार्ड बुक पर अक पाने और परीक्षाए देने का वक्त नजदीक था कापियो की हमे हर दिन जरूरत

---

* जूतो के ऊपर पहने जानवाले रबड के जूते, ताकि तले न भीगे। —अनु०

होती थी   इसलिये क्लास-मानीटर होने के नाते मुझे गपोडशख के फ्लैट पर जाने को कहा गया।

मैं चल दिया। फ्लेट आसानी से मिल गया, मैंने दरवाजे पर दस्तक दी। जब तक मै दरवाजे के सामने खडा इन्तजार कर रहा था मेरी कल्पना मे बीमार गपोडशख की बिल्कुल साफ ऐसी तस्वीर उभर रही थी – उनके दाये-बाये तकिये रखे ह वे कम्बलो से ढके ह, जिनके नीचे से जुकाम के कारण लाल हुई उनकी नाक बाहर निकली हुई है।

मैंने दूसरी बार अधिक जोर से दम्तक दी। कोई जवाब नही मिला। तब मैंने दरवाजे पर लगे हत्थे को दबाया दरवाजा खुल गया ओर   मै अप्रत्याशित दृश्य के कारण स्तम्भित-सा रह गया।

अवकाशप्राप्त साधारण-से दवाफरोश की जगह एक रोबदार कप्तान कधो पर सुनहरी कशीदाकारी समेत जहाजियो की पूरी वर्दी पहने मेज पर बैठे तथा किमी प्राचीन पुस्तक के अध्ययन मे डूबे हुए थे। वे कुछ जले हुए बहुत बडे पाइप के मिरे को गुस्से से कुतर रहे थे, बिना कमानी का चश्मा गायब था और पके हुए अस्त-व्यस्त बाल गुच्छो के रूप मे सभी ओर लहरा रहे थे   यहा तक कि नाक भी, बेशक वह सचमुच ही लाल थी, कुछ अधिक ठोस-सी हो गयी थी और अपनी सभी गतिविधियो से सकल्प और साहस को अभिव्यक्त करती थी।

ऊचे मस्तूलो और बर्फ जैसे सफेद पालोवाले एक पोत का नमूना जिम पर रग-बिरगे झण्डे लगे थे, एक खास स्टैड पर गपोडशख के सामने मेज पर टिका हुआ था। दूरी मापने का यन्त्र – सेक्सटैट – इस नमूने के पास रखा था। नक्शो का लापरवाही से फेका हुआ बडल शार्क मछली के सूखे पख को आधा ढके हुए था। फर्श पर कालीन की जगह सिर और खागो सहित वालरस की खाल बिछी हुई थी, दीवार पर टेढी तलवार और उसके निकट समुद्री शिकार के लिये भाला टगा हुआ था। कुछ और भी था, मगर मैं उसे देख नही पाया।

दरवाजा चरमराया। गपोडशख ने सिर ऊपर उठाया, किताब मे छोटा-सा खजर रख दिया, वे उठे ओर मानो तूफान मे डोलते हुए-से मेरी तरफ बढे।

"आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। सागरो महासागरो म जानेवाले जहाजो का कप्तान क्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच गपोडशख," उन्होंने मेरी ओर हाथ बढाते हुए भारी-भरकम आवाज मे कहा। 'किसलिये आपका आना हुआ?'

आपसे सच कहता हू कि मैं तो कुछ सहम भी गया। 'क्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच मैं तो कापिया लेने के लिये आया हू   लडको ने भेजा है   ' मैंने कहना शुरू किया।

"माफी चाहता हू," उन्होने मुझे टोका, "माफी चाहता हू, पहचान नही पाया। कम्बख्त बीमारी ने याददाश्त ही खराब कर दी। बढा गया हू, क्या किया जाये   हा, तो आप कापिया लेने आये हे?" गपोडशख ने पूछा और झुककर उन्हे मेज के नीचे इधर-उधर ढूढने लगे।

आखिर उन्होने वहा से कापियो का बडल निकाला और उस पर बालो से ढका चौडा हाथ मारकर उसे झाडा। सो भी ऐसे कि सभी ओर धूल उडी।

"यह लीजिये," उन्होने बडे जोर से तथा मजा लेते हुए छीकने के बाद कहा, "सभी ने उच्चतम अक पाये हे   जी, सभी ने! बधाई देता हू! पोत-निर्देशन की विद्या की पूरी जानकारी के साथ आप लोग व्यापार-ध्वज की छाया मे सागरी विस्तारो की यात्राए करने निकलेगे   यह बडी प्रशसा की बात है और साथ ही बहुत दिलचस्प भी। ओह, मेरे नौजवान दोस्त, कितने ऐसे नजारे आपकी राह देख रहे ह, जिन्हे बयान करना मुमकिन नही, जाने कितनी अमिट छापे पडेगी आपके दिलो पर! उष्ण देश, ध्रुव," उन्होने सपना-सा देखते हुए यह सब कहा। "आपको बताऊ कि जब तक मैने खुद जहाजरानी नही की थी, म इन सब चीजो के सपने देखा करता था।"

"क्या आप जहाजरानी करते रहे ह?" मै सोचे-विचारे बिना कह उठा।

"यह भी खूब रही!" गपोडशख नाराज हो गये। "में जहाजरानी करता रहा हू या नही? मेरे दोस्त, मेने जहाजरानी की है। बहुत ज्यादा जहाजरानी की हे। यह कहना चाहिये कि दो स्थानो और पालोवाले पोत पर मेरी यात्रा ही सारी दुनिया की एकमात्र यात्रा थी। एक लाख ४० हजार मील की यात्रा। अनेक बन्दरगाहो मे प्रवेश, दिलेरी के ढेरो कारनामे   जाहिर हे कि अब वह जमाना नही रहा। रग-ढग बदल गये है और हालात भी," उन्होने कुछ देर चुप रहने के बाद इतना और जोड दिया। "कहना चाहिये कि अब बहुत कुछ दूसरी ही रोशनी मे देखा जाता है, फिर भी जब मुडकर उस बीते जमाने की गहराई मे झाकता हू, तो यह मानना ही पडता है कि दुनिया के गिर्द लगाये गये उस चक्कर मे बहुत कुछ दिलचस्प और शिक्षाप्रद था। याद करने और सुनाने लायक बहुत कुछ है!   अरे, आप बैठिये न   "

इतना कहकर ख्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच ने ह्वेल की रीढ का जोड मेरी तरफ खिसका दिया। मैं उस पर मानो कुर्सी की तरह बैठ गया और गपोडशख मुझे अपनी यात्रा की दास्तान सुनाने लगे।

दूसरा अध्याय,

जिसमे कप्तान गपोडशख अपने बडे सहायक सब्वल के अग्रेजी भाषा सीखने और नाविकी के क्षेत्र मे अपनी कुछ खास घटनाओ के बारे मे बताते हैं

हा तो मै अपनी कोठरी मे बठा था ओर समझिये कि बैठे-बठे ऊब गया। चुनाचे तय किया कि जवानी के दिनो की याद ताजा की जाये – ओर बस ऐसा ही कर डाला। सो भी इस तरह कि सारी दुनिया मे उसकी धूम मच गयी! जी ऐसी बात ह। माफ कीजिये आप इस वक्त कही जाने की जल्दी मे तो नही है? नही, तो बहुत अच्छी बात ह। तब मै सिलसिलेवार सारा किस्सा बयान करता हू।

जाहिर है कि उन दिनो म कुछ जवान था, लेकिन ऐसा नही कि बिल्कुल छोकरा ही होऊ। काफी तजरबा था ओर काफी दिन जी भी चुका था। जिन्दगी काफी देखी-भाली थी बडी इज्जत आर मान-मर्यादा थी ओर आपस डीग हाके बिना कहना चाहता हू कि यह सब मेरे अपने गुणो मेरी खूबियो की बदौलत ही हुआ था। ऐसे हालात मे बडे से बडे जहाज का कप्तान बन सकता था। यह भी काफी दिलचस्प काम ह। लेकिन उस वक्त सबसे बडा जहाज यात्रा पर गया हुआ था और मुझे इन्तजार करना पसन्द नही है। सो मैने इस ख्याल को गोली मारी ओर तय किया कि पाल पोत पर ही यात्रा को निकलूगा। यह कोई हसी-खेल नही ह – दो स्थानो ओर पालोवाले छोटे-से पोत पर दुनिया के सफर को चल देना।

सो मैंने दिमाग मे जो स्कीम बनायी थी, उसे पूरा करने के लिये कोई छोटा-मोटा पोत ढूढना शुरू किया ओर कल्पना कीजिये, ढूट लिया। बिल्कुल वैसा ही जसा मुझे चाहिये था, मानो मेरे लिये ही बनाया गया हो।

यह सच ह कि इस पोत की कुछ मरम्मत करना जरूरी था लेकिन मेरी निगरानी मे यह काम तुरत फुरत हो गया। उस पर रग-रोगन कर दिया गया नये पाल मस्तूल लगा दिये गये तख्ताबन्दी दुरुस्त की गयी पेंदे को दो फुट कम और पहलुओ को ऊचा कर दिया गया थोडे मे यह कि सारा झझट से निपटना

पडा। लेकिन फल यह मिला कि पोत क्या, वह तो मनमोहक खिलौना-सा बन गया। सिर्फ चालीस फुट का डेक था। बस, यही कहना चाहिये – "बित्ते भर की नाव और सागर के प्रबल थपेडे।"

मुझे वक्त से पहले लम्बी-चौडी बाते करना पसन्द नही है। चुनाचे पोत को तट के पास रख दिया तिरपाल से ढक दिया और खुद सफर की तैयारी करने के काम मे जुट गया। जैसा कि आप जानते है, इस तरह के अभियान की सफलता बहुत हद तक अच्छे जहाजियो पर निर्भर करती है। इसलिये मैंने इस लम्बी और कठिन यात्रा के लिये अपने एकमात्र सहायक और साथी को बहुत यत्न से चुना। और मुझे यह कहना ही होगा कि किस्मत ने मेरा साथ दिया – मेरा बडा सहायक सब्बल अद्भुत मानसिक गुणोवाला व्यक्ति सिद्ध हुआ। आप खुद ही फैसला कर सकते है – कद सात फुट, छ इच, आवाज जहाज के भोपू जसी, असाधारण शारीरिक शक्ति और बडा जीवट। इस पर तुर्रा यह कि अपने काम का बढिया जानकार और इतना विनम्र कि हैरानी हो। मतलब यह कि कमाल का जहाजी। लेकिन सब्बल मे कमी भी थी। एक ही, मगर सजीदा – उसे कोई भी विदेशी भाषा नही आती थी। निश्चय ही यह एक बडा दोष हे, किन्तु इस कारण मैंने अपना निर्णय नही बदला। मैंने सारी स्थिति के पक्ष-विपक्ष पर ध्यान दिया, तर्क-वितर्क और सोच-विचार किया, मामले को जाचा-परखा और सब्बल को जल्दी से जल्दी बोल-चाल की अग्रेजी सीखने का आदेश दिया। ओर आपको बताऊ, सब्बल सीख गया। कठिनाई के बिना तो नही, लेकिन तीन हफ्ते मे ही सीख गया।

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये मैंने अध्यापन का एक खास, उस वक्त तक अनजाना तरीका चुना। अपने बडे सहायक के लिये मैंने दो अध्यापक नियुक्त किये। इनमे से एक को ककहरे से अग्रेजी पढाने को कहा और दूसरे को अन्त से। और गौर फरमाइये, सब्बल को ककहरा, विशेषत सही उच्चारण सीखने मे मुसीबत का सामना करना पडा। मेरा बडा सहायक सब्बल अग्रेजी भाषा के कठिन अक्षरो को दिन-रात रटता रहता था। और आपसे सच कहू कि इस मामले मे एक परेशानी से भी नही बचा जा सका। तो वह एक दिन मेज पर बैठा हुआ अग्रेजी भाषा की वर्णमाला का नौवा अक्षर "आइ" रट रहा था।

"आइ आइ आइ" वह पूरे जोर और अधिकाधिक ऊची आवाज मे दोहरा रहा था।

पडोसिन ने सुना और उधर नजर डाली। देखा – एक हट्टा-कट्टा देव सा बैठा हुआ "हाय, हाय" कर रहा है। उसने नतीजा निकाला कि बेचारे की तबीयत

222
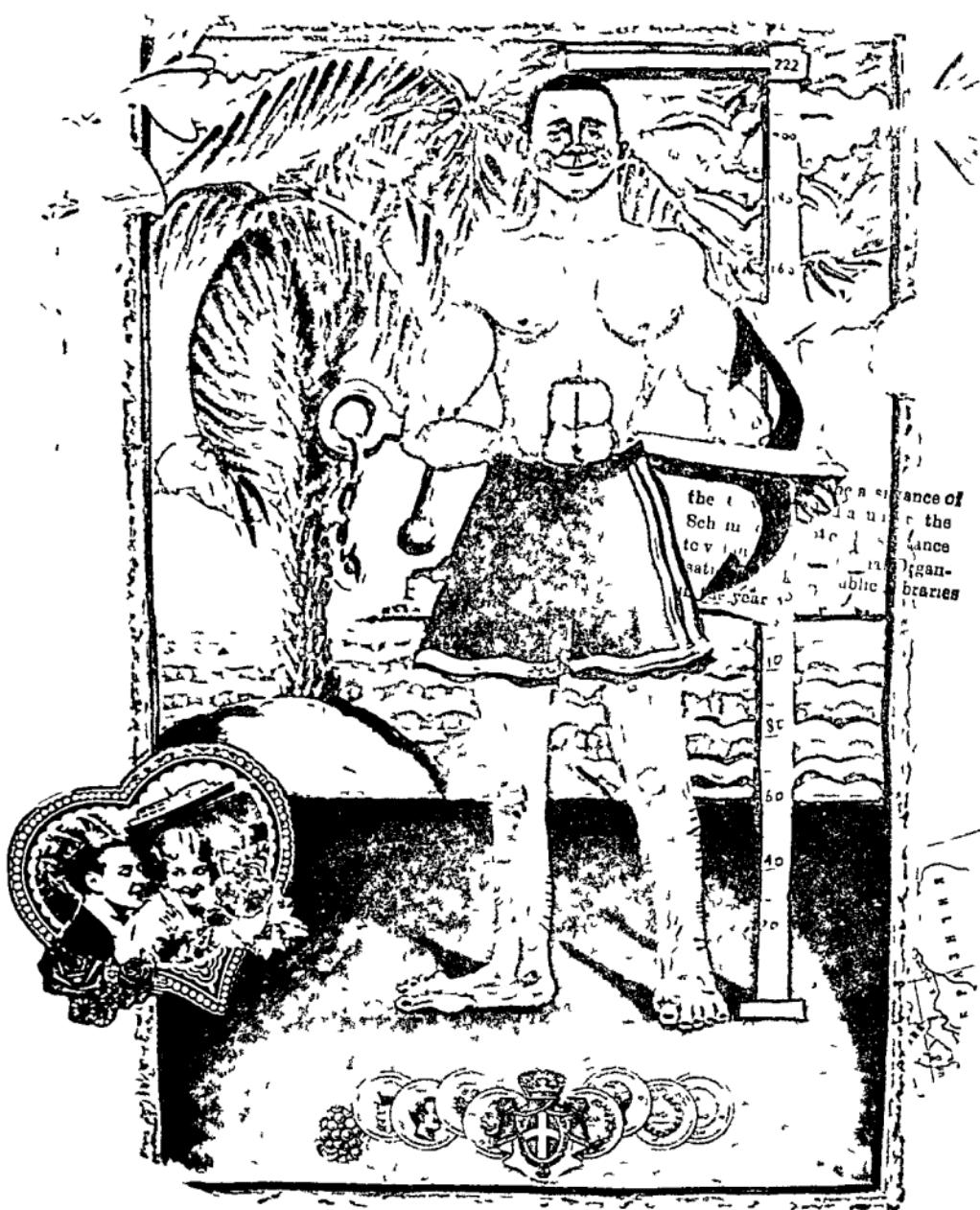
खराब है और झटपट "फौरी डाक्टरी मददवालो" को बुला लिया। वे आ गये और भले आदमी पर जकड-कोट डालकर अस्पताल ले गये। अगले दिन बडी मुश्किल से म उसे अस्पताल से निजात दिलवाकर घर लाया। वैसे, सब खैरियत ही रही – ठीक तीन हफ्ते बाद मेरे बडे सहायक सब्बल ने मुझे रिपोर्ट दी कि दोनो अध्यापको ने उसे मध्य तक पढा दिया ह और इस तरह कार्यभार पूरा हो गया है। बस, उसी दिन रवाना हो जाने का निर्णय कर लिया। हमे तो पहले ही देर हो चुकी थी। आखिर वह चिर-प्रतीक्षित क्षण आया। सम्भव है कि अब तो इस घटना की ओर कोई खास ध्यान न दिया जाये। लेकिन उस जमाने मे ऐसी यात्रा एक अनूठी चीज थी। कहना चाहिये कि सनसनी पैदा करनेवाली बात थी। इसलिये इसमे हैरानी की कोई बात नही थी कि उस दिन सुबह से ही तट पर लोगो की भीड जमा हो गयी थी। कही झण्डे लहरा रहे थे और कही बैड बज रहा था, यो समझिये कि सभी खुशी मना रहे थे मैने चालन-चक्र सम्भाला और आदेश दिया –

"पाल ऊपर उठाये जाये सामनेवाला रस्सा खोल दिया जाये, चालन-चक्र को दाये घुमाया जाये!"

पाल उडने लगे, सफेद पखो की तरह फैल गये, उनमे हवा भर गयी, मगर पोत जहा का तहा खडा रहा। पीछेवाला रस्सा भी खोल दिया गया – फिर भी हम जहा के तहा खडे रहे। मे समझ गया कि कुछ निर्णायक कदम उठाना जरूरी है। इस वक्त एक कर्षण-जहाज करीब से गुजर रहा था। मैने भोपू मे से चिल्लाकर कहा –

"ऐ, कर्षण-जहाजवालो! हमारे इस पोत को अपने साथ बाध लो, बेडा गर्क हो इसका!"

कर्षण-जहाज ने हमारा रस्सा अपने साथ बाध लिया, वह फक-फक करता हुआ पूरा जोर लगा रहा था, पिछले भाग के पास झाग उगल रहा था, बस, खुद ऊपर को नही उठ रहा था। मगर हमारा पोत जहा का तहा खडा था क्या मामला है?

अचानक जोर की आवाज हुई, पोत एक ओर को झुक गया, क्षण भर को मेरी चेतना जाती रही और जब होश आया, तो देखा कि तटो की स्थिति बिल्कुल बदल गयी है, भीड गायब है, टोप-टोपिया पानी मे तैर रही है, आइसक्रीम का बक्स भी पास ही मे बह रहा है और सिने-कैमरा लिये एक नौजवान बक्स पर बैठा हुआ उसे घुमा रहा है।

पोत के नीचे पूरा हरा-भरा द्वीप दिख रहा था। मैने देखा और फौरन सारी बात समझ गया – बढइयो ने समझदारी का सबूत नही दिया था, गीली लकडी

घटनाए
तिथि रेखाश अक्षाश
मैं जाने की अनुमति
13
पोत चलाओ!
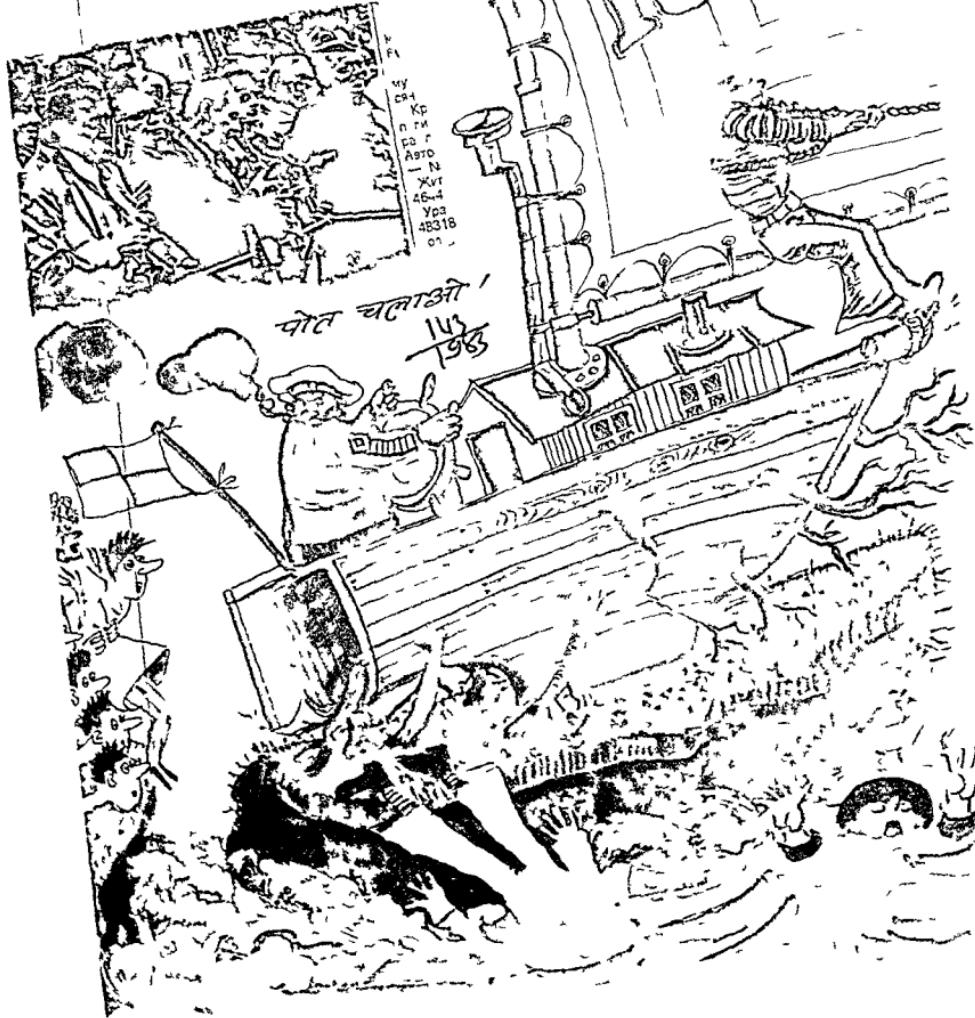
लगा दी थी। अब गौर फरमाइये गर्मी भर मे पोत के पूरे पहलू पर जडे निकल आयी थी और ये जडे तट मे गहरी उतर गयी थी। मुझे इस बात की पहले भी हैरानी हुई थी – तट पर इतनी सुन्दर झाडिया कहा से उग आयी? तो यह मामला था। बात यह हुई कि पोत मजबूत बना था, कर्षण-जहाज पूरा जोर लगा रहा था और रस्सा बडा मजबूत था। जैसे ही जोर का झटका लगा, वैसे ही झाडियो समेत आधा तट साथ खिच आया। जानते है कि इसी कारण तो जहाज बनाने के लिये गीली लकडी के इस्तेमाल की मनाही की जाती है क्या कहा जाये, खासी परेशानीवाला किस्सा रहा मगर खुशकिस्मती से किसी भी तरह के जानी-माली नुक्सान के बिना सब कुछ ठीक-ठाक हो गया।

साफ बात है कि देर करना मेरी योजना मे नही था, लेकिन यहा कोई क्या कर सकता था। यह तो जैसे कहते है अप्रत्याशित बात थी। चुनाचे लगर डालना और पोत के पहलुओ को साफ करना पडा। आप समझते है कि यह तो बडी अटपटी-सी बात होती – अगर मछुए न भी मिले, तो मछलिया हमसे लगेगी। अपना घर-बगीचा साथ लेकर समुद्र-यात्रा को जाना तो बेतुकी-सी चीज है।

मै और मेरा सहायक सब्बल दिन भर इसी काम मे उलझे रहे। बेहिचक मानता हू कि काफी मुसीबत उठानी पडी हमे खूब भीग और ठिठुर गये समुद्र पर रात घिर आयी, आकाश मे सितारे झिलमिला उठे, जहाजो पर आधी रात की घण्टी बजने लगी। मैंने सब्बल को सोने के लिये भेज दिया और खुद ड्यूटी पर रह गया। खडा-खडा अपनी भावी यात्रा की कठिनाइयो और मनोरम दृश्यो की कल्पना करने लगा। ऐसे खो गया अपनी कल्पना मे कि रात कब बीत गयी, कुछ पता ही नही चला। सुबह को मुझे एक भयानक आश्चर्य का मुह देखना पडा। इस दुर्घटना के कारण न केवल यात्रा का एक दिन और एक रात खो गये, बल्कि मै अपने जहाज का नाम भी खो बैठा।

शायद आप यह समझते है कि नाम का कोई महत्त्व नही होता? आप भूल कर रहे है, मेरे नोजवान दोस्त! जहाज का नाम भी वैसा ही महत्त्व रखता है, जैसे किसी व्यक्ति के लिये उसका कुलनाम। मिसाल के लिये कही दूर जाने की जरूरत नही – हम कह सकते है कि गपोडशख एक बडा सुन्दर और गूजता हुआ कुलनाम है। अगर मेरा कुलनाम भगोडू या मेरे एक शिष्य की भाति चूहा कुलनाम होता तो क्या मै उस इज्जत और भरोसे के काबिल माना जा सकता था, जो मुझे अब हासिल है? आप जरा कल्पना तो करे – सागरो और महासागरो मे जानेवाले जहाज का कप्तान चूहा हसी आती है न!

पोत के बारे मे भी ऐसा ही हे। उसका नाम रख दीजिये भीम" या "सूरमा" – उसके सामने तो जमी हुई वर्फ की तहे भी पिघल जायेगी, लेकिन अगर उसका नाम "टव" रख दिया जाये, तो वह तैरेगा भी टव की तरह और बिल्कुल शान्त मौसम मे भा उलट जायेगा।

इसलिये मैने अपने पोत का नाम तय करने के पहले दसियो नाम सोचे और उन पर सोच-विचार किया। मैंने उसका "महावली" नाम रखा। है न बढिया नाम, बढिया पोत के लिये! *यह था वह नाम, जिसे सभी महासागरो मे बडी शान* से लिया जा सकता था! मैंने तावे के ढले हुए अक्षरो का आर्डर दिया ओर उन्हे अपने हाथ से पोत के पृष्ठ भाग पर लगाया। उन्हे रगड-रगडकर खूब चमकाया और वे आग की लपटो की तरह लौ देने लगे। आध मील की दूरी से "महाबली" पढा *जा सकता था।*

तो उस मनहूस दिन मैं सुवह ही डेक पर अकेला खडा था। सागर एकदम शान्त था ओर बन्दरगाह पर नीद की खुमारी छायी थी। उनीदी रात के बाद मैं सोना चाहता था अचानक देखता क्या हू कि बन्दरगाह का छोटा-सा जहाज छप-छप करता आ रहा है, वह सीधा मेरे पास आया और उसने अखबारो का एक बडल मेरे डेक पर फेक दिया। *यह तो सभी जानते है कि अपनी तारीफ हर किसी को अच्छी* लगती है। हम सभी ठहरे लोग यानी इन्सान ओर जाहिर हे कि जव हमारे बारे मे अखबार मे लिखा जाता हे, तो हमे खुशी होती हे। जी हा, खुशी होती हे! चुनाचे मेने अखवार खोला। पढा –

"विश्व-यात्रा के लिये रवाना होने के समय कल जो दुर्घटना हुई, उसने कप्तान गपोडशख द्वारा अपने पोत को दिये गये नाम को पूरी तरह सार्थक सिद्ध कर दिया "

मुझे कुछ परेशानी हुई, लेकिन साफ कहू, तो बात पूरी तरह से मेरी समझ मे नही आयी। मैंने झटपट दूसरा अखबार खोला, तीसरा खोला इनमे से एक मे मुझे एक फोटो दिखाई दिया – बाये कोने मे म था, दाये मे मेरा बडा सहायक मव्वल और बीच मे हमारा सुन्दर पोत और शीर्षक था – कप्तान गपोडशख ओर बला' पोत, जिस पर वे यात्रा को रवाना हो रहे है '

तब सारी बात मेरी समझ मे आ गयी। म पोत के पृष्ठ भाग की ओर लपका, ध्यान से उसे देखा। वही हुआ था – नाम के कुछ अक्षर उतरकर गिर गये थे। "महावली" का "महा" ओर ' ई" की मात्रा का ऊपरी भाग गायब हो गया था।

वडी वेहूदा बात हो गयी थी! ऐसी वेहूदा कि क्या कहिये! लेकिन हो

-1।

सम्भाले था, मगर सामन, वला ' के विल्कुल सामने, क्षितिज पर बडी मुश्किल से नजर आनेवाले तट की एक पट्टी-सी धूसर धागे की तरह दिखाई दे रही थी।

और आप जानते है कि जब तट को तीस मील की दूरी पर बायी ओर होना चाहिए और वह तुम्हारे विल्कुल सामने दिख रहा हो, तो इसका क्या मतलव होता है? यह तो बडी बेतुकी, बडी बेहूदा बात होती हे। जहाजी के लिये शर्म और कलक की बात होती हे! मै तो स्तम्भित रह गया तिलमिला उठा ओर डर गया। क्या किया जाये? यकीन मानिये कि मैंने, इससे पहले कि देर हो जाये, पोत को वापस ले जाने और शर्म को बर्दाश्त करते हुए तट पर लौटने का निर्णय किया। नही तो ऐसे सहायक के साथ किसी ऐसी जगह जा फसेगे कि निकल नही पायेगे खास तौर पर रात के वक्त।

मै इसी के मुताबिक आदेश देनेवाला था, मैंने छाती मे हवा भी भर ली, ताकि बहुत अच्छा प्रभाव पडे, किन्तु सौभाग्य से इसी समय सारी वात साफ हो गयी। सब्वल की नाक ने उसे धोखा दे दिया था। मेरा बडा सहायक लगातार अपनी नाक को बाये मोड रहा था, बडे ललचाये ढग से लम्बी सासे लेता था और खुद भी उधर ही खिचता जा रहा था। तब सारी वात मेरी समझ मे आ गयी – बाये पहलूवाले मेरे केबिन मे बहुत बढिया रम की बोतल खुली रह गयी थी। शराब के मामले मे उसकी नाक बडी तेज थी और बात समझ मे आती है कि वह बोतल की तरफ खिच रहा था। ऐसा भी होता हे।

अगर ऐसी बात है, तो समझिये कि मामला ठीक किया जा सकता है। जहाजरानी के क्षेत्र मे यह एक तरह से अपने ढग की घटना थी। ऐसी घटनाए हो जाती हे, जिन्हे कोई विद्या पहले से नही देख पाती। मैंने तो इस मामले पर सोच-विचार तक नही किया, नीचे केबिन मे गया और वोतल को चुपचाप दाये पहलू पर लाकर रख दिया। सब्वल की नाक उधर वैसे ही खिच गयी, जैसे लोहा चुम्बक की तरफ पोत भी उधर ही चल दिया आर दो घण्टे बाद "वला" पोत अपने पहलेवाले मार्ग पर जाने लगा। तब मैंने बोतल को मस्तूल के पास सामने रख दिया और सब्वल अपने रास्ते से फिर नही भटका। वह "वला" की नाक की सीध मे बढाता रहा आर सिर्फ एक बार ही उसने बहुत जोर से सास खीचकर पूछा –

"ख्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच, क्या ख्याल है, हम पाल और न बढा दे?

यह बहुत अच्छा सुझाव था। मे राजी हो गया। ' वला" तो वैसे भी अच्छी रफ्तार से जा रहा था और अव तीर की तरह तेजी मे उड चला।

तो सागरो महासागरो की हमारी यात्रा ऐसे आरम्भ हुई।

तीसरा अध्याय,

जिसमे यह बताया गया है कि बहादुरी की कमी को तकनीक और सूझ बूझ कैसे पूरा कर सकती है और कैसे जहाजरानी मे अपनी बीमारी तक की सभी परिस्थितियो का सदुपयोग करना चाहिये

सागरो-महासागरो की यात्रा!! कितने सुन्दर हे ये शब्द! आप सोच विचार करे, मेरे नौजवान दोस्त, इन शब्दो के सगीत को सुने। दूर, दूर के सागर-महासागर असीम विस्तार फैलाव ही फैलाव। सच है न? और यात्रा? यह तो आगे बढने का प्रयास है, दूसरे शब्दो मे गतिशीलता है।

इसका मतलब हे—विस्तार मे गतिशीलता।

इन शब्दो मे खगोलशास्त्र की-सी गन्ध है। अपने को एक तरह से विस्तार मे तैरते नक्षत्र, ग्रह या कम से कम उपग्रह की अनुभूति होती है।

इसीलिये मेरे जैसे या कह लीजिये, मेरे हमनाम क्रिस्तोफोर कोलम्बस जैसे लोग दूर-दूर तक की समुद्री यात्रा या खुले महासागर मे बडे-बडे कारनामे करने की ओर खिचते है।

फिर भी यही वह प्रमुख शक्ति नही है जो हमे अपने देश के प्यारे तट को छोडने के लिये विवश करती हे। अगर जानना चाहते है, तो मै आपके सामने रहस्य खोल देता हू और यह स्पष्ट कर दता हू कि असली बात क्या है।

यह तो साफ ही है कि दूर-दूर के सागरो-महासागरो की यात्रा मे बडा मजा है। किन्तु इसमे भी ज्यादा मजा अपने घनिष्ठ दोस्त-मित्रो और सयोगपूर्ण परिचितो के घेरे मे उन अनूठी और असाधारण घटनाओ की चर्चा करना है, जिनके हम ऐसी यात्रा मे साक्षी होते है, उन सुखद और दुखद परिस्थितियो के बारे मे बताना, जिनमे हम समुद्री नाविको का गिरगिट की तरह रग बदलता हुआ भाग्य हमे डाल देता है। लेकिन समुद्र मे, महासागर के बडे मार्ग मे हमारी भेट ही किस चीज से हो सकती है? मुख्यत पानी और हवा से।

किन चीजो मे हमारा वास्ता मड सकता ह ' तूफानो, सर्वथा शान्त सागरो-महासागरो, कुहासो मे भटकाव और छिछले पानी मे विवश ठहराव से जाहिर है कि खुले सागर मे भी तरह-तरह की असाधारण घटनाए हो जाती ह और हमारी यात्रा मे भी बहुत-सी ऐमी घटनाए हुई, किन्तु मुख्यत पानी, हवा कुहासे ओर छिछले पानी के बारे मे बहुत नही बताया जा सकता।

वैसे बताया तो खैर, जा सकता है। ऐसी चीज भी ह, जिनकी चर्चा हो सकती है – जल-स्तम्भ, बवडर मोतिया बालू – ऐसी बहुत-सी चीजे हो सकती है। यह सभी कुछ बेहद दिलचस्प है। वहा मछलिया, बडे-बडे जहाज और अष्टभुज जल जन्तु होते ह – इनके बारे मे भी बताया जा सकता ह। मगर मुसीबत यह है कि इन सबके बारे मे इतना कुछ बताया जा चुका है कि तुम्हारे मुह खोलते ही तमाम सुननेवाले ऐसे भाग जायेगे जसे शार्क को देखते ही मछलिया।

हा, किमी बन्दरगाह मे प्रवेश करना यह दूसरी ही बात हे, नये तट होते हे। वहा देखने और हैरान होने को कुछ होता हैं। जी हा। यो ही तो नही कहा जाता – 'नया नगर, नया रग-ढग'।

इसलिये नयी-नयी बाते जानने को उत्सुक और व्यापारिक हितो से सम्बन्ध न रखनेवाला मेरे जैसा जहाजी दूसरे देशो मे जाकर अपनी यात्रा को रगारग बनाने की हर कोशिश करता है। इस सिलसिले मे छोटे-से पोत द्वारा यात्रा करने म अनगिनत अच्छाइया ह।

जानते ह, कैसे! मान लीजिये कि आप ड्यूटी देने के लिये खडे है, नक्शे पर झुके हुए ह। तो यह हे आपका रास्ता, दायी ओर किमी देश मे जार का शासन है वायी ओर कोई दूसरा राज्य है, जसे किमी किस्से-कहानी मे। वहा भी तो लोग रहते ह। लेकिन केसे रहते ह? एक नजर यह देख लेना भी तो दिलचस्प है! है न दिलचस्प? खुशी से देखे कौन आपको ऐसा करने से रोकता हे? चालन-चक्र तुम्हारे हाथ मे है बन्दरगाह मे दाखिल होने का सकेत देनेवाला आकाशदीप क्षितिज पर है! तो ऐसी बात ह!

जी! हम अनुकूल हवा के साथ वढे जा रहे थे, सागर के ऊपर कुहासा छाया था और हमारा "बला" पोत किसी तरह की आवाज किये बिना छाया की तरह बढता जा रहा था, मीलो के विस्तार को निगलता जाता था। आन की आन मे हमने जूड केटीगेट और स्केजररेक को पार कर लिया अपने पोत के तेजी मे बढते जाने की क्षमता पर म तो मुग्ध हुआ जा रहा था। पाचवे दिन पौ फटने के वक्त कुहासा छटा और हमारे दाये पहलू की ओर नार्वे का तट उभरा।

हम पास से गुजर सकते थे, लेकिन हमे कही जाने की जल्दी थोडे ही थी। मैने आदेश दिया –

"पोत दाये पहलू!"

मेरे बडे सहायक सब्बल ने चालन-चक्र को दाये मोड दिया और तीन घण्टे बाद हमारे लगर की जजीर सुन्दर और शान्त फियार्ड मे खनखना उठी।

आप फियार्डो मे कभी नही गये, नौजवान? व्यर्थ ही ऐसा नही किया! मौका मिलने पर जरूर ऐसा कीजिये।

फियार्ड एक तरह की तग खाडिया होती है, गडवड-झाले जैसी, मुर्गी के पजो के निशानो की तरह। इर्द-गिर्द दरारोवाली चट्टाने होती है, काई से ढकी हुई, ऊची और ऐसी कि जिन पर चढना असम्भव होता है। वातावरण मे गम्भीर नीरवता और निस्तब्धता छायी होती है। असाधारण सौन्दर्य होता है।

"क्या ख्याल है, सब्बल," मैंने सुझाव दिया, "दोपहर के खाने तक यहा घूम लिया जाये?"

"जरूर घूमा जाये कप्तान, मुझे क्या आपत्ति हो सकती है भला!"

सब्बल ने ऐसे जोर से जवाब दिया कि चट्टानो से पछियो का बादल-सा उडा ओर बत्तीस बार (मैने गिनती की) यह प्रतिध्वनि गूजी – "भला बला बला"

चट्टानो ने मानो हमारे पोत के आगमन का अभिनन्दन किया। जाहिर है कि "भला" और "बला" की ध्वनि एक जैसी ही है। फियार्डो मे प्रतिध्वनि बडी अद्भुत होती है सिर्फ प्रतिध्वनि ही क्या! भैया, वहा तो किस्से-कहानियो जैसी सुन्दर जगहे और वैसी ही अनूठी घटनाए होती ह। आप सुनिये तो कि आगे क्या हुआ।

मैने चालन-चक्र को मजबूती से बाध दिया और कपडे बदलने के लिये अपने केबिन मे चला गया। सब्बल भी नीचे उतर आया। मे पूरी तरह से तैयार हो गया था, जूतो के तस्मे बाध रहा था कि अचानक महसूस हुआ – पोत का अगला भाग नीचे की ओर बेहद झुक गया है। मैं घबराकर ऊपर भागा, गोली की तरह डेक पर पहुच गया। एक बहुत ही चिन्ताजनक चित्र मेरे सामने था – पोत का अगला भाग पूरी तरह पानी मे था और तेजी से डूबता जाता था, जबकि पिछला भाग ऊपर उठता जा रहा था।

मे समझ गया कि दोष मेरा ही है – मैंने मिट्टी के लक्षणो और मुख्यत तो ज्वार को ध्यान मे नही रखा था। लगर जमीन मे धस गया था, जोर से वही अटका हुआ था और पानी ऊपर उठ रहा था। जजीर को ढीला करना मुमकिन नही था –

अगला भाग पूरी तरह पानी मे डूबा हुआ था, लगर को ऊपर खीचने की चर्खी तक कोई जाता भी, तो कैसे! बिल्कुल असम्भव था।

हमने केबिन का दरवाजा किसी तरह कसकर बन्द किया ही था कि 'बला" पूरी तरह से तिरेन्दे की तरह ऊर्ध्व स्थिति मे हो गया। सो प्रकृति की इस अन्धी शक्ति के सामने सिर झुकाना ही पडा। कुछ भी नही हो सकता था। पोत के पिछले भाग मे जाकर अपने को बचाना पडा। शाम तक जब पानी उतरने लगा वहा इसी तरह बैठे रहने को विवश हुए। तो यह स्थिति रही।

इस तजरबे से अक्ल सीखकर मै पोत को सकरी जलग्रीवा में ले गया ओर उसे तट पर खडा कर दिया। सोचा कि ऐसे ज्यादा भरोसे का मामला रहेगा।

समझे जनाब। रात को मामूली-सा खाना बनाया पोत की सफाई की, जैसे होना चाहिये बत्तिया जला दी और यह यकीन करते हुए सोने के लिये लेट गये कि लगरवाला किस्सा यहा फिर से नही होगा। सुबह, कुछ-कुछ उजाला होने पर सब्बल ने मुझे जगाकर रिपोर्ट दी –

'कप्तान रिपोर्ट देने की अनुमति चाहता हू – सागर पूरी तरह शान्त है, वायुदाब-मापक साफ मौसम की सूचना देता है हवा का तापमान १२ सेटीग्रेड, पानी की अनुपस्थिति के कारण उसकी गहराई और तापमान नही मापा गया।"

में अभी तक कुछ-कुछ नीद मे था और इसलिये फौरन ही यह नही समझ पाया कि वह क्या कह रहा है।

"'अनुपस्थिति' से क्या मतलब है आपका?" मैने पूछा। 'कहा गया पानी?"

"भाटे के साथ चला गया," सब्बल ने सूचित किया। "पोत चट्टानो के बीच फस गया है और दृढ सम-स्थिति मे हो रहा है।"

मैं बाहर निकला, देखा कि नयी धुन में वही पुराना गाना गाया जा रहा है। पहले ज्वार ने मामला बिगाडा था ओर अब भाटा अपना रग दिखा रहा था। जिसे मैंने सकरी-सी जलग्रीवा समझा था, वह वास्तव मे दर्रा साबित हुआ था। सुबह होते-होते पानी बिल्कुल उतर गया और हमने अपने को एकदम ठोस जमीन पर, सूखे डॉक पर महसूस किया। पेंदे के नीचे चालीस फुट गहरा खड्ड था, पोत से बाहर आना बिल्कुल असम्भव था! कैसे बाहर आते! एक ही रास्ता था – बैठकर मौसम का, ज्यादा सही तोर पर, ज्वार आने का इन्तजार किया जाये।

लेकिन मुझे निठल्ले बैठने की आदत नही है। सभी ओर से पोत को गोर से देखा, रस्सियोंवाली सीढी को डेक से नीचे लटकाया, कुल्हाडी, रदा और कूची ली। डेक के नीचे उन जगहो को रदे से साफ किया, जहा गाठे थी और वहा सेगन

कर दिया। जब पानी लौटने लगा, तो मल्लाह ने पोत के पिछले भाग में बंसी डालकर शोरबे के लिये मछलिया भी पकड ली। तो देखा आपने, इतनी अटपटी परिस्थितियो मे भी अगर अक्ल से काम लिया जाये, तो उन्हे उपयोगी बनाया जा सकता है।

इन सब घटनाओ के बाद समझ-बूझ तो यही माग करती थी कि हम उस दगाबाज फियार्ड से आगे चल दे। कौन जाने, वह हमे कैसे नये खेल-तमाशे दिखाये? लेकिन, जैसा कि आप जानते है, मैं बडा साहसी, धुन का पक्का, अगर आप कहना चाहे, तो जिद्दी भी हू और जो फैसले कर लेता हू, उन्हे बदलने का आदी नही हू। तो इस बार भी ऐसा ही हुआ – सैर करने का फैसला किया है, तो सैर की जायेगी। जैसे ही हमारे "बला" पोत के नीचे पानी आया, मैं उसे नये और ऐसे स्थान पर ले गया, जहा खतरा न हो। जजीर को अधिक लम्बा कर दिया और हम घूमने को चल दिये।

चट्टानो के बीच मे पगडडी पर जा रहे थे और ज्यो-ज्यो आगे जाते थे, इर्द-गिर्द की प्रकृति अधिकाधिक अद्भुत होती जा रही थी। वृक्षो पर गिलहरिया थी, पक्षी चहक रहे थे, पैरो के नीचे सूखी टहनिया चटक रही थी और ऐसा लगता था कि अभी कोई भालू सामने आकर चिघाडने लगेगा। यहा जगली स्ट्रॉबेरिया भी थी। सच कहता हू कि मैंने कभी ऐसी स्ट्रॉबेरिया नही देखी थी। मोटी मोटी, अखरोटो जैसी! तो बस, हम उनके फेर मे पड गये, जगल मे दूर तक चले गये, दोपहर के खाने का बिल्कुल ध्यान नही रहा और जब होश मे आये, तो देखा कि बहुत देर हो गयी है। सूरज डूब रहा था, ठण्ड महसूस होने लगी थी। किधर जाये, कुछ समझ मे नही आता था। सभी ओर जगल था। जिधर भी नजर जाती थी, सभी जगह स्ट्रॉबेरिया, स्ट्रॉबेरिया और सिर्फ स्ट्रॉबेरिया थी।

हम नीचे, फियार्ड की ओर गये, देखा कि यह वह फियार्ड नही है। रात का वक्त हो चला था। कोई चारा नही था, अलाव जला लिया, किसी तरह रात गुजरी और सुबह हम पहाड पर चढ गये। सोचा, शायद वहा, ऊपर से "बला" को देख पायेगे।

पहाड पर चढ रहे थे, मेरे जैसे शरीर के साथ यह कोई आसान काम नही था, मगर चढ रहे थे, स्ट्रॉबेरिया खाकर ताकत बटोर रहे थे। अचानक अपने पीछे हमे कुछ शोर-सा सुनाई दिया। शायद हवा चल रही थी या जल-प्रपात की आवाज थी, कोई चीज अधिकाधिक जोर से चटक रही थी और मानो धुए की गन्ध आ रही थी।

मैंने मुडकर देखा – हा, वही मामला था, आग जल रही थी! सभी ओर आग लगी हुई थी, तेजी से हमारी तरफ बढती आ रही थी। आप समझते ही हैं, अब स्ट्रॉबेरियो की किसे सुध हो सकती थी।

गिलहरियो ने अपने घोसल छोट दिये थे एक डाल मे दूसरी पर कूदती हुई पहाड पर अधिकाधिक उपर चढती जा रही थी। पक्षी उड रहे थे, चीख-चिल्ला रहे थे। सभी ओर शोर था, घबराहट थी

मै खतरे मे डरकर भागने का आदी नही हू, लेकिन यहा तो और कुछ हो ही नही सकता था जान बचाना जरूरी था। तो हम पूरी रफ्तार मे गिलहरियो के पीछे-पीछे पहाड की चोटी पर चढने लगे – कही और तो जा ही नही सकते थे।

तो वहा पहुच गये साम ली सभी ओर नजर दोडायी। आपसे साफ कहता हू, हालत बडी खराब थी – तीन तरफ आग थी और चोथी तरफ – खडी चट्टान मैने नीचे नजर डाली – बहुत ऊचाई पर थे हम दिल दहल उठा। कुल मिलाकर तस्वीर बडी दुखद थी और इस उदासीभरे वातावरण मे केवल एक ही सुखद चीज थी – हमारा सुन्दर पोत। वह बिल्कुल हमारे नीचे ही खडा था लहर पर थोडा हिल-डुल रहा था और मानो उगली की भाति मस्तूल से हमे अपने डेक पर बुला रहा था।

उधर आग ज्यादा से ज्यादा नजदीक आती जा रही थी। इर्द-गिर्द इतनी गिलहरिया थी कि कुछ पूछिये नही। वे दिलेर हो गयी थी। कुछ की तो पूछे आग मे कुछ जल भी गयी थी वे तो खास तोर पर बहुत निडर और बेहया बन गयी थी। कहने का मतलब यह कि सीधी हम पर चढी आ रही थी धकियाती थी, हम पर जोर डालती थी, समझो कि हमे आग म धकेलना चाहती थी। तो ऐसा नतीजा होता है अलाव जलाने का।

सब्बल हताश था। गिलहरिया भी बेहद परेशान थी। आपसे क्या छिपाना, हालत तो मेरी भी कुछ अच्छी नही थी लेकिन मै उसे जाहिर नही होने दे रहा था, दिल को मजबूत कर रहा था – कप्तान को हिम्मत नही हारनी चाहिये। ठीक है न!

अचानक क्या देखता हू कि एक गिलहरी ने अपना इरादा बना लिया है, पूछ ऊपर को उठा ली हे और वह सीधी "बला" के डेक पर कूद गयी। दूसरी गिलहरी ने उसका अनुकरण किया, फिर तीसरी ने और क्या देखा कि सभी मटरो की तरह डेक पर बिखर गयी हे। पाच मिनट मे ही चट्टान पर एक भी गिलहरी बाकी नही रही।

भला हम क्या गिलहरियो से गये बीते ह? मैने भी छलाग मारने का फैसला कर लिया। ज्यादा से ज्यादा यही होगा न कि समुद्र मे नहा जायेगे। कौन सी बडी बात है! नाश्ता करने के पहले नहा लेना तो लाभदायक भी होता ह। मेरा यह उसूल है – फैसला कर लिया, तो समझो कि काम हो गया।

"बडे सहायक, तेजी से गिलहरियो का अनुकरण करो!" मैने आदेश दिया।

सब्बल आगे बढा, एक पाव गड्ढे के ऊपर उठाया, लेकिन अचानक बिल्ली की तरह पीठ झुकाकर फुर्ती से मुडा और वापस आ गया।

"नही कूद सकता, क्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच, नौकरी से अलग कर दीजिये! जेल जाना बेहतर समझूगा, नीचे छलाग नही मारूगा..."

और मैने समझ लिया कि यह आदमी सचमुच जेल जायगा, लेकिन नीचे नही कूदेगा। ऊचाई की स्वाभाविक दहशत थी यह, अपने ढग की बीमारी... लेकिन कर ही क्या सकता था! बेचारे सब्बल का यही तो छोड नही सकता था!

मेरी जगह कोई दूसरा होता, तो शायद उसे कोई रास्ता न सूझता। लेकिन मैं तो ऐसा हू नही। मैने रास्ता निकाल लिया।

सयोग से मेरे पास दूरबीन थी। बढिया, जहाजियोवाली दूरबीन, चीजो को बारह बार निकट ला देनेवाली। मैने सब्बल को दूरबीन आखो के साथ सटाने का आदेश दिया, उसे चट्टान के सिरे पर ले गया और बडी कडाई से पूछा –

"बडे सहायक, आपके डेक पर कितनी गिलहरिया है?"

सब्बल गिनने लगा – "एक, दो, तीन, चार, पाच..."

"रुकिये!" मैं चिल्लाया। "गिने बिना ही सबको तलपेट मे बन्द कर दिया जाये!"

बस, क्या था, कर्त्तव्य की भावना ने खतरे की भावना पर विजय प्राप्त कर ली। हा, कुछ भी कहिये, लेकिन दूरबीन ने भी मदद की – डेक नजदीक आ गया था। सब्बल बडे इतमीनान से खड्ड मे कूद गया। मैं उस पर नजर टिकाये था – छीटो का बडा-सा फव्वारा ऊपर उठा। एक क्षण बाद मेरा बडा सहायक सब्बल रेगता हुआ डेक पर चढ गया और गिलहरियो को पोत के तलपेट मे खदेडने लगा।

तब मैने भी वैसा ही किया। लेकिन आप जानते है, मेरे लिये यह अधिक आसान था। मैं ठहरा अनुभवी आदमी, दूरबीन के बिना भी कूद सकता हू।

मेरे नौजवान दोस्त, आप इस सबक को याद कर लीजिये – कभी काम आ सकता है। मिसाल के तौर पर, पैराशूट लेकर कूदना चाहते है, दूरबीन अपने साथ लेना मत भूलिये, बेशक घटिया ही हो। फिर भी कूदना आसान हो जाता है, ऊचाई इतनी अधिक नही रहती।

तो मैं भी कूद गया। पानी की सतह पर आया। मैं भी डेक पर चढ गया। सब्बल की मदद करनी चाही, लेकिन वह फुर्तीला जवान था, अकेले ने ही सारा काम निपटा डाला। मैं तो सास भी नही ले पाया था कि उसने तलपेट का दरवाजा बन्द कर दिया और फौजी की तरह आकर रिपोर्ट दी –

"गिनती किये विना सारी जिन्दा गिलहरियो का पूरा भार पोत पर ले लिया गया! अव क्या हुक्म है?"

तो अब मुझे सोचना पडा कि क्या हुक्म दिया जाये।

इतना तो बिल्कुल साफ था कि लगर उठाया जाये, पाल लगाये जाये और अपनी खेर मनाते हुए इस जलते पहाड से सही-सलामत दूर चले जाये। भाड मे जाये यह कम्वख्त फियार्ड। यहा देखन-भालने को और कुछ भी था नही और इसके अलावा यहा गर्मी भी बहुत महसूस हो रही थी तो इस मामले मे तो मेरे दिल मे किसी तरह का सन्देह, कोई दुविधा नही थी। मगर गिलहरियो का क्या किया जाये? इस मामले मे स्थिति अधिक बुरी थी। शैतान ही जानता था कि उनका क्या करना सम्भव था। इतनी ही खेरियत थी कि उन्ह वक्त पर तलपेट में बन्द कर दिया गया था नही तो, आप जानते ही ह ये कम्वख्त गिलहरिया भूख से बेहाल होकर रस्सियो को ही कुतर डालती। जरा-सी देर हो जाती, तो फिर से पोत पर रस्सिया और दूसरा साज-सामान लगाने की जरूरत पडती।

जाहिर है कि गिलहरियो की खाल उतारकर उन्हे किसी भी बन्दरगाह मे बेचा जा सकता था। उनकी खाल महगी और बढिया होती हे। जरूर कुछ हाथ रगे जा सकते थे। लेकिन ऐसा करना अच्छा नही था – उन्होंने हमारी जान बचायी या कम से कम बचने की राह दिखायी ओर हम उनकी खाल तक उतार ले! यह मेरे उसूलो मे नही हे। लेकिन दूसरी तरफ, गिलहरियो की इस सारी फौज को दुनिया भर के चक्कर मे अपने साथ लिये फिरना भी तो कोई खुशी की बात नही थी। इसका मतलब था उन्हे खिलाओ-पिलाओ, उनकी देख-भाल करो। ऐसा तो होना ही चाहिये – यह तो नियम ठहरा – जहाज पर मुसाफिर लिये हे तो उनके लिये उचित परिस्थितिया भी पैदा करो। इतनी चिन्ताए हो जाती कि कोई हिसाब नही।

तो मैने तय किया – घर पहुचने पर देखा जायेगा। लेकिन हमारा, हम जहाजियो का घर कहा है? समुद्र ही तो हमारा घर हे। आपको याद होगे न एडमिरल मकारोव के ये शब्द – "समुद्र मे होना – घर पर होना हे"। मैं भी ऐसा ही मानता हू। सोचा, कोई बात नही, सागर मे निकल चलने पर सोच लेगे। और कुछ नही, तो जिस बन्दरगाह मे जायेगे, वहा से हिदायते ले लेगे। जी हा।

तो हम चल दिये। हमारा पोत बढता जा रहा था। रास्ते मे मछुए मिल रहे थे, जहाजो से भेट हो रही थी। वडा अच्छा लग रहा था! शाम होते-होते हवा तेज हो गयी, असली तूफान आ गया – दस प्वाइट का। सागर बोखला रहा था। हमारे "बला" पोत को ऊपर उठाता और जोर से नीचे पटक देता! रस्सिया

सनसना रही थी मस्तूल चरमरा रहा था। आदत न होने के कारण गिलहरियां को मतली हो रही थी लेकिन मैं खुश था – मेरा "बला" पोत खूब हिम्मत से तूफान का सामना कर रहा था, तूफान की परीक्षा मे उच्चतम से भी अधिक अक पा रहा था। और सब्बल – वह भी बडी बहादुरी का सबूत दे रहा था। चालन चक्र के साथ सटा खडा था और मजबूत हाथ से चक्र को थामे था। मैं कुछ देर और खडा रहा मुग्धता से कुदरत की अधी ताकत को आपे से बाहर होते देखता रहा और फिर अपने केबिन मे चला गया। मेज के करीब बैठ गया, रेडियो चालू कर दिया, ईयर-फोन लगा लिया और सुनने लगा।

कमाल की चीज है यह रेडियो! बटन दबाओ, सूई घुमाओ और लो, सब कुछ तुम्हारी खिदमत मे हाजिर है – सगीत, अगले दिन के मौसम का हाल, ताजा खबरे। आप जानते ही है, कुछ लोग फुटबॉल के दीवाने होते है – तो उनके भी मजे है – किक! एक और किक! और अब गोल कीपर नेट मे से बाल निकाल रहा है " भला मैं क्या बताऊगा आपको कि गजब की चीज है यह रेडियो! लेकिन उस बार कार्यक्रम कुछ ढग का नही था। मैंने मास्को स्टेशन लगाया और मुझे सुनाई दिये ये नाम – 'इवान, रोमान, कोन्स्तान्तीन, सेम्योन, किरिल्ल " ऐसे लगता था मानो मै किसी के यहा मेहमान आया हू और वहा सबसे मेरा परिचय करवाया जा रहा है। लग रहा था कि बिल्कुल बेकार है इसे सुनना। तिस पर यह हुआ कि मेरा वह दात, जिसमे सूराख था, टीसने लगा शायद समुद्र मे डुबकी लगाने का नतीजा था। इतने जोर से दर्द होने लगा कि रोने-चिल्लाने का जी होता था। तो मैने आराम करने का फैसला किया। ईयर-फोन उतार ही चुका था कि अचानक मानो SOS सुनाई दिया – त-त-त ता, ता, ता, त-त-त ऐसा ही है – मुसीबत का सकेत है। कही पास ही मे कोई जहाज डूब रहा था। मैने दम साध लिया, हर ध्वनि को बहुत ध्यान से सुन रहा था, तफसील से जानना चाहता था – कहा? कैसे? इसी वक्त बडे जोर की एक लहर आयी और "बला" से ऐसे टकरायी कि वह बेचारा तो पूरी तरह एक ही पहलू झुक गया। गिलहरियां जोर से ची-ची कर उठी।

यह तो फिर भी खैरियत थी। लेकिन इसी वक्त कही ज्यादा बुरी बात हो गयी – रेडियो मेज से उछला, नीचे गिरा, दीवार से टकराया और टुकडे-टुकडे होकर बिखर गया। मैने देखा कि उसे जोडना मुमकिन नहीं। प्रोग्राम तो जैसे किसी ने छुरी से काट डाला। मन पर बडा बोझ-बोझ-सा महसूस हो रहा था – पास मे ही कोई मुसीबत का शिकार हो रहा था, लेकिन कहा, कौन – मालूम नही था।

घटनाए

सकट का सकेत दात द्वारा
ग्रहण किया

SOS .... SOS .... SOS

पोत डूब रहा है

दात

एरियल

मदद को जाना चाहिये मगर कहा जाये — कौन बता सकता था? दात म और भी ज्यादा दर्द होन लगा।

और कल्पना कीजिये — दात ही ने बात बना दी! मैंने ज्यादा सोचे विचार बिना एरियल का सिरा लेकर दात के सूराख म घुसेड दिया। जानलेवा दद हुआ, आखो से चिगारिया सी निकली लेकिन इसका नतीजा यह हुआ कि रेडियो फिर स बोलने लगा। यह सच है कि सगीत सुनाई नही दे रहा था। हा और साफ कहू, तो मुझे सगीत की जरूरत भी नही थी। किसे सुध हो सकती थी सगीत की! दूसरी ओर सकेत इतनी अच्छी तरह से महसूस हो रहे थे कि कोई हद नही — विराम तो सुई के चुभन जैसा बिल्कुल हल्का-सा स्पश करता किन्तु डैश यानी सम्बन्ध चिह्न ऐसे दर्द करता मानो कोई पेच घुमा रहा हो। न तो किसी एम्पलीफायर (ध्वनिवर्द्धक यन्त्र) की जरूरत थी और न ही रेडियो को ढग से ट्यून करने की — सूराखवाला टीसता हुआ दात वैसे ही बहुत सवेदनशील होता है। जाहिर है कि यह दर्द बदाश्त करना बहुत मुश्किल था लेकिन क्या किया जाये — ऐसी स्थिति मे आत्म-बलिदान तो करना ही पडता है।

आप यकीन करे दात की मदद से ही मैंने यह सारा कार्यक्रम सुना। उसे लिख लिया, उसे समझा और उसका अनुवाद किया। पता चला कि बिल्कुल हमारे पास ही नार्वे देश के पानीवाले एक पोत की दुर्घटना हो गयी थी — डोगरबैक पर छिछले पानी मे जा धसा था, उसमे सूराख हो गया था और बस तल मे जानेवाला ही था।

अब सोचने का वक्त ही नही था फौरन मदद को जाना चाहिये था। मैं तो दात के दर्द के बारे मे भूल ही गया और उसकी रक्षा का काम खुद अपने हाथ मे ले लिया। डेक पर जाकर चालन-चक्र को सम्भाल लिया।

तो हम उधर जा रहे थे। सभी ओर रात का अधेरा था, सागर ठण्डा था, लहरे जोरो से टकरा रही थी, हवा सीटिया बजा रही थी

सो आध घण्टे तक उधर बढते रहे, नार्वेवालो को ढूढ लिया, राकेट छोडकर रोशनी की। देखा — हालत बडी खराब है। अपने पोत को उसकी बगल मे खडा करना सम्भव नही था — हमारा पोत भी डूब जायेगा। उनकी सभी नावे बह चुकी थी और ऐसे मौसम मे लोगो को रस्सी के सहारे लाना भी खतरे का मामला था — इसमे क्या अक्लमन्दी हो सकती थी कि उन्हे डुबो दिया जाये।

मैं एक तरफ से, फिर दूसरी तरफ से उस जहाज के पास गया — बात कुछ बनी नही। तूफान पहले से भी ज्यादा आपे से बाहर हो रहा था। जैसे ही इस पोत

पर लहर छपाका मारती, वैसे ही वह पूरी तरह पानी मे चला जाता। डेक के एक सिरे से दूसरे मिरे तक पानी ही पानी होता, मस्तूल ही बाहर दिखाई देते तभी ख्याल आया, अरे, यही चीज तो हमारी मदद करेगी।

मैंने खतरा उठाने का फैसला किया। अपने पोत को हवा के अनुकूल बढाया और लहर के साथ पूरे जोर से जहाज की तरफ बढा।

हिसाब बिल्कुल सीधा सादा था – हमारा 'बला'' पोत पानी म कम नीचे जाता था और लहरे टीलो जैमी ऊची थी। हमारा पोत लहर के सिरे पर ठहरा रहेगा और हम झटपट उनके पोत से लोगों को निकाल लायेगे।

आपको बताता हू कि नार्वेवाल बिल्कुल निराश हो रहे थे कि मे वहा पहुच गया। मैं चालन-चक्र सम्भाले था उसका ऐसे सचालन करता था कि डूबते जहाज के मस्तूलो के साथ हमारा पोत न उलझ जाये और सब्वल एक साथ ही दो-दो की गर्दनो मे बाहे डालकर उन्ह उठा लाता। आठ बार ऐसा करके कप्तान सहित सभी मोलह व्यक्तियो को निकाल लिया।

कप्तान थोडा नाराज हो गया – उसे तो सबके बाद जहाज से निकालना चाहिये था। किन्तु जल्दी और अधेरे मे सब्वल उसे पहचान न सका और सबमे पहले निकाल लाया। जाहिर है कि यह अच्छा नही हुआ, लेकिन कोई बात नही, ऐसा भी हो जाता है आखिरी दो लोगो को निकाला ही था कि बहुत ऊची लहर आती दिखाई दी। बहुत जोर मे टकरायी, ऊची आवाज हुई और किस्मत के मारे जहाज की धज्जिया उड गयी।

नार्वेवालो ने टोपिया उतार ली, वे डेक पर खडे हुए काप रहे थे। हमने भी स्थिति पर विचार किया इसके बाद मुडे, अपने रास्ते पर आये और बडी तेज रफ्तार से नार्वे को वापस चल दिये।

डेक पर बडी घिचपिच थी, हिलने-डुलने की भी जगह नही थी। लेकिन नार्वेवाले इससे दुखी नही, बल्कि कुछ खुश ही थे। बात समझ मे आती थी – बेशक जगह तग थी, ठण्ड थी, फिर भी ऐसे मौसम मे पानी मे गोते खाने से तो यह बेहतर था।

हा नार्वेवालो की मदद की, उनकी जाने बचा ली। तो ऐसा था हमारा "बला" पोत! किसी के लिये बला, मगर कहना चाहिये, किसी का करे भला।

सब हाजिरदिमागी का नतीजा था! मेरे नौजवान दोस्त, अगर दूर के सागरों-महासागरो मे जहाजरानी का अच्छा कप्तान बनना चाहते है, तो एक भी सम्भावना को हाथ से नही जाने दीजिये, हर चीज का, जरूरत होने पर अपनी बीमारी तक का अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये उपयोग कीजिये। सो, यह मामला है!

चौथा अध्याय,

जिसमे स्केंडिनेविया के रीति रिवाजो और नाविको के लिये गिलहरियो के उपयोग का वर्णन है

हम नार्व के स्तावान्हेर शहर मे वापस आये। ये जहाजी बडे अच्छे लोग साबित हुए और उन्होने हमारा बडा आदर-सत्कार किया।

मुझे और सब्बल को सबसे बढिया होटल मे ठहराया और हमारे पोत पर अपने खर्च से सबसे महगा रोगन करवाया। पोत की ही क्या बात – वे तो गिलहरियो को भी नही भूले – सामान के रूप मे उनके कागजात बनवा दिये। और इसके बाद आकर पूछा –

"आपके प्यारे जानवरो को क्या खिलाया जाये?"

क्या खिलाया जाये? मै तो इस बारे मे कुछ भी नही जानता था, मैंने कभी गिलहरिया नही पाली थी। सब्बल से पूछा। उसने जवाब दिया –

"ठीक से तो नही कह सकता, लेकिन ऐसे याद आ रहा है कि इन्ह अखरोट और चीड-फल खिलाये जाते हे।"

अब आप कल्पना करे कि कभी-कभी कैसा सयोग हो जाता है – मैं नार्वे की भापा अच्छी तरह से बोलता हू लेकिन ये दो शब्द भूल गया। जबान पर घूम रहे थे, लेकिन याद नही कर पा रहा था। स्मरण शक्ति जवाब दे गयी। सोचता रहा, सोचता रहा – क्या किया जाये? सो एक तरकीब सोच निकाली – सब्बल को नार्वेवालो के साथ पसारी की दुकान पर भेज दिया।

"वहा जाकर देखिये," उससे कहा, "शायद वहा कोई मतलब की चीज मिल जाये।"

वह गया। लौटकर उसने रिपोर्ट दी – सब ठीक-ठाक है – अखरोट भी मिल गये और चीड के फल भी। आपसे क्या छिपाना, मुझे कुछ हैरानी भी हुई कि पसारी की दुकान पर चीड के फल बिकते हे, लेकिन आप जानते है कि पराये देश मे कुछ भी तो हो सकता है! सोचा, शायद समोवार मे जलाने या फर-वृक्ष को सजाने के लिये बेचे जाते हो। कोई भी तो कारण हो सकता हे?

शाम को यह देखने के लिये कि रग-रोगन कैसे हो रहा ह, "बला" पर गया और फिर तलपेट मे भी झाक लिया। बस, क्या बताऊ आपको! सब्बल से भूल हो गयी थी, मगर कितनी अच्छी भूल हुई थी!

देखता क्या हू कि मेरी गिलहरिया ऐसे बैठी थी मानो जन्म-दिन मना रही हो और खूब मुह भर-भरकर अखरोटो की गिरियोवाला हलवा खा रही थी। हलवा डिब्बो मे था और हरेक डिब्बे के ढक्कन पर अखरोट का चित्र बना हुआ था। चीड-फलो के मामले मे और भी ज्यादा मजा रहा था – उनकी जगह अनानास लाये गये थे। वास्तव मे ही उन्हे अच्छी तरह से न पहचाननेवाला आदमी आसानी से ऐसी गडबड कर सकता है। यह सच है कि अनानास चीड-फलो से कुछ बडे होते हे, मगर बाकी तो बहुत मिलते-जुलते है ओर उनकी गन्ध भी वैसी ही होती है। सब्बल ने दुकान पर जैसे ही इन्हे देखा, उगली से इधर-उधर इशारा कर दिया और बस, यह नतीजा सामने आ गया

तो लगे वे लोग हमे थियेटरो और सग्रहालयो मे ले जाने, दर्शनीय स्थल दिखाने। प्रसगवश यह भी बता दू कि उन्होने हमे जिन्दा घोडा भी दिखाया। उनके यहा घोडा एक दुर्लभ चीज है। लोग मोटरगाडियो पर आते-जाते है और इससे भी ज्यादा पैदल चलते है। उस जमाने मे वे अपनी ताकत यानी हाथो से हल चलाते थे और इसलिये उन्हे घोडो से कुछ लेना-देना नही था। जो घोडे कुछ जवान थे, उन्हे उन्होने बाहर भेज दिया था, जो बूढे थे, अपने आप ही मर गये और जो बाकी बचे, वे चिडियाघरो मे बेकार खडे हुए घास चरते ओर सपने देखते रहते ह।

अगर कोई घोडे को घुमाने के लिये बाहर ले आता था, तो फौरन लोगो की भीड हो जाती थी, सभी उसे देखने और शोर मचाने लगते थे, सडक की आवाजाही को गडबडा देते थे। बस, यही समझिये कि जैसे हमारी सडक पर जिराफ आ जाये। मेरे ख्याल मे मिलीशियावाला यह समझ नही सकेगा कि कौन-से रग की बत्ती जलाये।

लेकिन हमारे लिये तो घोडा कोई अजूबा नही है। मैंने तो नार्वेवालो को हैरानी मे

डालने की ठान ली, घोडे के गर्दन पर हाथ रखा, उछलकर सवार हुआ और एड लगायी।

नार्वेवाले तो दग रह गये और अगली सुबह को सभी अखबारो म मेरी बहादुरी के बारे मे लेख के साथ फोटो छपा दिखाई दिया – घोडा सरपट दौडा जा रहा था और उस पर मैं सवार था। जीन के बिना, जहाजियो की मेरी जाकेट के बटन खुले हुए, वह हवा मे फडफडाती हुई, टोपी टेढी-बाकी, टागे लटकी हुई और घोडे की पूछ ऊपर को उठी हुई

बाद को तो मैं यह समझ गया – फोटो कुछ अच्छा नही है, जहाजी की शान के लायक नही है, लेकिन उस वक्त तो जोश की वजह से मैंने उसकी तरफ कोई ध्यान नही दिया था और उसे देखकर खुश भी हुआ था।

नार्वेवालो को भी खुशी हुई थी।

कुल मिलाकर, यह कहना चाहिये कि नार्वे प्यारा देश है। लोग भी वहा के अच्छे है, कह सकते है, बडे शान्त मिलनसार और खुले दिल के।

जाहिर है कि नार्वे मे मैं पहले भी कई बार जा चुका था और जब मैं जवान था, तभी की यह एक घटना मुझे याद है।

हम एक बन्दरगाह मे उतरे और वहा से मुझे रेलगाडी द्वारा आगे जाना था।

तो मैं स्टेशन पर पहुचा। गाडी के आने मे अभी काफी देर थी। साफ बात है कि सूटकेस उठाये-उठाये घूमना मुश्किल भी होता है और अटपटा भी।

मैंने स्टेशन-मास्टर को ढूढा और पूछा –

"आप लोगो का सामान-घर कहा है?"

उस भले-से बूढे स्टेशन-मास्टर ने हाथ झटक दिये।

"माफ कीजिये," वह बोला, "हाथ का सामान जमा करने के लिये खास सामान-घर बनाने की बात हमारे यहा किसी के दिमाग मे नही आई। लेकिन यह कोई बात नही," उसने कहा, "शर्माइये नही, अपने सूटकेस यही रख दीजिये, आपको विश्वास दिलाता हू कि वे किसी के लिये भी बाधा नही बनेगे "

तो ऐसा मामला था। लेकिन कुछ ही समय पहले मेरा एक दोस्त वहा से आया था। उसने बताया कि वहा बहुत कुछ बदल गया है, जीवन और रहन-सहन का रग-ढग भी। सो तो होना ही था – आखिर तो युद्ध के दिनो मे जर्मन वहा गये थे, उन्होने नये तौर-तरीके जारी कर दिये थे। अब अमरीकी लोग उनके जीवन-ढग को उचित ऊचाई पर उठा रहे है। जाहिर है कि लोग अधिक होशियार हो गये है, ज्यादा चुस्त-दुरुस्त हो गये है। अब तो वहा भी यह समझते है कि कहा हाथ साफ किया जा सकता है। सभ्यता आ गयी हे न!

तिथि	रेखाश अक्षाश	घटनाएं	उल्लेखनीय बातें
		स्तावान्हेर नगर में घुड़सवारी	अखबार में जो

लेकिन उस जमाने मे तो वहा लोग पुराने ढग से रहते थे। शान्त जीवन बिताते थे। लेकिन सभी नही। नार्वे मे तब भी ऐसे लोग थे, कहना चाहिये अग्रणी लोग, जो ज्ञान-वृक्ष से भलाई-बुराई का ज्ञान प्राप्त कर चुके थे। मिसाल के तौर प बडी-बडी दुकानो, बडे-बडे कायालयो, फैक्टरियो या कारखानो के मालिक। ये तो तब भी खूब तिकडमबाजी करते थे।

कहना चाहिये कि मेरा भी इस चीज से सीधा वास्ता पडा। वहा एक फर्म हे टेलीफोन ओर रेडियो, वगैरह बनानेवाली तो इस फर्म को कही से मेरे दात के बारे मे सुन-गुन मिल गयी और परेशान हो उठी। बात समझ मे आनेवाली भी थी – अगर सभी दात की मदद से कार्यक्रम सुनने लगेगे, तो रेडियो कौन खरीदेगा। कितना बडा नुकसान होगा। चिन्ता होना स्वाभाविक था। तो उन्होने अधिक सोच विचार किये बिना मेरे आविष्कार और साथ ही मेरे दात को भी खरीद लेना चाहा।

शुरू मे तो उन्होने अच्छे ढग से बातचीत चलायी, कारोबारी ढग का पत्र भी भेजा कि मैं उन्हे अपना खराब दात बेच दू। लेकिन मने गोचा – "भला किसलिये?" दात अभी कुछ बुरा नही हे, चबा सकता है, अगर सूराखवाला है, तो भी किसी को इससे क्या ह, यह मेरा अपना मामला हे। मेरा एक परिचित हे, उसे तो अच्छा भी लगता है, जब उसके दातो मे दर्द होता है।

"जाहिर है," वह कहता हे, "जब दातो मे दर्द होता है, तो तकलीफ होती है और बहुत बुरा भी लगता है, लेकिन जब दर्द दूर हो जाता है, तो बहुत ही अच्छा प्रतीत होता हे!"

हा। मैंने जवाब दिया कि दात नही बेचता हू और बात खत्म

लेकिन आप क्या समझते है कि वे शान्त हो गये? बिल्कुल नही! उन्होंने मेरा दात चुराने का निर्णय किया। कुछ गुडे किस्म के लोग नमूदार हो गये, वे हर वक्त मेरे पीछे लगे रहते, मुह मे झाकते, खुसुर-फुसुर करते तो मै बुरी तरह परेशान हो उठा – एक दात की तो खैर कोई बात नही, कही ऐसा न हो कि मामले को पूरी तरह पक्का करने के लिये सिर समेत ही उसे ले जाये? तब मैं सिर के बिना वहा जहाजरानी करने जाऊगा?

तो मैंने इस मुसीबत से पिड छुडाने का फैसला किया। हम जिस बन्दरगाह से गये थे, मैंने वहा से गिलहरियो के बारे मे हिदायतें ली और खुद को उन बदमाशो से बचाने के लिये खास कदम उठाये। शाह बलूत का एक तख्ता लिया, उसका एक सिरा गोदाम के फाटक के नीचे और दूसरा केबिन के दरवाजे के नीचे

घुसेड दिया और सब्बल से कहा कि "बला" को सभी तरह के कूडे-कबाड से भर दे

पोत डेक तक नीचे चला गया, तख्ता स्प्रिंग की भाति झुक गया और सिर्फ उसका सिरा ही दरवाजे के नीचे टिका हुआ था। मैंने सोने के पहले इसे अच्छी तरह से देखा-भाला, अपने बनाये हुए इस ढाचे को अच्छी तरह से जाचा और इतमीनान से सोने को लेट गया। मैंने तो पहरे की भी व्यवस्था नही की – कोई जरूरत नही थी। तो वे लोग पौ फटने के वक्त आये। मुझे दबे-दबे कदमो की आहट सुनाई दी, दरवाजा धीरे-से चरमराया और इसके बाद अचानक "फटाक!" की आवाज हुई। तख्ता दरवाजे के नीचे से निकलकर ऊपर को तन गया था

मै बाहर निकला – देखा कि मेरा उछाल-यन्त्र सफल रहा था, सो भी कितना अधिक सफल! वहा तट पर रेडियो स्टेशन था और बदमाश सबसे ऊपर, मस्तूल के सिरे पर फेक दिये गये थे। उनके पतलून मस्तूल मे फस गये, वे वहा लटके हुए गला फाड-फाडकर चिल्ला रहे थे और सारे शहर मे उनकी चीख-पुकार सुनाई दे रही थी।

कैसे उनको वहा से उतारा गया, यह मैं आपको नही बता सकता, मैंने अपनी आखो से नही देखा।

इसी वक्त बन्दरगाह से जवाब आ गया, जिसमे गिलहरियो को हैमबर्ग मे देने का आदेश दिया गया था। वहा गैदनबैक का मशहूर चिडियाघर था और वही तरह-तरह के जानवर खरीदता था।

मै मनोरजन के रूप मे नाविकी के कुछ लाभो की आपसे पहले ही चर्चा कर भी चुका हू। इस तरह की जहाजरानी मे आदमी खुद अपना मालिक होता है – जिधर भी चाहा, उधर ही चल दिया। लेकिन अगर माल लाद लिया, तो समझो गाडीवान बन गया – लगामे हाथ मे है और जहा पहुचाने का हुक्म मिलेगा, वही जाना होगा।

मिसाल के तौर पर हैमबर्ग को ले लीजिये। क्या मैं अपनी इच्छा से वहा जाता! मैंने वहा क्या नही देखा! क्या पुलिसवाले? फिर साथ ही समुद्री यात्रा जटिल हो जाती है, सभी तरह का व्यापारिक पत्र-व्यवहार शुरू हो जाता है, माल को सही-सलामत पहुचाने की फिक्र करनी पडती है, चुगी की औपचारिकता से निपटना पडता है और वह भी हैमबर्ग मे

लेकिन हुक्म तो हुक्म ठहरा, पूरा करना चाहिये। "बला" को हैमबर्ग ले गया, उसे दीवार के पास खडा किया, साफ-सुथरे कपडे पहने और गैदनबैक को ढूढने चल पडा। चिडियाघर मे पहुचा। वहा तो हाथी भी थे, शेर भी थे,

मगरमच्छ भी था, मारावू पक्षी (एक तरह का सारस) भी था और एक गिलहरी भी पिंजरे में लटकी हुई थी। गिलहरी भी कैसी! मेरी गिलहरियां भला क्या मुकाबला कर सकती थीं उसका! मेरी गिलहरियां तो निकम्मी थीं, तलपेट में बैठी हुई दिन भर हलुआ हड़पती रहती थीं, लेकिन उसके लिये एक चर्खी बनी हुई थी, वह उस पर चाबीभरे खिलौने की तरह चक्र में घूमती गिलहरी की तरह लगातार कूदती और घूमती जाती थी। आदमी आंखें फाड़-फाड़कर देखता रह जाता था!

तो मैंने उस गैदनबैक को ढूंढा, अपना परिचय दिया और बताया कि जिन्दा गिलहरियों से भरा हुआ पोत लाया हूं और उन्हें उचित दामों पर बेचना चाहता हूं।

गैदनबैक ने छत की तरफ देखा, हाथों को पेट पर रखा और उंगलियों को इधर-उधर घुमाया।

"गिलहरियां," वह बोला, 'वही पूंछों और कानोंवाली न? हां, हां, जानता हूं। तो आपके पास गिलहरियां हैं? तो मैं खरीद लूंगा। लेकिन हमारे यहां तस्करी के मामले में बड़ी कड़ाई बरती जाती है। आपके पास उनके कागज-पत्र तो ठीक-ठाक हैं न?"

मैंने नार्वेवालों को मन ही मन धन्यवाद दिया और कागजात मेज पर रख दिये।

गैदनबैक ने चश्मा निकाला, रूमाल लिया और बड़े इतमीनान से ऐनक के शीशे साफ करने लगा। अचानक न जाने कहां से एक गिरगिट प्रकट हुआ। वह उछलकर मेज पर आया, उसने अपनी जबान बाहर निकाली, कागजों को चाटा और रफूचक्कर हो गया। मैं उसके पीछे-पीछे भागा। लेकिन वह कब हाथ आनेवाला था!

गैदनबैक ने अपना चश्मा वापस रखा और हाथ झटककर बोला –

"जरूरी कागजों के बिना कुछ नहीं कर सकता। खुशी से खरीद लेता, लेकिन ऐसा नहीं कर सकता। इस मामले में हमारे यहां बड़ी कड़ाई बरती जाती है।"

मुझे बहुत बुरा लगा, मैंने बहस करनी शुरू की। लेकिन समझ गया कि बेकार है, वहां से लौट आया। घाट के पास पहुंचा, तो देखा कि "बला' पर मामला कुछ गड़बड़ है। उसके चारों ओर निकम्मे लोगों की भीड़ जमा थी, पोत के डेक पर पुलिसवाले, चुंगीवाले और बन्दरगाह के कर्मचारी जमा थे वे सभी सब ओर से सब्बल को घेरकर तंग कर रहे थे और वह बीच में खड़ा तथा किसी तरह उनको कोसता हुआ उनसे निपट रहा था।

मैं रेल-पेल करता हुआ आगे बढ़ा, उन्हें शान्त किया और यह पता लगाया

कि मामला क्या है। मामले ने बहुत ही अप्रत्याशित और अप्रिय रुख ले लिया था। मालूम हुआ कि गेदनबैक ने चुगीवालो को फोन कर दिया था, वहा उन्होंने कानून की एक धारा भी चुन ली थी, मुझ पर गैरकानूनी ढग से जानवरो को लाने का आरोप लगाया था और माल के साथ पोत को भी छीन लेने की धमकी दी जा रही थी

मेरे पास तो अपनी सफाई मे कुछ कहने को भी नही था -- वास्तव मे ही कागज-पत्र नष्ट हो चुके थे गिलहरियो को ले जाने की विशेष अनुमति मैंने ली नही थी। अगर सचाई बताता, तो उस पर कौन विश्वास करता? मेरे पास सबूत तो किसी भी तरह के थे नही और खामोश रहना और भी ज्यादा बुरा होता।

थोडे मे समझ गया कि मामला चापट है।

"अच्छी बात है," मैंने सोचा, "ऐसे तो ऐसे ही सही! आप अपनी करे, मैं अपनी करूगा!"

मैंने जहाजियोवाली अपनी जाकेट ठीक की, तनकर खडा हुआ और सबसे बडे अधिकारी को सम्बोधित करते हुए बोला –

"श्रीमान अधिकारी, आपकी मागे साधार नही है, क्योकि नाविकी के अन्तर्राष्ट्रीय नियमो मे एक ऐसी धारा है, जिसके अनुसार पोत की सभी अनिवार्य वस्तुओ पर जैसे कि लगर, नावे माल उतारने और जीवनरक्षा-सम्बन्धी सहायक वस्तुए, सचार-साधन सकेत-यन्त्र, ईधन और इतनी सख्या मे यन्त्र-साधन, जो निरापद समुद्री यात्रा के लिये आवश्यक है, न तो कोई कर लिये जाते है और न उनके लिये विशेष औपचारिक अनुमति की आवश्यकता होती है।"

"आपके साथ पूरी तरह सहमत हू," उस अधिकारी ने जवाब दिया, "किन्तु, कप्तान, यह स्पष्ट करने से तो इन्कार नही करेगे कि आपने जिन-जिन चीज़ो का उल्लेख किया है, उनमे से अपने जानवरो को आप किस श्रेणी मे शामिल करते है?"

मैंने अपने को बडी मुश्किल मे पाया, लेकिन महसूस किया कि अब कदम पीछे हटाना भी ठीक नही होगा।

'अन्तिम श्रेणी मे, श्रीमान अधिकारी -- यन्त्र-साधनो की श्रेणी मे," मैंने जवाब दिया और अपनी एडियो पर घूम गया।

बन्दरगाह के कर्मचारी-अधिकारी पहले तो अचम्भे मे पडे फिर उन्होंने आपस मे खुसुर-फुसुर की और इसके बाद उनका मुखिया सामने आया।

"अगर आप यह सिद्ध कर दे," वह बोला, "कि आपके पोत पर जानेवाले

जानवर वास्तव मे ही पोत के चालन-यन्त्र का काम देते है, तो हम खुशी से अपनी कानूनी आपत्तियो से इन्कार कर देगे।"

आप तो खुद ही समझ सकते है कि ऐसी बात साबित करना आसान नही है। साबित करने का सवाल ही क्या था – सिर्फ किसी तरह वक्त टल जाये।

"बात यह है," मैंने कहा, "चालन-यन्त्र के महत्वपूर्ण भाग तट पर मरम्मत के लि गये हुए है। अगर इजाजत हो, तो कल मैं आपके सामने जरूरी सबूत पेश कर दूगा।"

तो वे चले गये। लेकिन देखता क्या हू कि पुलिस का एक तेज, हर समय चलने को तैयार पोत हमारे करीब ही खडा कर गये है, ताकि मै चालाकी से निकल न जाऊ। मैने अपने को केबिन मे बन्द कर लिया, गैदनवैक के यहा देखी हुई गिलहरी को याद किया, कागज, परकार और रूलर लिया तथा ड्राइग करने बैठ गया।

एक घण्टे बाद सब्बल को साथ लेकर मैं लुहार के पास गया और उससे दो जहाजी पहिये और तीसरा चक्कीवाला जैसा बनाने को कहा। फर्क इतना था कि चक्कीवाले पहिये की पैडिया बाहर की तरफ होती है, जबकि हमने भीतर की तरफ बनवायी और दोनो ओर जाल लगवा दिया। खुशकिस्मती से लुहार बडा होशियार और समझदार मिल गया। उसने वक्त पर काम पूरा कर दिया।

अगले दिन यह सब ताम-झाम सुबह ही "बला" पर ले आये। जहाजवाले पहिये दाये-बाये पहलू लगा दिये, चक्कीवाला बीच मे, तीनो पहियो को एक साझे धुरे मे जोड दिया और गिलहरियो को वहा छोड दिया।

गिलहरिया तो रोशनी और ताजा हवा से पागल-सी हो गयी, पहिये के भीतरवाली पैडियो पर एक-दूसरी के पीछे तेजी से भागने लगी। हमारा सारा यन्त्र घूमने लगा और "बला" पालो के बिना ही ऐसी तेजी से चलने लगा कि पुलिस का पोत मुश्किल से ही हमारा पीछा कर पाया।

सभी जहाजो से लोग दूरबीनो मे से हमे देख रहे थे, तट पर लोगो की भीड जमा थी, हम बढते जा रहे थे और लहरे दाये-बाये हटती जा रही थी।

कुछ देर बाद हम मुडे और पोत को वापस घाट पर लाकर खडा कर दिया। वही अधिकारी आया, बुरी तरह से परेशान हो उठा। गालिया बकता और चीखता-चिल्लाता था, लेकिन कर कुछ नही सकता था।

शाम को वही गैदनवैक मोटरगाडी मे बैठकर आया। गाडी से बाहर निकला, सीधा खडा हुआ, मेरी ओर देखा, पेट पर हाथ रखे और उगलिया घुमायी।

"कप्तान गप्पोडशख," वह बोला, "आप ही के पास गिलहरिया है न? हा, हा, मुझे याद है। कितनी कीमत लगाते है आप उनकी?"

तिथि
अक्षांश
घटनाएं
उल्लेखनीय बातें
1
20
3
गिलहरियों द्वारा चालित इंजन का खाका और उसका सिद्धांत
110
5
4
φ150
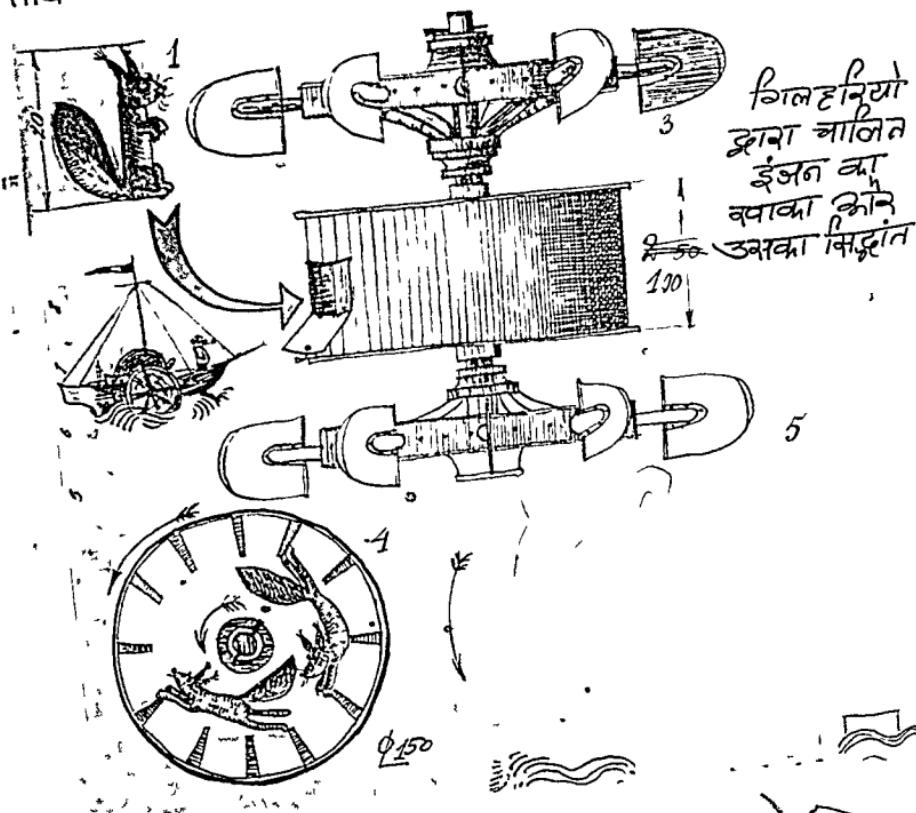
' बात यह है " मैंने जवाब दिया, "सवाल कीमत का नही है। आप तो जानते ही है कि उनके कागजात गायब हो गये ह।"

' अजी हटाइये ' उसने बात काटी, "कोई फिक्र न करे, कप्तान, आप कोइ छोकरे तो है नही, आपको बात समझनी चाहिये – हमारे यहा यह सब मामला बडा सीधा-सादा है। आप मोल बताये "

मैंने ऊचा मोल बताया, उसके माथे पर बल पड गये, लेकिन सौदेबाजी के बिना मोल चुका दिया पहियो के साथ गिलहरिया सम्भाल ली और चलते चलत यह भी पूछा –

' आप इन्हे क्या खिलाते है ? '

हलुआ और अनानास,' मैंने उत्तर दिया और उससे विदा ली।

यह गेदनबैक मुझे अच्छा नही लगा। वैसे तो हैमबर्ग भी मुझे पसन्द नही आया।
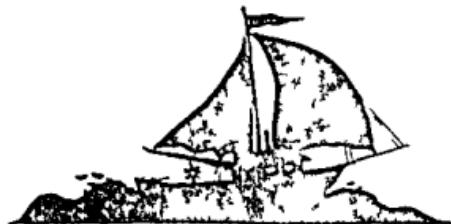
पाचवा अध्याय,

जिसमे हेरिग मछलियो, नक्शो और ताश के पत्तो की चर्चा है

हॉलेड तो मैं बिल्कुल ही नही जाना चाहता था। यह कोई महत्वपूर्ण देश नही है और यात्री के लिये विशेष दिलचस्पी नही रखता। वहा तो सिर्फ तीन ही बढिया चीजे है – हॉलैडी काजल, हालेडी पनीर और हॉलैडी हेरिग मछली।

बात साफ है कि जहाजी के नाते मुझे हेरिग मछली मे दिलचस्पी हुई और मैंने राटरडम जाकर हेरिग मछली के धधे का परिचय पाने का निर्णय किया।

यह धधा वहा उन्होने बडे पैमाने पर कायम कर रखा है। वहा हेरिग मछली पकडी जाती है, उसे नमकीन बनाया जाता है, उसे सिरके मे डाला जाता है, ताजा हेरिग को बर्फ मे जमाया जाता है और जिन्दा हेरिग को खरीदकर मछलीदान म भी रखा जा सकता है।

इस सिलसिले मे हैरानी की एक खास बात है – हालैडवाले शायद कोई राज जानते है। वरना आप ऐसी बेइन्साफी का क्या कारण बता सकते है – उदाहरण के लिये स्काटलैडवालो ने हेरिग मछली के शिकार की कोशिश की। उन्होने जाल डाले, बाहर निकाले – हेरिग से भरे हुए थे। जाहिर है कि बहुत खुश हुए। लेकिन जब मामले की अच्छी तरह जाच-पडताल की, इन मछलियो को गौर से देखा, चखा, तो पता चला कि सारी स्काटलैडी हेरिग मछलिया ही उनके जाल मे फसी है।

नार्वेवालो ने भी ऐसी कोशिश की। वे तो जाने-माने और बढिया मछुए है, लेकिन इस बार उनके किये भी कुछ न हुआ। उन्होने भी जाल डाले, जाल निकाले, देखा – हेरिग मछलियो से भरे हुए है लेकिन वे सब भी नार्वे की ही थी।

हॉलैंडवाले कितने ही सालो से हेरिंग मछलिया पकडते जा रहे है और उनके जालो मे भिन्न-भिन्न किस्मो की हॉलैंडी हेरिंग मछलिया ही फसती है। जाहिर है कि वे इससे खूब लाभ उठाते है—हर जगह अपनी हेरिंग बेचते है—दक्षिणी अफ्रीका मे भी और उत्तरी अमरीका मे भी

मै इस मामले की गहराई मे उतर गया ओर अचानक मैने एक ऐसी महत्वपूण खोज कर डाली, जिससे मेरी यात्रा की प्रारम्भिक योजना पूरी तरह ही बदल गयी। कई गम्भीर निरीक्षणो के बाद मै इस अचूक नतीजे पर पहुचा कि हर हेरिंग मछली है, लेकिन हर मछली हेरिंग नही है।

आप समझते है कि इसका क्या अर्थ है?

इसका मतलब यह है कि बहुत-सा धन खर्च करने की कोई जरूरत नही, हेरिंग मछलियो को पीपो मे भरने, जहाजो पर लादने और उन्हे जहा पहुचाना हो, वहा फिर से उतारने की आवश्यकता नही रहेगी। झुण्डो या रेवडो मे—आप जैसा भी कहना चाहे—जिन्दा हेरिंग मछलियो को उनके नियत स्थान पर पहुचाना क्या ज्यादा अच्छा नही होगा?

यदि प्रत्येक हेरिंग मछली है, तो इसका अर्थ यह है कि वह डूब तो नही सकती। मछलियो को तैरने का गुण तो प्रकृति की ओर से मिला है, ठीक है न? दूसरी तरफ, अगर कोई बाहर की मछली उनमे आ मिलेगी, तो हर मछली तो हेरिंग नही हो सकती। इसका मतलब यह है कि उसे पहचानना, हेरिंग मछलियो से अलग करना, भगाना, डराना या फिर नष्ट ही कर देना कुछ मुश्किल नही।

हेरिंग मछलियो के परिवहन के पुराने ढग के अनुसार जहा बडे जहाजी दल और जटिल यन्त्रोवाले बहुत बडे माल लाने और ले जानेवाले जहाजो की जरूरत थी, वहा नये तरीके के मुताबिक मेरे "बला" जैसा कोई भी छोटा-सा पोत इस काम को पूरा कर सकता था।

एक तरह से मैंने यह तो सिद्धान्त-रचना की थी। किन्तु बडा आकर्षक था यह सिद्धान्त और मैने अपने विचार को व्यवहार की कसौटी पर परखना चाहा। इसके लिये सयोग भी बन गया—हेरिंग मछलियो का एक थोक उत्तरी अफ्रीका को, अलेक्जेड्रिया के बन्दरगाह को भेजा जा रहा था। हेरिंग मछलिया पकडी जा चुकी थी, उन्हे नमकीन बनाया जानेवाला था, लेकिन मैंने यह काम रोक दिया। हेरिंगो को समुद्र मे छोड दिया, झुण्ड के रूप मे उन्हे एकत्रित किया, मैंने और सब्वल न पाल ऊपर किये और चल दिये। सब्वल ने चालन-चक्र सम्भाला और मैं पोत के अगले सिरे की नोक पर बैठ गया, लम्बा कोडा हाथ मे ले लिया और जैसे

ही कोई दूसरी मछली मुझे नजर आ जाती, मैं उसके होठो पर तडा-तड कोडे बरसाता, कोडे बरसाता जाता।

और यह समझ लीजिये कि बहुत बढिया मामला रहा यह – हमारी हेरिगे चली जा रही थी, डूबती नही थी, फुर्ती से बढी जा रही थी। हम बडी मुश्किल से उनका साथ दे पा रहे थे। कोई दूसरी मछली भी उनमे नही घुसती थी। दिन तो ऐसे आसानी से गुजर गया। लेकिन लगा कि रात को मुश्किल रहेगी – उनकी रखवाली करते-करते आखे थक जायेगी और सबसे बडी बात तो यह कि सोने की फुरसत नही मिलेगी। एक हेरिगो पर नजर गडाये रहेगा और दूसरा किसी तरह उनके पीछे-पीछे चालन-चक्र घुमाता रहे यही बडी बात है। एक, दो दिन की बात होती तो किसी तरह निभा भी लेते, लेकिन हमारा तो बहुत लम्बा रास्ता था आगे महासागर था, उष्णदेशीय विस्तार थे थोडे मे, मैने यह महसूस किया कि हम सारा मामला चौपट कर देगे।

सो मैने सारी स्थिति पर सोच-विचार किया और एक अन्य व्यक्ति – एक जहाजी को पोत पर लेने का निर्णय किया। और देखिये, इसके लिये जगह भी बहुत ठीक थी। उस वक्त हम ब्रिटिश चैनल मे दाखिल हो चुके थे बगल मे फ्रास और कैले नामक बन्दरगाह था और कैले बन्दरगाह म हमेशा ही ढेरो बेकार जहाजी होते है। जिसे चाहो, उसे चुन लो – बढई चाहो, तो बढई, छोटा मचालक या पहले दर्जे का चक्र-चालक। मै ज्यादा सोच-विचार किये बिना "बला" को तट के करीब ले गया, पालो को ऐसी स्थिति मे कर दिया कि पोत एक जगह पर ही खडा रहे, समुद्री पथ-प्रदर्शक के पोत को अपने पास बुलाया और सब्बल को जहाजी लाने के लिये तट पर भेज दिया।

जाहिर है कि इस मामले मे मैने गलती कर दी – जहाजियो को चुनने का काम बडा सजीदा और जिम्मेदारी का है। इसमे कोई शक नहीं कि सब्बल बडी लगन से काम करता था, लेकिन जवान था, उसे काफी तजरबा नही था। मुझे खुद यह काम करना चाहिये था, मगर दूसरी तरफ, वहा पोत पर भी दम मारने की फुरसत नही थी। कुछ भी कहिये, जिन्दा हेरिगो को हाककर ले जाने का काम एक नया काम था। हर नये काम की तरह इसकी भी अपनी कठिनाइया थी। बडी चौकसी चाहिये। पोत से हट गये, ध्यान चूका और पूरा झुण्ड ही गायब। तब नुकसान चुकाना सम्भव नही होगा, दुनिया भर मे बदनामी होगी और सबसे बडी बात तो यह कि इस बढिया और उपयोगी शुरूआत का वही अन्त हो जायेगा।

आप तो जानते ही है कि यह कैसे होता है – पहली बार अगर कामयाबी न

मिले, तो दूसरी बार कोई भरोसा नही करेगा और आजमाने नही देगा।

ऐसी बात है। तो खैर! मैंने सब्बल को केले बन्दरगाह भेज दिया, डेक पर आरामकुर्सी रखकर उस पर लेट गया। एक आख से पढता था, दूसरी से हेरिंगो को देखता था। हमारी ये मछलिया खाती पीती थी, उछलती-कूदती थी और धूप मे अपनी केंचुलियो को चमकाती थी।

शाम होते-होते सब्बल एक मल्लाह को अपने साथ लेकर लौट आया।

देखने मे वह मुझे कुछ बुरा नही लगा। बहुत जवान भी नही था, बहुत बूढा भी नही। हा, कद जरूर कुछ छोटा था, लेकिन आखो से साफ नजर आ रहा था कि बडा चुस्त है। उसकी दाढी भी समुद्री डाकुओ जैसी थी। हा, जैसा कि सुनने मे आया है उनकी दाढी आम तौर पर लाल होती है, लेकिन इसकी एकदम काली थी। पढा-लिखा, तम्बाकूनोशी मे परहेज करनेवाला, साफ-सुथरे कपडे पहने और चार भाषाए – अंग्रेजी, जर्मन, फ्रासीसी और रूसी – जाननेवाला। सब्बल ने यह तो खास तौर पर तारीफ की बात की थी – मुसीबत का मारा हुआ वह खुद तो इस वक्त तक अंग्रेजी भूलने लगा था। नये जहाजी का कुलनाम कुछ अजीब सा था – फुक्स। लेकिन कुलनाम तो ऐसी चीज है, जिसे बदला जा सकता है। फिर सब्बल ने इसी वक्त मेरे कान मे यह फुसफुसा दिया कि फुक्स तो जहाजी नही, हीरा है हीरा, *कारतो* * (*मानचित्रो*) *को खूब अच्छी तरह से समझता है।*

इसके बाद तो मैं बिल्कुल शान्त हो गया – अगर मानचित्रो को अच्छी तरह से समझता है, तो इसका मतलब हुआ कि जहाजी है, वह चालन-चक्र भी सम्भाल सकता है और जरूरत होने पर अकेला ही पहरा भी दे सकता है।

सक्षेप मे मैं राजी हो गया। पोत के रजिस्टर मे मैंने फुक्स का नाम लिख लिया, उसे उसके कर्त्तव्य बताये और सब्बल को नलपेट मे उसके लिये जगह ठीक करने को कह दिया। इसके बाद पाल ऊपर उठाये, मुडे और आगे चल दिये।

यह समझिये कि ठीक वक्त पर हमने यह आदमी ले लिया। अभी तक तो किस्मत हमारा साथ देती रही थी – हवा पीछे से चल रही थी। लेकिन अब बिल्कुल सामने से चलने लगी। कोई दूसरा वक्त होता, तो शायद मैंने अपनी शक्ति बचायी होती, पोत को एक जगह पर टिकाये रखा होता या फिर लगर डाल देता, लेकिन आप खुद ही समझते है न, यहा तो हेरिंगो का मामला था। उन्ह हवा मे क्या फर्क

---

* कारता – रूसी भाषा मे इस शब्द के दो अर्थ है – मानचित्र और ताश का पत्ता।

FIVE STAR
BRANDY
पुलिस के रजिस्टर में
7001-A
कुलनाम
नाम फ़क्कड़
उपनाम फ़क्कड़

पडता था गेगे तेजी मे चली जा रही थी मानो कोई बात ही न हो और इसका मतलब था कि हमे पीछे नही छूटना चाहिये। चुनाचे दाये-बाये होते, टेढा मेढा रास्ता बनाते हुए बढना पडा। मैंने सभी को ऊपर भेज दिया। सव्वल को हेरिगो को खिलाने का काम सौपा खुद चालन-चक्र सम्भाला और गति खूब तेज करके आदेश दिया –

मुडने के लिये तैयार हो जाये!

देखता क्या हू कि फुक्स मोमबत्ती की तरह खडा है, हाथ जेबो मे है और दिलचस्पी से पालो को देख रहा है।

अब मैंने सीधे उसे ही सम्बोधित किया –

' फुक्स मैं चिल्लाया मुडने के लिये तैयारी कीजिये!"

वह चौका सुध-बुध खोये हुए व्यक्ति की तरह उसने मेरी तरफ देखा और सभी चीजो – जीवनरक्षा-चक्रो फालतू रस्सो और लालटेनो को केबिन मे घुसेडने लगा। जाहिर है कि हम मोड नही मुड पाये

रहने दिया जाये! मैं चिल्लाया।

उसने तब सारा सामान बाहर निकालकर पोत के पहलू के पास रख दिया।

मैने सोचा, खूब जहाजी मिला! एकदम बुद्धू! वैसे मैं काफी शान्त आदमी हू, लेकिन उस वक्त तो मैं भी आपे से बाहर हो गया।

"ऐ फुक्स," मैं बोला, तुम भला कैसे जहाजी हो कम्बख्त?"

'मै?' उसने जवाब दिया "मै जहाजी नही हू। मैं तो ऐसे ही कुछ बुरे दिनो का शिकार हो गया था और मेरे दोस्तो ने सलाह दी कि मैं कुछ हवा-पानी बदल आऊ '

"लेकिन सुनिये, मैंने उसे टोका, 'सव्वल ने तो मुझे बताया था कि आप कारतो (मानचित्रो) को बहुत अच्छी तरह से समझते हे?"

"वह तो जितना चाहे," उसने उत्तर दिया, "कारता (ताश का पत्ता) यह तो मेरा पेशा है – ताश के पत्ते तो मेरी रोटी है, लेकिन क्षमा कीजिये, समुद्री मानचित्र मैं नही जानता। सच बात तो यह है कि मै पेशे से जुआरी हू।"

बस, मैं तो माथा पकडकर बैठ गया।

आप ही बताये क्या करता मै उसका?

तट पर वापस पहुचाता – इसका मतलब चौबीस घण्टे बरबाद करना था। हवा तेज होती जा रही थी, तूफान घिरता आ रहा था, हेरिगे भाग जायेगी। दूसरी तरफ, उस निकम्मे जुआरी को बेकार अपने साथ लिये फिरना भी बेतुका था –

थि रेखांश अक्षांश
घटनाएं
उल्लेखनीय बातें
फ्रुक्स अपना काम
कर रहा है
143
1983
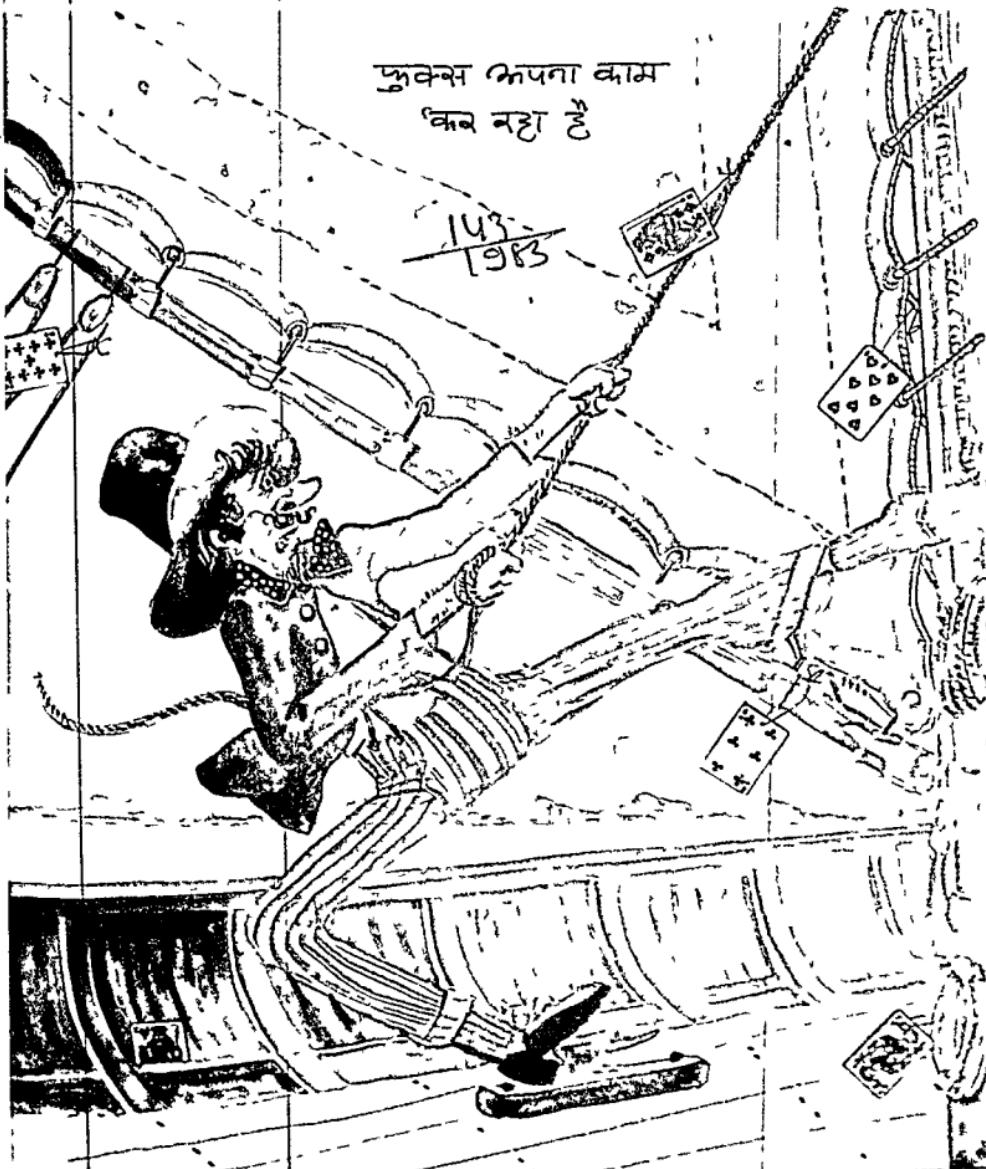
वह न सिर्फ समुद्री आदेशो को ही नही समझता था, पोत की एक रस्सी तक मे परिचित नही था। मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा था।

किन्तु इसी वक्त मेरे दिमाग मे एक बहुत बढिया ख्याल आया। बात यह है कि फुरसत के वक्त मैं कभी-कभी ताश के पत्तो से अपना मन बहलाता हू और इसलिये मेरे पास ताश की एक गड्डी भी थी। चुनाचे मैंने झटपट हर रस्सी पर एक पत्ता बाध दिया, पोत को हवा की अनुकूल दिशा मे किया और मोड मुडने का प्रयास दोहराया।

'मोड के लिये तैयार हो जाइये! हुक्म की तिक्की खोलिये, पान का गुलाम ऊपर खीचिये, चिडिया का दहला लपेटिये "

सचमुच बहुत ही बढिया ढग से हम मोड मुड गये। यह फुक्स वास्तव मे ही पत्तो को इतनी अच्छी तरह से पहचानता था कि अधेरे मे भी किसी रग को नही गडबडाता था।

तो इस तरह हम आगे बढ चले। होशियारी से रास्ता बनाते जा रहे थे। हवा तेज होती जा रही थी। यो तो कोई बात नही थी, लेकिन हेरिग मछलियो के कारण मुझे चिन्ता हो रही थी। कौन जाने, उन पर मौसम का कैसा असर पडे? मेरे लिये जल्दी करने की कोई बात नही थी, सामान ऐसा नही था कि फौरन पहुचाया जाये, इसलिये जोखिम क्यो ली जाये? इसलिये मैंने बन्दरगाह मे रुकने का फैसला किया।
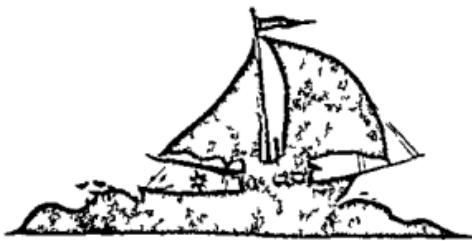
छठा अध्याय,

जिसका एक ग़लतफ़हमी से आरम्भ और अप्रत्याशित स्नान से अन्त होता है

वाइट द्वीप के नजदीक म इगलैड के साउथेम्पटन बन्दरगाह की ओर मुड गया। तट के नजदीक लगर डाला, सब्बल को हेरिगो की देख-भाल के लिये छोडा और फुक्स के साथ नाव पर सवार होकर हम दोनो तट पर पहुचे। बहुत ही अच्छी जगह पर हम उतरे, वहा घास बराबर कटी हुई थी, पगडडियो पर रेत बिछी थी, सभी ओर छोटी-छोटी सुन्दर बाडे बनी थी और उन पर लिखा था – "यहा चलना मना है, आर्चीबाल्ड डैडी की जागीर।"

हम नाव से उतरे ही थे, एक कदम भी नही उठा पाये थे कि फ्राककोट, ऊचे टोप और सफेद टाइया पहने महानुभावो ने हमे घेर लिया। शायद मिस्टर डैडी अपने परिजन के साथ थे, शायद विदेश मन्त्री अपने अनुगामियो के साथ या फिर गुप्त पुलिस के एजेन्ट – सूट से यह अनुमान लगाना मुश्किल था। तो वे करीब आये, सलाम दुआ और बातचीत हुई और जानते हे कि क्या पता चला? पता यह चला कि वे वहा के भिखारी हैं। इगलड मे यो भीख मागने की सख्त कानूनी मनाही है, लेकिन अगर आप फ्राककोट पहने हे, तो ठीक है। अगर कोई भीख देता है, तो ऐसा माना जाता है कि भीख लेनेवाला भिखारी नही है, बल्कि एक भद्र पुरुष ने दूसरे भद्र पुरुष की मदद की हे।

तो मैने उन्हे कुछ रेजगारी दे दी और आगे चल दिया। अचानक एक और व्यक्ति सामने से आ गया। इतना लम्बा कि कुछ पूछिये नही। हम एक दूसरे के करीब आये। उसने टोप उतारा ओर बडी शिष्टता से झुककर प्रणाम किया। लेकिन

जाहिर है कि मैंने जेब टटोली, दो कोपेक का सिक्का निकाला और उसके टोप मे डाल दिया। मैंने उम्मीद की थी कि वह शुक्रिया अदा करेगा, लेकिन कल्पना कीजिये, वह तो लाल-पीला हो उठा, उसने फू-फा की, एक आख पर चश्मा चढाया और बडे रोब से बोला –

"मिस्टर आर्चीबाल्ड डैंडी। किनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है मुझे?"

"मैं हू सागरो-महासागरो की यात्रा करनेवाला कप्तान क्रिस्तोफोर गपोडशख," मैंने अपना परिचय दिया।

"आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई," वह बोला। "तो अपनी रक्षा कीजिये, कप्तान!"

मैंने माफी मागनी चाही, लेकिन किससे माफी मागता! मैंने देखा कि देर हो चुकी है। माफी मागने की बात ही क्या हो सकती थी! उसने अपना लम्बा टोप घास पर रख दिया, फ्राककोट उतार फेका तो मैंने भी अपनी रक्षा के लिये डटने का निर्णय कर लिया – जहाजियो की जाकेट उतार फेकी और मोर्चा लेने की मुद्रा धारण कर ली।

फुक्स भी नही चकराया, उसने निर्णायक की भूमिका ले ली, थोडा एक ओर को हटा और पूरे जोर से चिल्लाया –

सहायक, रिंग मे बाहर जाये! घण्टा बजाया जाये!"

मिस्टर डंडी उछलने-कूदने, हाफने और घूसे घुमाने लगा। ऐसा समझिये कि लडको का रेलगाडी का खेल खेलने जैसा मामला लग रहा था। वह मुझ पर झपटा। मुझे भी घूसा से काम लेना पडा।

हाथो को छूट देना मुझे पसन्द नही है, लेकिन यहा तो मुक्केबाजी हो रही थी, उदात्त हाथापाई थी। मैंने हाथो को ऊपर उठाकर घुमाया बडी मुश्किल से ही उसका वार बचा पाया।

मैंने देखा कि बडी अटपटी स्थिति है – हमारे कद के बेहद फर्क की वजह से मैं कही पर भी निशाना क्यो न साधू, उसकी कमर के नीचे ही मेरा घूसा लगेगा। जानते ही हैं कि यह मुक्केबाजी के नियमो के अनुसार नही है। इसके विपरीत, वह मेरी टोपी के ऊपर हवा मे मुक्के चलाता था। उसके वार भी खाली जाते थे। मुक्केबाजी का पहला दौर तो किसी नतीजे के बिना यो ही खत्म हो गया।

लेकिन हार-जीत का फैसला तो किसी न किसी तरह होना चाहिये था और तभी फुक्स ने हमारी मदद की।

"कप्तान, आइये" उसने कहा और मुझसे अपने कधो पर चढने का इशारा किया।

मै उसके कधो पर चढ गया और मैंने महसूस किया कि अब बिल्कुल दूसरी बात है। यो कहिये कि मैं अब अपने विरोधी जितनी ही ऊचाई पर था और नियमानुसार मुक्केबाजी मे हिस्सा ले सकता था। फुक्स मेरे नीचे उछल-कूद रहा था, मैदान मे उतरने को बेचैन था। मैंने महसूस किया कि अब मामला शुरु करना चाहिये।

"तो बढिये फुक्स!" मैंने कहा।

फुक्स के लिये सम्भवत कुछ आसान नही था, फिर भी वह प्रफुल्लता से खरखरी आवाज मे चिल्लाया –

'घण्टा बजाया जाये!"

और हम फिर से घूसेबाजी करने लगे।

मिस्टर डैडी बहुत बढिया घूसेबाज था। मेरे बासे पर बडे जोर का घूसा लगा, किन्तु तभी मुझे अपनी जवानी के दिन याद हो आये, मैंने फुक्स को एड लगायी, प्रतिद्वन्द्वी पर झपटा और बहुत ही जोर का वार किया।

वह क्षण भर को बुत बना रह गया, उसने आखे मूद ली, बाहे अगल-बगल लटका ली और अचानक मस्तूल की भाति ढह पडा। फुक्स ने उसकी वास्कट की जेब मे से घडी निकाली और ऊचे-ऊचे सेकड गिनने लगा। मिस्टर डैडी ने चालीस मिनट बाद आखे खोली। उसने जबडे पर हाथ फेरा, हैरानी से इधर-उधर देखा, फुक्स और मुझ पर नजर पडी, उछलकर खडा हुआ और अपनी पोशाक को ठीक-ठाक करने लगा।

मैंने दुबारा अपना परिचय दिया, क्षमा मागी ओर गलतफहमी का कारण स्पष्ट किया। और समझिये कि हमने सुलह कर ली। हमारे बीच अच्छी जान-पहचान ही नही, दोस्ती भी हो गयी। इसके बाद उसकी जमीदारी देखी, उसके घर गये, चाय पी, अगीठी के करीब बैठे रहे और फिर मेरे यहा, 'बला" की ओर चल दिये।

मिस्टर डैडी ने मेरा पाल-पोत देखा, बेहद खुश हुआ ओर उगलियो पर गिनने लगा –

"आज बृहस्पति है   इसका मतलब यह कि कल शुक्र और परसो शनि होगा मिस्टर गपोडशख," वह अचानक जोर से कह उठा, "आपको तो स्वय भगवान ने यहा भेजा है। इतवार को बडी राष्ट्रीय नाव-दौडे होगी। आपकी उनमे जीत होनी चाहिये। मैं खुद आपके साथ रहूगा और इस बार मिस्टर बोल्डुइन का सिर झुक जायेगा।"

सच कहू तो मै फौरन ही यह नही समझ पाया कि क्या मामला है। लेकिन मिस्टर डैडी ने मुझे सारी बात समझा दी। पता चला कि उसका पडोसी था मिस्टर

वोल्डुइन। इस वोल्डुइन के साथ उसका हर चीज मे मुकाबला चलता था – कौन लोगो की नजर मे ज्यादा ऊचा है, किसकी टाई अधिक सुन्दर ढग से बधी है, किसका पाइप बेहतर है   ये सब तो यो ही छोटी-मोटी बाते थी, लेकिन उनका असली मुकाबला तो नावो के मामले मे होता था। दोनो ही पाल-नावो के दीवाने थे और जैसे ही दौडे होती थी, तो एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिये कोई भी कीमत चुकाने को तैयार रहते थे।

तो इस डैडी ने एक जानकार की नजर से मेरे "बला" पोत को ध्यान से देखा, उसके गुणो को आका और समझ गया कि ऐसे पोत के साथ तो किसी भी तरह की दौड और किसी भी तरह के मौसम मे विजय सुनिश्चित है। जी!

कुल मिलाकर वह मुझे दौड मे हिस्सा लेने के लिये राजी करने लगा।

"आइये चले, वह बोला, "दोडे बहुत दिलचस्प है, आपका पोत बहुत बढिया है और मुझ जेटल्मेन की बात का यकीन कीजिये कि आप सम्राट का बडा पुरस्कार और एडमिरल नेल्सन का छोटा इनाम भी जीत लेगे।"

म इनामो के फेर मे याम नही पडता हू, लेकिन दौडो मे हिस्सा क्यो न लिया जाये? पोत बढिया हे, नाविक-दल भरोसे का है और मै भी पहली बार तो चालन चक्र नही सम्भाल रहा था। जीतने की सम्भावना थी

मैं तो लगभग राजी हो गया था, लेकिन उसी वक्त मुझे हेरिग मछलियो का ख्याल आया   उनका क्या करू? चुनाचे मैंने मिस्टर डैडी को बताया कि पोत का दौडो मे हिस्सा लेने के लिये इस्तेमाल नही कर मकता, कि बुरी तरह से हेरिग मछलियो के साथ बधा हुआ हू। शुरू मे तो वह परेशान हो उठा, लेकिन बाद मे यह मामला भी ठीक-ठाक कर देने का वादा किया। और कल्पना कीजिये, उसने सचमुच मामले को ठीक-ठाक कर दिया। उसी दिन मुझे अनुमति मिल गयी और मैं हेरिग मछलियो के पूरे झुण्ड को पोर्टस्माउथ के एडमिराल्टी डॉक पर छोड आया।

इसके बाद हमने पोत को तैयार किया – पहलुओ पर चर्बी लगायी, युद्धपूर्व की तैयारी की तरह सभी फालतू चीजे हटा दी और रस्सियो को अच्छी तरह कस दिया। दौडा के दिन जहाजियो की सफेद जाकेट पहने और दातो मे पाइप दबाये मिस्टर डैडी सुबह ही "बला" पर आया। अगर अप्रत्याशित रूप से हमारी हार हो जाये, तो ऐसी स्थिति मे गम दूर करने के लिये उसने सोडा व्हिस्की की दो पेटिया भी "बला" पर रखवा दी, एक आख का चश्मा लगाया, पाइप जलाया और पोत के पृष्ठ भाग मे जा बैठा।

जानते ही है, जैसा कि दौडो के समय हमेशा होता है – वहा ढेरो मस्तूल, पाल

और झण्डे थे, तट पर दर्शको की भीड थी। मन मे हलचल पैदा करनेवाला वातावरण था। बहुत शान्त स्वभाव का व्यक्ति होते हुए भी में घबराहट महसूस करने लगा। तो हम दौड की आरम्भ रेखा पर सामने आये। दौड शुरू हुई! पाल हवा से फूल गये। पोत दौडने लगा। अपनी तारीफ किये विना आपसे कहना चाहता हू कि मेने खूब बढिया ढग से दौड शुरू की। सभी को पीछे छोड गया। पानी को चीरता बढा जा रहा था, मुझे विजय की खुशी की पूर्वानुभूति हो रही थी।

दौड के लगभग पूरे फासले मे ऐसे ही अगुआ बना रहा। समाप्ति-रेखा के निकट हमसे थोडी भूल हो गयी – स्थिति को ठीक तरह से समझा नही, तट के करीब चले गये, ऐसे क्षेत्र में जा पहुचे, जहा हवा नही थी, पूरी शान्ति थी। पाल नीचे लटक गये, वे बहुत भोडे लग रहे थे। सब्बल मस्तूल को खरोच रहा था, हवा को बुलाता था, फुक्स भी इसी उद्देश्य से सीटी बजा रहा था किन्तु ये सब तो पूर्वाग्रह है, बकवास हे। मैं इन सब बातो मे विश्वास नही करता। हमारा 'बला" पोत खडा था, हमारे प्रतिद्वन्द्वी आगे बढते जा रहे थे और मिस्टर वोल्डुइन अपने पोत पर सबसे आगे था।

मिस्टर डैडी ने पृष्ठ भाग के पीछे नजर डाली और उदास हो गया – उसने अपने को कोसा, पेटी का ढक्कन तोडकर उतारा, बोतल निकाली और उसे खोलने के लिये उसके तल पर जोर से हाथ मारा।

कार्क ऐमे निकला, जेसे तोप से गोला। साथ ही "बला" को ऐसा झटका लगा कि वह साफ तोर पर कुछ आगे बढ गया।

मेने क्षुब्ध होने के बावजूद इस बात की तरफ ध्यान दिया और जरूरी नतीजे निकाले। जब तक मिस्टर डैडी व्हिस्की मे अपना गम डुबोता रहा, मुझे हमारी पुरानी कहावत याद हो आयी। जानते है, ऐसा कहा जाता है कि "न तो बुरे जहाज होते हैं, न बुरी हवाए, बुरे कप्तान होते हे!"

लेकिन मेरी तो किसी हालत मे भी ऐसे कप्तानो मे गिनती नही हो सकती। अपनी तारीफ किये बिना ऐसा कह सकता हू। सोचा ठीक है, जो होना है, सो हो। कार्यभार स्पष्ट किया, आदेश दिया

हम तीनो पोत के पिछले सिरे पर खडे हो गये और बोतल के तले पर जोर मे हाथ मारकर एक के वाद एक बोतल खोलने लगे।

अब तो मिस्टर डैडी भी जरा रग मे आ गया। उसने जेब मे से रूमाल निकाला और आदेश देने लगा। सच मानिये, ऐसा करने पर मामला और भी बेहतर हो गया।

पिछवाडे की तोप गोला चलाओ !' वह चिल्लाता।

बादल की सी गरज करते हुए तीन कार्य एक साथ निकलते, मरे हुए जल-पक्षी सागर मे गिरते मोडा वहता पृष्ठ भाग के पीछे पानी उवलता। मिस्टर डेडी अधिकाधिक जल्दी-जल्दी रूमाल हिलाता, अधिक जोर से चिल्लाता –

'पिछवाडे की तोप गोला चलाओ ! आग बरसाओ !"

एकदम ट्राफाल्गर की ही लडाई समझिये। भयानक लडाई

इसी बीच हमारा बला' पोत राकेट के सिद्धान्त के मुताबिक आगे बढता जा रहा था, उसकी रफ्तार तेज होती जा रही थी।

जो छिछली जगह पीछे रह गयी थी पालो मे हवा भर गयी थी, रस्सिया तनकर भनभनाने लगी थी।

हम हाथ से लगभग खिसक गयी जीत को फिर से हासिल करने, एक के बाद एक प्रतिद्वन्द्वी को पीछे छोडने लगे। तट पर ऐसी दौडो के प्रेमी बहुत विह्वल थे, चीख-चिल्ला रहे थे। एक वोल्डुइन ही हमसे आगे था लीजिये, हम उसके बराबर हो गये, हमारे पोत का सिरा थोडा आगे निकल गया, अब बॉडी आगे निकल गयी इसी वक्त आर्केस्ट्रा ने खुशी की धुन बजानी शुरू कर दी, मिस्टर डैडी मुस्कराया और उसने आदेश दिया –

"पिछवाडे की तोप सलामी दो !" और चित लेट गया।

अगले दिन तो बस, हमारी विजय की ही चर्चा होती रही। समाचारपत्रो म पूरे-पूरे पृष्ठ के शीर्षक और दौडो के सविस्तार वर्णन छापे गये। न जाने कहा से हमारे मित्र प्रकट हो गये उन्होने हमे बधाइया दी। किन्तु इस विजय से हमारे दोस्त ही नही, दुश्मन भी बन गये।

मिस्टर बोल्डुइन ने अपनी कोशिश की और समझिये कि खुसुर-फुसुर, झूठी-सच्ची बाते और साजिशे शुरू हो गयी। आखिर अच्छा खासा हगामा हो गया। लेकिन इस हगामे की छिपे-छिपे तैयारी की गयी और हम किसी भी तरह का सन्देह किये बिना इनाम लेने के लिये गये।

बडा ही समारोही वातावरण था। चुगी की पुरानी इमारत के तुला-हॉल मे सम्राट पाल-पोत क्लब के सभी सदस्य जमा थे।

अगर इनामो का वजन इनाम पानेवाले के वजन से अधिक हो, तो वहा इस चीज को विशेष सम्मान की बात माना जाता है, मुझसे भी तुला पर खडा होने के लिये कहा गया, लेकिन मुझे इतने ज्यादा इनाम मिले थे कि मैने अपने पूरे नाविक-दल को ही तौल लेने का फैसला किया। तो हम कद के मुताबिक खडे

राकेट-चालन का सिद्धान्

हो गये – डडी, सब्बल, मै और फुक्स। दूसरे पलडे पर घरेलू उपयोग की वस्तुओ और वर्तनो की पूरी दुकान – सोने के टब, फूलदान, क्यूब, गिलास और जाम रख दिये गये। इसके बाद तमगे, पदक और छुटपुट सजावटी चीजे डाल दी गयी। जब तुला के पलडे बराबर हुए, तो क्लब के अध्यक्ष समारोही भाषण करने के लिये खडे हुए। उन्होने क्या कहा, वह तो इस वक्त मुझे याद नही आ रहा, किन्तु शब्द बडे हार्दिक और उनका सार गरिमापूर्ण था – "रक्तहीन विजय श्रेष्ठो मे से श्रेष्ठ युवाजन के लिये उदाहरण "

ऐसे शब्दो ने मेरे हृदय को तो इतना छू लिया कि बडी मुश्किल से अपन आसू रोक पाया।

किन्तु अध्यक्ष का भाषण समाप्त होते ही मिस्टर बोल्डुइन उठकर खडा हुआ।

"आदरणीय लार्ड, अध्यक्ष महोदय, क्या आपको यह ज्ञात है कि कप्तान गपोडशख ने हमारे क्लब की एक अलिखित परम्परा का उल्लघन करते हुए जहाजी की वर्दी मे घुडसवारी की है?" उसने यह सवाल किया और नार्वे का वह अखबार हाथो पर फैलाकर दिखाया, जिसमे घुडसवारी करते हुए मेरा फोटो छपा था।

जैसा कि मै पहले कह चुका हू, फोटो वास्तव मे ही जहाजी की शोभा के अनुरूप नही था और इसलिये हॉल मे हल्की खुसुर-फुसुर होने पर मुझे कोई हैरानी नही हुई। लेकिन दौड तो मैने जीती ही थी और, जैसा कि कहा जाता है, विजेताओ पर उगली नही उठायी जाती। अध्यक्ष ने कुछ इसी तरह का जवाब दिया। शोर बन्द हो गया। मैने तो सोचा कि सब ठीक-ठाक हो जायेगा, लेकिन ऐसा कब होनेवाला था। मामला सम्भला नही उसी बोल्डुइन ने फिर से बोलने की अनुमति ले ली।

"लार्ड अध्यक्ष महोदय को क्या यह मालूम है," वह कहता गया, "कि इस मिस्टर गपोडशख ने ब्रिटिश उपनिवेश को भेजी जानेवाली हेरिग मछलियो का थोक परिवहन के लिये हथिया लिया है और मिस्टर गपोडशख द्वारा सुझाये गये मछलियो के परिवहन के ढग से जहाजो के मालिको, बर्तानवी सम्राट के राज्य-नागरिको को नुकसान पहुच रहा है?"

आप समझे न, फोटो की तुलना मे यह कही अधिक जोरदार चाल थी। परम्पराए अपनी जगह है, वर्दी अपनी जगह है – जाहिर है कि इगलैड मे इन सबकी भी बहुत इज्जत की जाती है, लेकिन व्यापारिक हितो को सबसे ऊपर माना जाता है। इसलिये इसमे हैरानी की कोई बात नही कि हॉल मे शोर बढ गया। अलग-अलग आवाजो को पहचानना और फब्तियो को सुन पाना मुश्किल हो गया

था। लेकिन मिस्टर बोल्डुइन को इतने से ही सन्तोष नही हुआ। वह अधिक ऊची आवाज मे कहता गया —

"लार्ड अध्यक्ष महोदय को यह मालूम है या नही कि जहाजो के अग्रेज मालिको को नुकसान पहुचानेवाली उल्लिखित हेरिग मछलिया आर्चीबाल्ड डैडी, एस्क्वायर, के सरक्षण आर उसके सीधे महयोग से मम्राट के एडमिराल्टी डॉको मे सुरक्षित रखी जा रही है? आपको यह भी ज्ञात हे या नही कि उल्लिखित डॅडी, एस्क्वायर, एक बर्तानवी का अपना कर्त्तव्य और मान-सम्मान भूलकर बुराई और अपराध के पथ पर चल पडा है, भगवान ओर सम्राट के विरुद्ध जा रहा है ओर पिछले कुछ अर्से से मास्को का एजेन्ट बन गया हे? "

बस, यह समझिये कि चुगी की इमारत मे मानो बम फट गया। हॉल मे घबराहट-सी फेल गयी। कुछ लोग सीटिया ओर कुछ दूसरे तालिया बजाने लगे, इसके बाद सभी उछलकर खडे हो गये, दलो मे बट गये और बहुत ही भयानक-सी मूरते बनाये हुए एक-दूसरे के निकट होने लगे।

तब मिस्टर डैडी भी अपने को वश म न रख सका। तुला से कूदा आर जोर से चीखते हुए मिस्टर बोल्डुइन पर झपट पडा। अब तो सबके बीच मारपीट शुरू हो गयी। इस मुसीबत से हम भी न बचते, लेकिन इनामो ने हमारी रक्षा की। बेकार ही तो हमने उन्हे नही जीता था।

मिस्टर डडी जेसे ही तुला से नीचे कूदा, हमारा पलडा शहतीर से जा लगा और हम थियेटर के बाक्स की भाति उस ऊचाई से मारपीट देखते रहे।

आपसे सच कहता हू कि मारपीट कुछ बुरी नही रही। सभी ओर धूल के बादल उड रहे थे, अग्रेजो के अच्छे माथो के चटकने की आवाजे सुनाई दे रही थी, पुराना अग्रेजी फर्नीचर टूटकर गिर रहा था

भद्रजन आपे से बाहर हो गये थे, जो भी चीज हाथ मे आ जाती, उमी को लेकर एक-दूसरे पर पिल पडते। सारा हॉल टूटे दातो तथा फटे काफो-कालरो से भरा पडा था। एक के बाद एक सूरमा नीचे गिर रहा था। भयानक दृश्य था।

किन्तु शीघ्र ही मारपीट करनेवालो की भीड बहुत कम हो गयी, लडाई शान्त हो गयी, हम बेहोश पडे लोगो पर नीचे उतरे और दरवाजे की ओर चल दिये। इसी क्षण मिस्टर बोल्डुइन हिला-डुला और उसने गहरी साम ली।

"आपको मालूम हे कि " उसने झल्लाकर खरखरी-मी आवाज मे कहा।

इसी वक्त अध्यक्ष महोदय को होश आया, वह कोहनियो के बल उचका ओर उसने घण्टी बजायी।

"नही, मालूम नही, कुछ मालूम नही।" उसने विनयपूर्वक उत्तर दिया और मुर्दे की तरह ढह गया।

फिर से शान्ति हो गयी। हम बाहर निकले, हमने खुलकर सास ली, इर्द-गिर्द नजर दौडायी और 'बला" की ओर भाग चले।

वहा पहुचते ही लगर उठाया, पाल लगाये और अपनी हेरिग मछलियो का बचाने के लिये पूरी रफ्तार से पोर्टस्माउथ चल दिये।

हमारी खुशकिस्मती थी कि डॉको पर कुछ देर पहले की घटनाओ की खबर नही पहुची थी। उन्होने हमारे लिये बन्दरगाह खोल दिया, हेरिग मछलियो को ह साफ दिया और शुभ-यात्रा की कामना तक की। हम इतमीनान मे बढते रहे और एक घण्टे बाद क्षितिज पर वाइट द्वीप दिखाई दिया। हम उसके करीब से निकल गये, हेरिग मछलियो का जमघट-सा कर दिया और पोत के दाये पहलू पर खड रहकर ब्रिटेन के नीचे तटो को धुध मे तिरोहित होते देखते रहे।

मुझे जिस दृश्य का साक्षी होना पडा था, मेरे मन को अभी तक उससे चैन नही मिला था। सब्बल उदास-सा खडा था—तट पर कुछ ऊब-सा गया था। सिर्फ फुक्स ही खुश था।

फुक्स तो तुला पर से सोने की जजीर ले आया था, जिसके सिरे पर लगर बना हुआ था और अब बहुत ध्यान से उस पर सोने की कोटि का निशान खोज रहा था।

लेकिन जल्द ही फुक्स का भी मूड खराब हो गया।

"हमारे धधे मे ऐसी हरकत के लिये कसकर पिटायी की जाती है," उसने अचानक कहा, डेक पर से समुद्र मे थूका और जजीर को मेरी ओर बढा दिया।

मैंने उसे देखा और उसके मूड खराब होने का कारण मेरी समझ मे आ गया—जजीर की अन्तिम कडी पर बिल्कुल साफ शब्दो मे यह खुदा हुआ था—"कृत्रिम आभूषणो का कारखाना 'एलकेमिस्ट'। इगलैड मे निर्मित।"

"बहुत बढिया चीज है और बनी भी अच्छे कारखाने मे है," मैंने फुक्स को जजीर लौटाते हुए कहा।

इसी क्षण मेरी पीठ के पीछे पाल फडफडाया और इसके पहले कि मुडकर देख सकू, मैंने अपने को सागर मे पाया।

आखो मे पानी पडने और इसलिये कुछ साफ दिखाई न देने के कारण मैंने अटपटे ढग से हाथो को इधर-उधर हिलाया-डुलाया और अचानक कोई ठोस चीज मेरे हाथ मे आ गयी। आखे खोली, तो देखा कि टाग मेरे हाथ मे है और सब्बल का

फटी हुई कमीज
का एक टुकड़ा
नोचे हुए
बाल
छडी की
सुइया
दांत
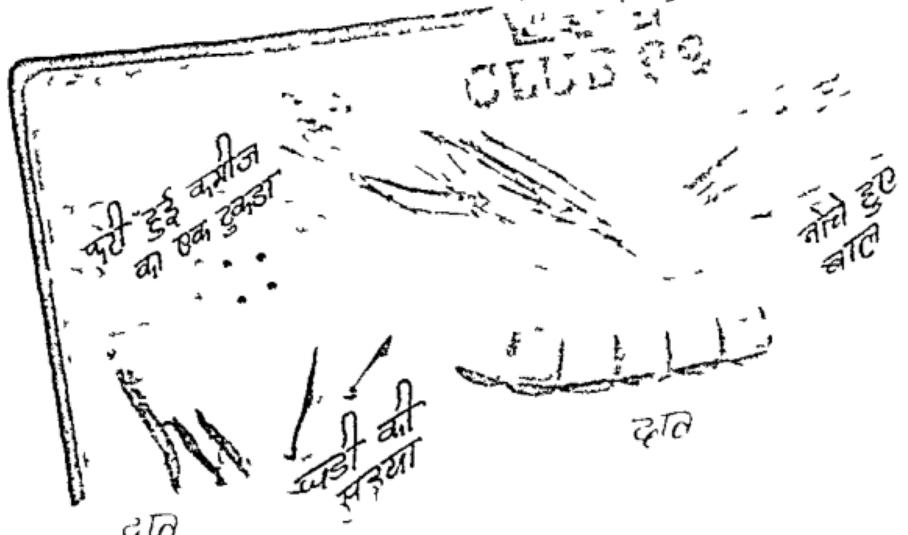
सिर मेरे आगे है। सब्बल भी टाग को थामे था और फुक्स उसके आगे था। फुक्स अपनी जजीर का सहारा लिये था, जजीर "बला" के पहलू के साथ अटकी हुई थी, उसका लगर उसके साथ फस गया था।

आप समझते है न कि कैसी स्थिति थी! पोत पूरी तेज रफ्तार से चला जा रहा था और हम तीनो समुद्र मे थे। हम अपने ख्यालो मे खो गये थे, चालन चक्र हाथ से छोड दिया था, इसी वक्त पाल प्रतिकूल दिशा मे फूल गया और उसने पूरे कर्मीदल को नीचे फेक दिया।

इतना ही अच्छा था कि जजीर नकली होते हुए भी काम आयी, अन्यथा पोत हेरिग मछलियो को लेकर अकेला ही चला गया होता।

सो मैने स्थिति को फौरन समझा और अपना पूरा जोर लगाकर ऊची आवाज मे आदेश दिया –

"ऐसे ही कसकर थामे रहे!"

"थामे रहे!" सब्बल ने जवाब दिया।

"थामे रहे!" फुक्स ने दोहराया।

मै धीरे-धीरे, सब्बल के सहारे, फिर फुक्स के सहार आगे बढकर "बला" पर पहुच गया। सब्बल और उसके बाद फुक्स ने भी यही किया

डेक पर मैंने फिर ध्यान से जजीर को देखा और कल्पना कीजिये – मै तो दग रह गया! – उसका एक भी छल्ला दबाव से फैला नही था। मजबूत चीज बनाते है!

"इसे बहुत सम्भालकर रखना, फुक्स," मैंने कहा।

इसके बाद मैंने तन गर्माने के लिये जहाजियो को वोद्का का एक एक गिलास दिया, पहरे की ड्यूटिया लगायी, खुद डेक पर कुछ देर तक और खडा रहा, क्षितिज पर नजर डाली और पिछले दिनो की उदासीभरी घटनाए याद हो आयी।

"विदा अच्छे इगलैड पुराने इगलैड!" मैने कहा और मन ही मन सोचा, "वाह, सभ्यता!"

कुछ देर और खडा रहा, पाइप के कश खीचे और सोने के लिये नीचे चला गया।

सुबह उजाला होते ही सब्बल मुझे पहरे की ड्यूटी के लिये जगाने आया और उसने रिपोर्ट दी कि हमारा "बला" पोत अटलाटिक महासागर मे पहुच गया है।
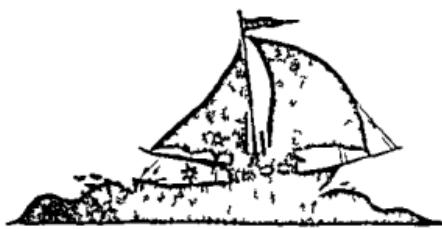
सातवा अध्याय

खगोलीय निर्देशो के उपायो, जगी चाल और "फेरोन" शब्द के दो अर्थो के बारे मे

अटलाटिक महासागर मे हमारे साथ एक बहुत ही मामूली-सी घटना हुई, जिसकी यहा चर्चा करने की विशेष आवश्यकता नही। किन्तु सचाई को बनाये रखने के लिये मैं उसे भी आपसे नही छिपाऊगा।

जाहिर है, आप यह जानते है कि दृश्यमान तटो से दूर, खुले सागर मे पोत-चालक प्रकाश-ग्रहो और क्रोनोमीटर (कालमापी) की मदद से अपना मार्ग निश्चित करते है। ये प्रकाश-ग्रह है – सूरज, चन्द्रमा, ग्रह और गतिहीन तारे। कहना चाहिये कि स्वय प्रकृति ने उन्हे हमे दिया है। लेकिन क्रोनोमीटर – यह दूसरी बात है। वह मानवजाति की अनेक पीढियो के कठोर श्रम का परिणाम है और जैसा कि उसका नाम ही जाहिर करता है, समय मापने के काम आता है।

समय को मापने का मामला बडा टेढा है। पश्चिम मे, मिसाल के तौर पर उसी ब्रिटेन के अकादमीशियनो मे अभी तक इस बात पर बहस चल रही है कि समय है भी या बिल्कुल नही है और केवल ऐसा लगता है कि वह है। अगर वह है ही नही, तो मापने को भी कुछ नही है और ऐसा करने की कोई जरूरत भी नही। लेकिन मेरे ख्याल मे यहा बात बिल्कुल साफ है – अगर ऐसी बहसो के लिये काफी समय है, तो इसका मतलब यह हुआ कि समय है और सो भी बहुत काफी। रही मापने की बात तो मैं सहमत हू कि यह काफी मुश्किल सवाल है। स्पष्ट है कि तत्काल ही इसमे उचित पूर्णता नही प्राप्त कर ली गयी।
पुराने वक्तो मे इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये बालू-घडी का उपयोग किया

जाता था। बाद मे बाटोवाली दीवाल-घडिया , अलार्म-घडिया और जेबी घडिया सामने आयी।

हमारे समय मे अलार्म-घडियो की मदद से समुद्र-यात्रा नही की जाती – ऐसा माना जाता है कि वे सही वक्त नही बताती, किन्तु और कुछ न होने पर अलार्म घडी भी काम दे सकती है।

मेरे हमनाम क्रिस्तोफोर कोलम्बस ने तो घडी के बिना ही समुद्री यात्रा की थी, फिर भी अमरीका खोज निकाला था।

हा, इस बात से मे सहमत हू कि जहाज या पोत पर बाटोवाली दीवाल-घडी का उपयोग करना सुविधाजनक नही है। आप तो जानते ही है कि बाटो के साथ लोहे के नाल, ईटे और इस्तरिया लटकानी पडती है। किन्तु यदि तूफान आ जाये, तो ? तब तो उसके पास तक फटकना सम्भव नही होगा। किन्तु अलार्म-घडी उसका क्यो उपयोग न किया जाये ?

किन्तु यदि अलार्म-घडी लेकर समुद्र-यात्रा नही की जाती – तो हो ही क्या सकता है। मैंने जब समुद्र-यात्रा की तयारी की, तो विशेष रूप से बहुत बढिया किस्म का क्रोनोमीटर हासिल किया।

उसे प्राप्त करके केबिन मे रख दिया। उसका इस्तेमाल करने की जरूरत नही पडी, क्योकि पोत तट के निकट ही बढता रहा था। किन्तु यहा तो चाहो या न चाहो, समय को जानना आवश्यक था। सो मैं अपने केबिन मे गया, क्रोनोमीटर निकाला और देखा कि उसमे अजीब परिवर्तन हो गया है। जैसा कि मैने कहा था अच्छा यन्त्र था और अब देखभाल तथा सावधानी के बिना पूरी तरह सनकी हो गया था। शैतान ही जाने कि वह क्या दिखाता था – सूर्योदय होता, किन्तु वह दोपहर इगित करता सूर्य दोपहर का सकेत करता, तो उसमे शाम के छ बजे होते मैंने उस पर उगलिया मारी, उसे झटका दिया और घुमाया – किन्तु वह ठीक नही हुआ।

मैंने देखा कि बडी अटपटी स्थिति है – हम बढते जा रहे है, किन्तु किधर – कुछ मालूम नही। तो उसे झटकता और घुमाता रहा, किन्तु बात कुछ बनी नही।

इसी समय बचाव का एक मार्ग अपने आप निकल आया और सो भी वहा से, जहा से मैंने इसकी बिल्कुल आशा नही की थी।

हम जब इगलैड मे थे, तो खाने-पीने की चीजो का बडा भण्डार जमा कर लिया था। हमने सुखायी हुई चीजे, बन्द डिब्बे और कुछ मुर्गिया-चूजे, आदि भी साथ ले लिये। सयोगवश यह भी बता दू कि हमारे पास ग्रीनविच के मुर्गो मुर्गियो की एक पेटी भी थी।

हा, स्पष्ट है कि हमने रास्ते मे उन्हे खा डाला और इस समय हमारी पेटी मे दो जवान मुर्गे, एक काला और एक सफेद ही बाकी रह गये थे।

तो मै दूरी मापने का यन्त्र हाथ मे लिये खडा था खगोलीय निरीक्षणो के उपायो के बारे मे सोच-विचार कर रहा था कि अचानक हमारे उन दोनो मुर्गो ने एकसाथ बाग दी –

"कुकडू-कू!"

मैंने उसी क्षण निरीक्षण किया और बात को आगे समझना तो कठिन नही था – अगर ग्रीनविच के मुर्गो ने बाग दी है, तो इसका अर्थ है कि ग्रीनविच मे पौ फट रही है, सूर्योदय हो रहा है। तो लीजिये बिल्कुल ठीक समय का पता चल गया। और ठीक समय ज्ञात होने पर स्थिति-निर्देश भी कठिन नही होता। जी!

किन्तु मैंने फिर भी इस चीज की जाच कर ली। रात्रि को दूरी मापने का यन्त्र लिये पुन बाहर आया और ग्रीनविच के अनुसार ठीक आधी रात को मेरे दोनो मुर्गो ने फिर से एकसाथ बाग दी –

"कुकडू-कू!"

सो मुर्गो के सहारे हम आगे भी अपनी यात्रा जारी रख सकते थे, किन्तु तभी मैंने एक अन्य उपाय भी खोज निकाला।

बहुत ही बढिया उपाय है वह! मै तो यह भी सोच रहा हू कि फुरसत के वक्त इसी विषय पर एक शोध-प्रबन्ध लिख डालू और इस प्रकार विज्ञान को समृद्ध करू।

सक्षेप मे मेरा उपाय यह है – आप घडी ले लेते है कैसी भी घडी, दीवाल-घडी, घण्टाघर की घडी, यहा तक कि खिलौना-घडी भी – सब समान है। बस, उसकी सुइया और डायल कायम होना चाहिये। यह बिल्कुल जरूरी नही कि सुइया चलती हो, इसके उलट, यह एकदम आवश्यक है कि वे चलती न हो। अच्छा है कि खडी रहे। अब मान लीजिये कि मेरे क्रोनोमीटर की तरह वे ठीक बारह बजे का समय दिखाती है। बहुत अच्छी बात है! स्पष्ट है कि दिन-रात के अधिकतर भाग मे ऐसे क्रोनोमीटर का उपयोग नही किया जायेगा और सच तो यह है कि इसकी जरूरत भी नही है, क्योकि यह फालतू शान दिखाने की बात होगी, जबकि दूसरी ओर, चौबीस घण्टो मे दो बार, अर्थात् मध्याह्न और अर्धरात्रि के समय हमारा यह क्रोनोमीटर बिल्कुल सही वक्त दिखायेगा। इस मामले मे सबसे बडी बात यह है कि इस क्रोनोमीटर को देखने का क्षण हाथ से नही जाने देना चाहिये और यह चीज निरीक्षक की व्यक्तिगत क्षमताओ पर निर्भर करती है।

सो इस तरह मैंने अपने क्रोनोमीटर को फिर से वश मे कर लिया और वह भी उचित समय पर।

हमारे पास खाने-पीने का सामान बहुत कम रह गया था, डिब्बाबन्द चीजे खाते-खाते तग आ गये थे और इसलिये अब यह निश्चित करने के बजाय कि हमारा पोत किस जगह पर है यह तय करने की जरूरत थी कि हमारे एक मुर्गे का गर्मागर्म मास तैयार किया जाये।

किन्तु इस सम्बन्ध म एक नयी परेशानी सामने आयी – यह प्रश्न पैदा हुआ कि किस मुर्गे से आरम्भ किया जाये। बात यह है कि बहुत ही अधिक मित्रता थी उन दोनो के बीच। काले मुर्गे को पकायेगे, तो सफेद उदास होगा और अगर सफेद को पकायेगे, तो काला उदास हो जायेगा

मैंने इस समस्या के समाधान पर विचार किया, बहुत गम्भीरता से सोचा विचारा, किन्तु किसी उचित परिणाम पर नही पहुच सका। सो मैंने सोचा – एक से दो दिमाग भले। इसलिये एक कमेटी बना दी, जिसमे मै और फुक्स शामिल थे।

इस प्रश्न पर सभी पक्षो से पुन विचार किया। किन्तु नतीजा कोई नही निकला। कोई रचनात्मक निर्णय नही कर पाये। कमेटी को बडा करना पडा। सब्बल को भी शामिल कर लिया। सो बैठक हुई। मैने मामले का सार प्रस्तुत किया, बैठक को प्रश्न के इतिहास से परिचित कराया और एक तरह से सारी स्थिति स्पष्ट की और ऐसा करना व्यर्थ नही गया। सब्बल ने इस विषय मे अप्रत्याशित ही दृष्टिकोण की ऐसी गम्भीरता और ऐसी समझ-बूझ का परिचय दिया कि, जैसा कि कहा जाता है, हर चीज अपनी-अपनी जगह पर साफ हो गयी।

उसने क्षण भर को भी नही सोचा, तनिक भी दुविधा मे पडे बिना फौरन ही कह दिया –

"काले को काटिये।"

"किन्तु सुनिये," हमने कहा, "सफेद उदास होगा!"

"भाड मे जाये, होता रहे उदास!" सब्बल ने हमारी बात काटी। "हमे क्या लेना-देना हे इससे?"

सो हमे सहमत होना पडा। हमने ऐसा ही किया। और आपसे सच कहता हू, सब्बल का निर्णय ठीक रहा। मुर्गा बहुत बढिया, चर्बीवाला और नर्म निकला – उसे खाते वक्त हम तो उगलिया ही चाटते रह गये। वैसे तो दूसरा भी कुछ बुरा नही था।

तो इस तरह हमने उतावली किये बिना और कुशलतापूर्वक ब्रिटनी को पीछा छोडा और बिस्केय की खाडी मे प्रवेश किया।

जैसा कि सर्वविदित है, बिस्केय की खाडी तूफानो के लिये मशहूर है और ऐसा सही तौर पर है।

आपसे छिपाऊगा नही, उसे लाघते हुए मेरे मन मे कुछ चिन्ता तो बनी रही, किन्तु उस बार भाग्य ने मेरा साथ दिया। पोत ऐसे निकल गया मानो दर्पण पर चल रहा हो और जिब्राल्टर मे प्रवेश करने तक आगे भी खैरियत रही। किन्तु जिब्राल्टर में एक घटना घट गयी। हम मजे-मजे बढे जा रहे थे, हेरिग मछलियो को हाकते जा रहे थे और मुग्ध होकर अगम्य पर्वतो के दृश्यो को देख रहे थे। जैसा कि होना चाहिये, अग्रेजो के दुर्ग की ओर से यह पूछा गया –

"कौन-सा जहाज है?"

मैंने उत्तर दिया –

"'बला' पोत, कप्तान गपोडशख।"

आगे बढा और भूमध्य सागर की देहरी पर ही यह किस्सा शुरू हुआ – सीटी-सी और बहुत जोर की आवाज सुनाई देने लगी। मैने देखा कि पाल मे आध मीटर बडा सुराख हो गया है, सभी ओर गोले बरस रहे है, पानी धमाके के साथ आकाश तक ऊचा उठ रहा है और दायी ओर से जगी जहाजो का बेडा सीधा हमारी तरफ बढा आ रहा है। मैं तुरन्त समझ गया – किसी अज्ञात जाति के डाकू है।

मैं देखता हू कि आप मुस्करा रहे है। किन्तु व्यर्थ ही ऐसा कर रहे है, मेरे युवा मित्र। आप समझते है कि समुद्री डाकू पुराने उपन्यासो की ही बात बनकर रह गये है? आप भूलते है, मेरे प्यारे। इस दुनिया मे डाकुओ की तो अब भी कुछ कमी नही है। लेकिन पुराने जमाने मे, दो सौ साल पहले डाकू जब अपने धधे पर निकलते थे, तो अपना झण्डा हवा मे ऊचा फहराते थे। हमारे समय मे उन्होने डाकुओ के अपने झण्डे तो सन्दूको मे छिपा दिये है और डाकुओ के हथकडे सभी सन्दूको से निकाल लिये है।

खैर, तो मैने देखा कि स्थिति बडी कठिन है – मोर्चा नही लिया जा सकता। अपने से कही अधिक शक्तिवाले शत्रु का सामना हो जाने पर सामुद्रिक रण-नीति युद्ध-क्षेत्र से हट जाने की सिफारिश करती है।

किन्तु कहा जाया जाये? हवा धीमी थी, पाल मे बडा सूराख था, पोत पूरी गति से नही चलता था

बस, एक ही रास्ता बाकी था – सैनिक चालाकी से काम लिया जाये।

"धूम्रपान करो, नाविको!" मैं प्रफुल्ल स्वर मे चिल्लाया और मैंने भी अपना पाइप निकाला।

मेरे नाविक धूम्रपान नही करते थे, किन्तु लडाई के ऐसे तनावपूर्ण वातावरण मे सब्बल और फुक्स मेरी बात की अवहेलना नहीं कर सकते थे। सो उन्होंने सिगरेटे लपेटी और धुआ उडाने लगे।

मैने भी अपना पाइप सुलगा लिया और तीन मिनट भी नही बीते थे कि धुए के घने पर्दे ने हमे शत्रु की नजर से ओझल कर दिया।

आप मानेगे – बढिया तरकीब सूझी थी न! किन्तु बात यही पर खत्म नही हो गयी।

भैया, यह तो आरम्भ ही था।

हम धुए के पर्दे म छिप गये थे – यह अच्छी बात थी। किन्तु हमारे इस पर्दे को तो हवा उडा ही देगी। तब क्या होगा? इसलिये मैंने सोचा और निर्णय कर लिया।

"पाल नीचे कर दिये जाये, नाविक-दल केबिन मे छिप जाये!" मैंने आदेश दिया।

सब्बल और फुक्स केबिन मे घुस गये, सभी दरवाजो को कसकर बन्द कर दिया, जल्दी-जल्दी और किसी तरह से सेधे बन्द की, मेने सभी भारी भारी चीज इकट्ठी की, उन्हे बाधा ओर चर्खी के सहारे उस बडी पोटली को मस्तूल के सिरे पर पहुचा दिया। स्पष्ट ह कि बोझ का केन्द्र-बिन्दु ऊपर की ओर हो गया, बोझ का पल्ला अधिक भारी था, पोत की स्थिति मे स्थिरता न रही, बाये पहलू झुक गया और 'बला" का तल ऊपर को हो गया।

स्पष्ट है कि मे पानी मे जा गिरा, किन्तु उसी क्षण बाहर निकला, पृष्ठ भाग मे लेटकर प्रतीक्षा करने लगा। इसी समय हमारा धुए का पर्दा हट गया और डाकुओ के जहाजो का पूरा बेडा दो सा से कुछ अधिक मीटर के फासले पर साफ दिखाई दिया।

तो, कहना चाहिये, लडाई का निर्णायक क्षण आ गया। सो मैंने सोचा – पौ बारह या तीन काने। अपना पाइप पोत के पेंदे के ऊपर निकाल दिया ओर खुद एक आख से देखने लगा। सो मैने देखा कि सबसे आगेवाले जहाज की हमारी ओर दृष्टि गयी और झडियो के सकेतो से उसने यह सन्देश दिया –

"हमारी तोपो की सधी गोलाबारी से शत्रु नष्ट हो गया है। पहले की स्थिति मे पीछे हटने का आदेश देता हू। कारण कि बेडे के कार्य-क्षेत्र मे नवीनतम बनावट की पनडुब्बियो का दस्ता दिखाई दिया है। एडमिरल दोन मक्कारो।"

सकेत को समझते ही डाकुओ के जहाज ऐसे इधर-उधर बिखर गये, जैसे चील को देखते ही चूजे बिखर जाते है। वैसे तो यह समझ मे आनेवाली बात है – ऐसी अस्वाभाविक स्थिति मे भी "बला" बहुत रोबीला दिख रहा था।

तब मैंने डुबकी लगायी, बोझ को मस्तूल से अलग किया और पोत फिर से सामान्य स्थिति मे आ गया। सब्बल और फुक्स बाहर आये। उन्होने पूछा –

रेखांश अक्षांश

घटनाएं

उल्लेखनीय बातें

वक़्ती

तौर पर 'बल' को पनडुब्बी में बदल दिया गया
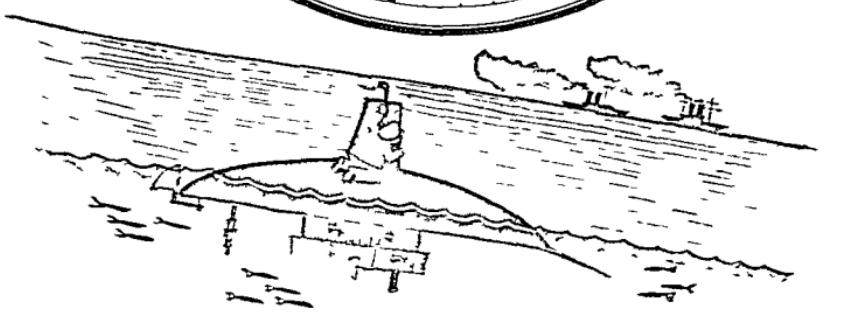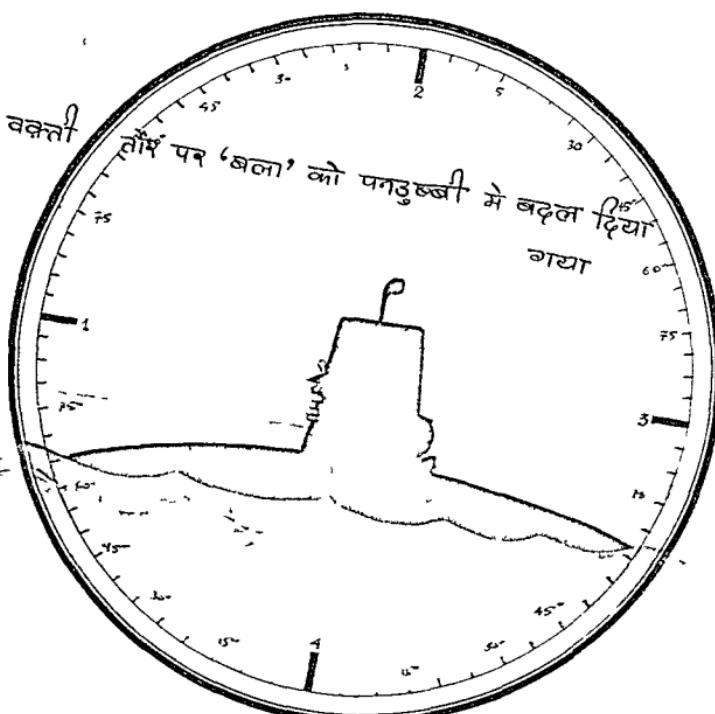
"तो कैसा हाल रहा?"

"अपनी आखो से देख लो,' मैंने जवाब दिया।

वैसे अब देखने को कुछ रहा भी नही था – क्षितिज पर केवल धुआ था। मैंने दूरबीन मे से उन पर नजर डाली और कपडे बदलने चला गया।

इसके बाद हमने पाल ठीक किये, पोत पर व्यवस्था और सफाई की और हेरिग मछलियो की तरफ ध्यान दिया। ठीक वक्त पर ही हमने ऐसा किया। जब तक यहा गोलाबारी होती रही, शोर-शराबा रहा, कुछ मछलियो ने अनुचित चचलता दिखायी वे झुण्ड मे अलग होकर अज्ञात दिशा मे चली गयी। दूसरी ओर, हमारी विवशतापूर्ण निष्क्रियता का लाभ उठाकर भिन्न-भिन्न किस्मो की इतनी अधिक परायी मछलिया हमारे हेरिग के झुण्ड मे आ मिली कि मैं शुरू मे तो परेशान ही हो उठा – ऐसे तो आदमी को बदनाम होते भी देर नही लगती। आप ही बताये कि दूसरी बार कौन मुझे अपने पोत पर ले जाने को माल देगा, अगर मैंने ली हो पहले दर्जे की हॉलैडी हेरिग मछलिया और मैं उनकी जगह तीसरे दर्जे की घटिया पचमेली मछलिया दू! ठीक है न। सो मैंने एक-दो घण्टे कोडा चलाया, हाथो को कष्ट दिया, किन्तु इन बिन बुलाये मेहमानो को मार भगाया, मुझे सौपे गये झुण्ड मे कुछ व्यवस्था की और "बला" को सीधे मिस्र के नियत बन्दरगाह की ओर ले चला। तो यह बात है।

सो हम चल दिये।

इस बार किसी घटना के बिना ठीक दो दिन बाद हम सकुशल अलेक्जेड्रिया मे पहुच गये, लगर डाल दिया, व्यापारी दलाल को बुलवा भेजा और खुद फिलहाल डक पर बैठ गये।

हम आराम कर रहे थे, इधर-उधर देखते थे और अपने मन पर पडी छापो का आदान-प्रदान कर रहे थे।

वैसे, आपसे यह कहना चाहता हू कि उस समय आदान-प्रदान के लिये कुछ था भी नही।

अब दूसरी बात है। अब मिस्र देश जैसा देश है और लोग लोगो जैसे है – अपनी धरती पर अपने पैरो पर खडे है। प्राचीन काल मे भी मिस्र प्रसिद्ध था और अलेक्जेड्रिया की सारी दुनिया मे ख्याति थी। किन्तु उस बार तो यह बन्दरगाह जिज्ञासु यात्री के लिये बिल्कुल कोई दिलचस्पी नही पेश करता था। केवल बाते ही बाते थी कि मिस्र फेरोनो का देश है, इत्यादि। किन्तु वहा देखने को कुछ भी नही था। बन्दरगाह जैसा बन्दरगाह – बडे पैमाने पर व्यापार, कपास का निर्यात

और तट के करीब छब्बीस फुट गहरा पानी। यह सच है कि झण्डा तब भी मिस्र का था, किन्तु व्यवस्था अंग्रेजी थी, जहाज भी अंग्रेजो के थे और पुलिसवाले भी अंग्रेज। केवल यही अन्तर था कि भिखारी फ्राककोट नही पहने हुए थे। फ्राककोटो का सवाल ही क्या पैदा हो सकता था! मेहनतकश भी, जैसे कि हलवाहा, मछुआ, यहा तक कि कर्मचारी भी नगे पाव घूमते थे, या फिर, क्षमा चाहता हू, लगभग नगे ही।

सच मानिये। आखिर दलाल आया। उसने माल के कागज-पत्रो की जाच की, हमारे पोत को बन्दरगाह मे एक जगह पर ले जाकर माल लेने लगा। जैसा कि होना चाहिये, मैंने गिनकर हेरिग मछलिया दे दी और जब कुल जोड किया, तो मेरा दिल बैठ गया। आप विश्वास करेंगे कि हेरिग मछलियो का लगभग आधा झुण्ड रास्ते मे ही खो गया था!

वे सयोगवश झुण्ड से अलग हो गयी, पिछड गयी या जान-बूझकर भाग गयी – यह मैं कुछ नही कह सकता। किन्तु तथ्य हमारे सामने था – आधा झुण्ड गायब था! ओह, मैंने देखा कि मामला चौपट है।

निश्चय ही मै उससे बहस कर सकता था, अपनी सफाई दे सकता था, उन परिस्थितियो को दोष दे सकता था, जिनका पहले से अनुमान लगाना सम्भव नही था, किन्तु ये सब तो बचकाना बाते होती, इन पर कौन विश्वास करता। सक्षेप मे, मै अत्यधिक दुखी, बहुत परेशान हो उठा, किन्तु उसी समय मेरे दिमाग मे एक विचार कौधा।

"कृपया यह बताइये," मैंने कहा, "दुनिया-जहान मे कही ऐसा भी होता है कि हेरिग मछलियो जैसा माल गिनती के हिसाब से लिया जाये? इन्हे तौल लीजिये और फिर शिकवा-शिकायत कीजिये।"

सो दलाल समझ गया कि कोई बुद्धू पछी नही फसा है, उसने माल को तौला और विश्वास कीजिये कि पहले से कही अधिक वजन निकला! शायद आपको यह बात सुनकर हैरानी हो रही है। लेकिन अगर हम मामले की तह मे जाये, तो आश्चर्य की कोई बात ही नही दिखाई देगी। मै तो पहले से ही यह जानता था कि ऐसा होगा और बडी आसानी से आपको इसका कारण स्पष्ट कर सकता हू। तनिक सोचिये, मामले पर विचार कीजिये और आप समझ जायेगे कि इसके अतिरिक्त दूसरा कुछ हो ही नही सकता था – चैन की यात्रा, बढिया खुराक, जलवायु का परिवर्तन, समुद्र-स्नान यह सभी कुछ शरीर पर स्वास्थ्यप्रद प्रभाव डालता है। बात स्पष्ट है कि हेरिग मछलिया तगडी और मोटी हो गयी, उन पर चर्बी चढ गयी।

इस तरह मेरा तजरबा बहुत ही सफल रहा। हिसाब-किताब निपटाने के बाद मैंने आराम करने तट पर हवा खाने और वहा के दर्शनीय स्थान देखने का निर्णय किया।

हम देश के भीतरी भाग म, मरुस्थल की ओर चल दिये। वहा रेगिस्तान मे ट्रालीबसे जाती है किन्तु ट्रालीबसो मे जाना दिलचस्प नही। इसलिए हमने परिवहन के स्थानीय साधनो का उपयोग करने का निर्णय किया। मैं दो कूबडोवाले ऊट पर सवार हुआ सब्बल एक कूबडवाले ऊट पर और फुक्स गधे पर। अच्छी रग-रगीली टोली बन गयी।

सो ऐसे कारवा के रूप मे ही हम काहिरा पहुचे। काहिरा – अजी, वहा की बिल्कुल दूसरी बात है! वहा तो उस समय भी असली मिस्र था और चप्पा चप्पा जमीन से अत्यधिक प्राचीनता की गन्ध आती थी। ऐसा तो स्वाभाविक ही है! वहा सहारा रेगिस्तान भी है अरब के बद्दू खानाबदोश भी ह ओर खजूर के पेड भी। मुख्य चीज तो है – फेरोनो की समाधिया स्फिक्स (नर के सिर ओर शेरनी के धडवाले कल्पित जीव की मूर्त्तिया) और बहुत ही पुराने जमाने के दूसरे स्मारक भी। हम सबसे पहले तो पिरामिड देखने गये। जितने जरूरी थे, उतने पैसे देकर भीतर जाने के टिकट ले लिये, जानवरो की पिछली टागे बाध दी और चल दिये।

हम भूमिगत गलियारे मे से जा रहे थे। वहा पाच हजार सालो को मानो किसी ने छुआ ही नही है। बहुत ही अच्छा वातावरण है – बेहद सफाई, बिजली की रोशनी, हर चौक मे बूट पालिश करनेवाला और हर कोने मे आइसक्रीम की छोटी-सी दुकान कुल मिलाकर यह कि दिवगत लोग कुछ बुरा जीवन नही बिताते थे।

सो जनाब हमने चित्र-लिपि पढी, सोने के ताबूत और सुरक्षित शव (ममी) पर नजर डाली और वापस चल दिये। बाहर आकर देखा – फुक्स गायब था। प्रतीक्षा करते रहे, करते रहे – फुक्स नही आया। हम ढूढने के लिये जाने को तैयार हुए कि उसे अपनी ओर भागा आते देखा। वह अपना जबडा थामे था। मैंने ध्यान से देखा – उसका सारा गाल सूजा हुआ था।

"किसने ऐसी हरकत की हे, फुक्स?" मैने पूछा।

"मैने वहा यादगार के लिये सोने के ताबूत का एक टुकडा तोड लिया था। तभी फेरोन ने कसकर तमाचा जड दिया!" फुक्स कुनमुनाने लगा।

"आप क्या पागल हो गये ह, फुक्स!" मैने कहा। "वह तो, वह फेरोन तो मुर्दा है।"

"मुर्दा कैसे है! बिल्कुल जिन्दा है। सो भी एक नही, इन फेरोनो* की तो पूरी पलटन वहा ह।"

"कौन-से फेरोनो, मिस्र के फेरोनो की?"

"मिस्र के फेरोनो की क्यो? अग्रेज फेरोनो की। वह देखिये, चले आ रहे हे।"

इस समय मुझे पुलिसवालो का एक दस्ता दिखाई दिया ओर म समझ गया कि फुक्स की बात सही हैं। वास्तव मे ही असली फेरोन थे वे – शिरस्त्राण पहने और लाठिया लिये हुए

---

* बोलचाल की रूसी भाषा मे "फेरोन" शब्द का दूसरा अर्थ पुलिसवाला भी हे। – अनु०

आठवा अध्याय,

जिसमे फुक्स का उचित प्रतिरोध होता है, उसके बाद यह मगरमच्छो की गिनती करता है और अन्त मे कृषि-क्षेत्र मे असाधारण योग्यता दिखाता है

पोत पर लौटकर मैंने फुक्स को डाटा-डपटा –

फिर कभी ऐसा नही होना चाहिये – 'यादगार के लिये', ऐसा कभी नही दोहराया जाना चाहिये। समझ गये ?"

फुक्स ने पश्चाताप किया, वचन दिया कि आगे को अधिक सावधानी बरतेगा। उसके गाल पर तमाचे का निशान मिट गया था और हम नील नदी मुख की ओर बढ चले।

हमारा पोत चला जा रहा था। वहा की बात ही निराली थी – अफ्रीका अपने सर्वश्रेष्ठ रूप मे हमारे सामने था। जिधर नजर डालो, उधर ही कमल, पपीरस जल-पौधे दिखाई देते थे, तटो पर भीरु हिरन घूम रहे थे, कभी कभी बबर भी दिखाई देते थे, दरियाई घोडे पानी मे फूत्कार कर रहे थे और निकट ही कछुए धूप सेक रहे थे। बिल्कुल चिडियाघर जैसा दृश्य था।

सब्बल और फुक्स बच्चो की तरह अपना मन बहला रहे थे, मगरमच्छो को डडे दिखाकर चिढाते थे, किन्तु मैं पूरी तरह धीर-गम्भीर मुद्रा बनाये था, पोत को आगे बढा रहा था, इधर-उधर रास्ता बनाता था और तट पर कोई अच्छा-सा गाव खोज रहा था।

मेरे नौजवान दोस्त, जैसा कि आप समझते है, मैने केवल जिज्ञासा के कारण नील नदी मे यात्रा करने का निर्णय नही किया था। मेरी प्रारम्भिक यात्रा-योजना थी – अटलाटिक, पनामा, शान्त महासागर

हेरिंग मछलियों के कारण मुझे अपनी यह योजना बदलनी पडी, एक ओर को कुछ हटना पडा और अब हिन्द महासागर मे से हमे कठिन मार्ग-परिवर्तन करना था।

जैसा कि आप जानते है, महासागर मे न तो दुकाने होती हे, न स्टाल। खाने-पीने की चीजो के भण्डार चुक जायेगे, तो भूखो मरना होगा इसलिये दूरदर्शी और मितव्ययी व्यक्ति होने के नाते मैने यह निश्चय किया कि इस कठिन यात्रा के पहले मै अपने अभियान दल के लिये अच्छी तरह ओर सस्ते दामो पर खाने-पीने का सामान जुटा लू। सो यह बात है।

आखिर छोटा-सा गाव दिखाई दिया। साफ-सुथरा-सा और लोग भी मिलनसार। तट पर पहुचा, लगर डाला आर पूरे दल के साथ बाजार की ओर चल दिया।

स्थानीय लोगो ने हमे हाथो हाथ लिया। कीमते भी बहुत ऊची नही थी ओर इस तरह हमने बहुत-सा सामान खरीद लिया – हाथियो के नमकीन बनाये हुए दो सूड, शुतुरमुर्ग के अडो की एक पेटी, खजूर, साबूदाना, दालचीनी, लौग ओर दूसरे मसाले। ये सभी चीजे पोत पर लाद ली, मैने रवानगी की झण्डी ऊपर उठायी, चलने को तैयार हुआ कि उसी वक्त सब्बल ने रिपोर्ट दी – फुक्स फिर लापता है। राह देखी – फुक्स नही लौटा।

मैने उसके बिना ही चल देना चाहा किन्तु बाद मे अपना विचार बदल लिया, मुझे उस पर दया आ गयी। अच्छा नौजवान था। यह सच है कि उसे चोरी-चकारी की कुछ आदत थी, पर साथ ही बडा मेहनती और दयालु भी था। वहा मिस्र मे लोग विश्वास करनेवाले थे, पग-पग पर प्रलोभन थे ओर फुक्स पर कडी नजर रखनेवाला कोई नही था। सो वह कुमार्ग पर चल सकता था, किसी मुसीबत मे फस सकता था और काले पानी पहुच सकता था थोडे मे यही कि मैं उसकी रक्षा को चल दिया। चला जा रहा था कि अचानक गाव के छोर पर लोगो की भीड दिखाई दी, जहा से ठहाके ओर शोर-गुल सुनाई दे रहा था। मुझे दिलचस्पी हुई, सब्बल को आवाज दी, चाल तेज की, भागकर निकट गया और देखा – मेरा फुक्स बडी दयनीय स्थिति मे हे। वह गुडी-मुडी हुआ पडा था, बालू मे उसने अपना सिर घुसेड रखा था और उसे टोपी से ढक रखा था। उसके ऊपर शुतुरमुर्ग था। वह उसे चोचे मारता था और फुटबाल की तरह पजो से रौदता था। फुक्स मे कोई दिलचस्पी न रखनेवाले दर्शक सभी ओर खडे तमाशा देख रहे थे, सरकस की तरह तालिया बजाते थे, शुतुरमुर्ग को बढावा देते थे, ठहाके लगाते और शोर मचाते थे

सो मै शुतुरमुर्ग पर चिल्लाया। वह डरकर वही बैठ गया और उसने भी अपना सिर बालू मे धसा लिया। वे ऐसे ही एक-दूसरे के पास बैठे हुए थे।

तब मने फुक्स को गर्दन से पकडकर ऊपर उठाया, झझोडा, सीधा खडा किया और कडाई से ऐसी अटपटी स्थिति का कारण पूछा। ओर जानते हे, क्या कारण पता चला? मेरी नसीहत का उस पर कोई असर नही हुआ था और उसने फिर से एक मूर्खता कर डाली थी। देखा कि शुतुरमुर्ग आजादी से घूम रहा हे और बस, फुक्स अपने को बस मे न रख सका – दबे पाव उसके पास पहुचा, "यादगार के लिये" उसकी पूछ से एक पख नोच लिया शुतुरमुर्ग डरपोक पक्षी होने के बावजूद इस बार गुस्से मे आ गया।

फुक्स ने मुझे वह पख भी दिखाया। मेरा मन हुआ कि उसे शुतुरमुर्ग को लोटा दू, किन्तु वहा रुकना नही चाहा। फिर सबसे बडी बात तो यह थी – मने सोचा – शुतुरमुर्ग का नया पख उग आयेगा ओर फिर उसने खुद ही बदला भी ले लिया है – पतलून का एक बडा टुकडा काट लिया था। बस, हिसाब बराबर था।

सो हमने इस घटना पर सोच-विचार किया, स्पष्ट हे कि हसे, स्थानीय लोगो से विदा ली, पोत पर लोटे, पाल ऊपर उठाये और वापिस, नील नदी के निचले भाग की ओर चल दिये। उतावली के विना मजे-मजे बढते रहे, सागर मे निकल आये और तट के साथ-साथ पूरब की ओर चल दिये। अब हमे स्वेज नहर से होते हुए लाल सागर की तरफ जाना था।

स्वेज नहर मे हमने सुबह के समय प्रवेश किया। वहा वेसे तो पथ प्रदर्शक जहाजो का निदेशन करते हे। किन्तु मै ठहरा अनुभवी व्यक्ति। कोई पहली बार तो मैं स्वेज नहर मे जा नही रहा था, म तो वहा की हर चीज जानता हू। इसलिये मैंने व्यर्थ पेसे खर्च करना उचित नही समझा ओर पथ-प्रदर्शक के विना ही पोत बढा दिया। तो हम चले जा रहे थे। फुक्स पोत के अगले सिरे पर था, सामने देख रहा था, मैने चालन-चक्र सम्भाल रखा था और सब्बल रसोईघर म नाश्ता बना रहा था। खाना पकाने के मामले मे तो उसका कोई जवाब नही था। कभी कभी ऐसी स्वादिष्ट चीज पकाता था कि खूब पेट भरा होने पर भी आदमी खाने की मेज पर जा बैठता था, कुछ खा ही लेता था। उस दिन भी ऐसी ही बात थी। सब्बल ने सुबह से ही पेशबन्द बाधा, आस्तीनो को ऊपर चढाया और रसोईघर मे अगीठी जला ली मैंने वहा झाककर देखा – भीतर जाने की हिम्मत नही हुई। वहा तो यो ही बहुत गर्मी थी, फिर उसका रसोईघर तो लुहारखाने की तरह तप रहा था – पूरा जहन्नुम बना हुआ था। आग की लपट निकाल रही थी, पतीलो म कुछ उबल रहा था, भुने हुए मास मे गुलाबी रगत आ रही थी और मुख्य चीज तो थी – सुगन्ध। बघार, चटनी – इन्हे तैयार करने मे तो उसे कमाल हासिल था। स्वेज नहर पर गर्मी

मुगन्ध छा गयी कि सभी ओर से जानवर जमा हो गये। खा नही सकेगे, तो कम से कम सूघ तो ले। वे तट पर खडे थे, हमारी ओर देखते थे आर होठ चाट रहे थे। सच कहू आपसे, खूब बढिया बात बन रही थी! हम एक पथ, दो काजवाली कहावत चरितार्थ कर रहे थे – एक तो अपनी दिशा मे बढते जा रहे थे ओर दूसरे, बहुत ही निकट से स्थानीय जीव-जन्तुओ का अध्ययन कर रहे थे। जीव-जन्तुओ के मामले मे वह जगह बडी लाजवाब है! अरब क्षेत्र की ओर मे वहा शेर ओर जगली मूअर आ गये थे और अफ्रीका की ओर से बबर, हाथी ओर गेडे। रेगिस्तान से जिराफ भी आ गया था, उसने गन्ध ली और मुग्ध होकर हमारे पोत को देखने लगा। मे नही जानता कि उसके दिमाग मे क्या विचार आये, किन्तु सभी बातो को ध्यान मे रखते हुए तो यही समझना चाहिये कि उसने हमारे पोत को चलती-फिरती कन्टीन समझ लिया था। नेन की तरह उसने अपनी गर्दन झुका ली थी, हमारे पीछे-पीछे तट पर चलता जा रहा था, मुह से राल गिरा रहा था।

इसी वक्त सब्बल ने बढिया नाश्ता बनाना खत्म किया, तीन लोगो के लिये मेज लगा दी। सब कुछ ढग से किया गया था – तश्तरिया ओर काटे रखे सफेद मेजपोश बिछाया और रकाबी हाथ मे लिये हुए रसोईघर से बाहर निकला। कल्पना कीजिये कि जुगाली करनेवाले इस जानवर ने बडी दिलचस्पी ली, अपनी थूथनी सीधी रकाबी मे डालने लगा। सब्बल उस पर चीख रहा था उसे डाटता-डपटता था, किन्तु जिराफ तो ठहरा असभ्य जानवर, समझाने-बुझाने का उस पर कोई प्रभाव नही पडता, रकाबी की ओर ऐसे बढ रहा था मानो कोई बात ही न हो, दात दिखाता हुआ होठ चाट रहा था। हमारे लिये कुछ भी करना सम्भव नही था, एक ओर हटने को जगह नही थी, नहर तग है तट पर पोत को बढाना सम्भव नही था। बल-प्रयोग करने के लिये जरूरी था कि चालन-चक्र को छोडा जाय, किन्तु यहा बहुत जिम्मेदारी की जगह थी – खतरे का मामला था। फुक्स तो जीव जन्तुओ के अध्ययन मे खो गया था, ओर न तो कुछ देखता ओर न सुनता था ओर सब्बल के हाथ व्यस्त थे बचाव का एक ही रास्ता था – सब्बल वापस जाये।

"सब्बल, वापस जाइये, मने आदेश दिया।

"वापस जा रहा हू!" सब्बल ने जवाब दिया ओर पीछे हटता हुआ सीढी से केबिन की ओर नीचे उतरने लगा।

आप तो जानते ही है कि जिराफ की कितनी लम्बी गर्दन होती है! अब उसने उसे और भी फैला लिया और सब्बल के पीछे-पीछे केबिन मे उसे घुसेडता गया।

सब्बल एकदम कोने में पहुंच गया, मगर जिराफ भी पीछे नहीं रहा और मैंने सब्बल को यह रिपोर्ट देते सुना –

मुझ तक पहुंच गया!

मैं समझ गया कि मामला चौपट है, नाश्ते के बिना ही रह जायेंगे। सो मैंने खतरा मोल लिया – क्षण भर को चालन-चक्र छोड़ा, फटाक से दरवाजा बन्द किया और जिराफ की गर्दन पर चुटकी काटी। सच मानिये, समझाने बुझाने की तुलना में इस चीज का उस पर कहीं ज्यादा असर हुआ – जिराफ चारों पांव जमाकर खड़ा हो गया, उसने केबिन में से गर्दन बाहर निकाली और सीधा तन गया। किन्तु शायद जानवर बुरा मान गया था – उसने इधर-उधर नजर घुमायी, हिनहिनाया और वायु-दिशासूचक को निगल गया।

किन्तु यह कोई बड़ी हानि नही थी – वायु दिशासूचक तो मेरे पास कुछ और भी थे और फिर नाश्ते को तो हमने किसी तरह बचा ही लिया था। और यदि सोचा जाये तो जिराफ के लिये भी बहुत बुरा मानने की कोई बात नही था। यह सही है कि हमने अनचाहे मेहमान की तरह गर्दन पकड़कर उसे बाहर निकाल दिया था, फिर भी वह भूखा तो नही गया था। रेगिस्तान में भूखे होने पर वे तो पत्थर तक निगल जाते है और वायु-दिशासूचक तो, कहना चाहिये, उसके लिये एक तरह से बढिया भोजन था।

सो यह बात है। हमने इस शिक्षाप्रद घटना पर विचार किया, बडी उमग से नाश्ता किया और आगे चल दिये।

रात के समय हम स्वेज नहर से होते हुए चल रहे थे, वहा हवा बन्द हो गयी और हम लगभग दो दिन और दो राते वही खडे रहे। सो भी ठीक ही रहा। हमने आराम कर लिया, पाल, मस्तूल और रस्से ठीक कर लिये तथा पोत पर अच्छी तरह सफाई कर ली। सुबह को हवा चल पडी। हमने पाल ऊपर उठा दिये और लाल सागर मे निकल गये।

शुरू मे तो पीछे से चलनेवाली दायी ओर की हवा के सहारे इतमीनान से आगे बढते रहे, किन्तु बाद को हवा तेज होने लगी और उसने हमे खूब झझोडा। सहारा रेगिस्तान से धूलभरी आधी आ गयी। हमाम जैसी गर्मी, भयानक उमस और हल्की लहरिया। फुक्स यह सब सहन नही कर पाया और उसे समुद्र-रोग ने धर दबाया। आरम्भ मे तो वह जी कडा किये रहा, यह प्रकट नही होने दिया और बाद को एकदम ही हिम्मत हार गया। वह तो रेगकर पलग तक भी नही जा पाया, डेक पर, खाने-पीने की चीजो की पेटी पर ही लेट गया, कराहने और शुतुरमुर्ग के पख से अपने को पखा झलने लगा। नौजवान पर तरस आ रहा था,

फुक्स घडी की तरह बिल्कुल ठीक-ठीक गिनती करता जा रहा था –
"पैंतालीस मगरमच्छ पचास मगरमच्छ "

हा, अब तो सचमुच घबराने की कोई बात थी। किन्तु मैंने अपना जी कडा किया उठकर खडा हुआ दियासलाई जलायी और आप विश्वास करे – देखा कि वास्तव मे ही डेक मगरमच्छो से भरा हुआ था। मगरमच्छो के बच्चे छोटे छो थे अभी-अभी जन्मे थे और वैसे तो खतरनाक नही थे, फिर भी आप जानते है कि वे अप्रिय जीव है। उनके मामले में मैंने किसी तरह का लिहाज, कोई सज्जनत नही दिखायी झाडू लिया और उन्हे उठा-उठाकर पानी मे फेकने लगा।

डेक जब कुछ साफ हो गया, तो मैंने जानना चाहा कि यह धावा कहा से हुआ है। देखा कि वे पेटी की दरार मे से रेगकर बाहर आ रहे है। तब सारी बात मेरी समझ में आ गयी – उस गाव में भूल से या जान-बूझकर हमे शुतुरमुर्ग के अडो की जगह मगरमच्छों के अडो से भरी पेटी दे दी गयी थी। यहा बेहद गर्मी थी, फिर फुक्स पेटी पर लेट गया था उससे उन्ह और भी गर्मी मिली और वे बाहर निकलने लगे।

इस असाधारण स्थिति का कारण जान लेने पर मैने उसके परिणामो से भी बडी आसानी से निजात पा ली। मैंने तो पेटी को खोला तक नही। पेटी के दरारवाले तख्ते को पोत के पहलू से आगे कर दिया, अर्थात् एक तरह का पुल बना दिया और हमारे अदन पहुचने तक वे एक के बाद एक मानो कन्वेयर से बाहर निकल रहे। बाद म, अदन पहुचकर हमने पेटी खोली, तो देखा कि अडो के सिर्फ खोल ही बाकी रह गये थे तो यह बात है, मेरे दोस्त।

मगरमच्छो से मुक्ति पाकर ओर पोत पर थोडी व्यवस्था करने के बाद मैं कुछ शान्त हो गया। किन्तु बहुत देर के लिये नही – भाग्य ने मेरी नयी परीक्षा लेने की तैयारी कर रखी थी।

हम एरीटिया के तटो के साथ-साथ जा रहे थे। सब्बल केबिन मे सो रहा था और फुक्स डेक पर। आधी थक गयी थी, हर चीज शान्ति की ओर सकेत कर रही थी। सहसा पो फटने के समय हृदयविदारक चीत्कार सुनाई दिया।

'सभी ऊपर आ जाये! समुद्र मे कोई व्यक्ति है!" मैं चिल्लाया।

जहाजियो ने तत्काल आवश्यक उपाय किये – मनुष्य की प्राण-रक्षा के सभी साधन – चक्र, गुब्बारे और रस्से सागर मे फेक दिये गये दुर्भाग्य का शिकार होनेवाला व्यक्ति डेक पर आ गया।

देखा कि पानी से पूरी तरह तर एक नान-कमीशड अफसर है। देखने मे तो

मारा प्रभावपूर्ण नही था किन्तु उसने अपने कपडे निचोडे, खामा और फौजी सला
देते हुए कहा –

"इतालवी सेना का सार्जेंट उठाईगीरो आपकी सेवा के लिये उपस्थित

'कैसी सेवाए हो सकती है यहा!" मैंने कहा। "मेरे मित्र, यही अच्छा
हुआ कि आपकी जान बच गयी यह बताइये कि आप यहा समुद्र मे कैसे गिर
और अब आप मुझसे क्या आशा करते हैं?'

'मैं नशे की हालत मे यहा घूम रहा था, हवा के तेज झोके ने मुझे
मे गिरा दिया। कप्तान महोदय आपसे प्रार्थना करता हू कि इटली के तट पर मु
किसी भी जगह उतार दें।'

"अरे भैया," मैंने कहा, 'बहुत ही दूर आ गये आप तो! इटली तो दे
वहा, बहुत दूर है

"इटली हर जगह है, सार्जेंट ने मुझे टोका। "इटली यहा भी है," उस
दाये इशारा किया, "इटली यहा भी है, उसने बाये सकेत किया, "इटली
वह सारी दुनिया है–इटली!'

मैंने उससे वाद-विवाद करना उचित नही समझा। सोचा–"नशा तो अभी
उसका पूरी तरह से उतरा नही है, शराब पिये हुए आदमी से बात ही क्या की जा

फिर भी इस बात को ध्यान मे रखना पडा कि उन सालो मे इसी तरह
के पट्ठे इटली की जनता पर हावी हो गये थे और सारी दुनिया को अपने अधिकार
करना चाहते थे। उन्हे कुछ सफलता भी मिल गयी थी–एबीसीनिया, सोमाली
एरीट्रिया मे इतालवी जूते को सबसे ज्यादा जोरदार माना जाता था। इन उठाईगीरे
और लुटेरो को तब यह मालूम नही था कि उनका सबसे बडा लुटेरा अपने जूते
को इतना ऊचा उठायेगा कि आखिर उसे उसी तरह फासी के तख्ते पर उलटा लट
दिया जायेगा।

किन्तु उन दिनो तो वह शान से गर्दन अकडाये घूमता था और पराये देशो
की धरती को रौदता था।

कुल मिलाकर यह कि मैंने कोई आपत्ति नही की। सोचा–"ऐसे अतिथि से
जितनी जल्दी जान छुडा ली जाये, उतना ही अच्छा है।"

"अच्छी बात है," मैंने कहा, "इटली तो इटली सही। अधिक ठीक तरह
बताइये कि कहा? यहा या वहा?"

"वहा," वह बोला, "वहा, उन चट्टानो के पास उतारने का आपसे अनुरोध
करता हू।"

मै किसी भी तरह का सन्देह किये बिना पोत को चट्टानी तट के पास ले गया और मेने उसे उतरने का तख्ता दिया। सार्जेट ने फिर से मुझे फौजी सलामी दी –

"धन्यवाद, कप्तान महोदय। अव पोत से उतरने की भी कृपा करे।"

"बस, काफी है, भैया, मेरे पास समय नही है और ऐसा करने की कोई आवश्यकता भी नही है। आप जाइये "

"तो यह बात है?" उसने कहा, सीटी निकालकर वजायी और अचानक चट्टानो के पीछे से गलकटियो की पूरी कम्पनी ही सामने आ गयी। "खट-खट!" – देखा कि मेरे पूरे नाविक-दल और खुद मुझे भी हथकडिया पडी हुई है।

उन्होने हमे पकड लिया और एक बहुत ही कटी-फटी जगह पर ले गये। सभी ओर पर्वत थे, चट्टाने थीं और बजर भूमि थी शिविर मे ले जाकर उन्होने हमारे बारे मे सूचना दी। हम खडे हुए इन्तजार करने लगे।

आखिर हाथो मे प्लेट लिये हुए एक कर्नल बाहर आया। वह खडा हुआ मकारोनी (सेवइया) खा रहा था।

"ओहो," वह बोला, "इटली के क्षेत्र मे घुस आये। बात साफ है पोत छीन लिया जाये, लोगो को खेतो मे काम पर लगा दिया जाये और आगे क्या करना है, इसके लिये रोम से आदेश लिया जाये।'

सो हमे काम करने के लिये खेतो मे खदेड दिया गया। एक दिन मे ही हमे बेहाल कर दिया गया, भूख से हमारी बुरी हालत हो गयी। इतना ही अच्छा हुआ कि फुक्स ने खच्चर के चारे के थैले मे हाथ डालकर मुट्ठी भर जई निकाल ली थी। बस, उसी को पेट मे डाल लिया।

रात होने पर सार्जेट उठाईगीरो आया। हम पर उसे दया आ ही गयी, उसने प्राण-रक्षा के लिये हमारे प्रति इस प्रकार आभार प्रकट किया – अपने राशन मे म मकारोनी की एक प्लेट हम लोगो के लिये ले आया।

इस तरह की भीख लेना तो कुछ अच्छा नही लगता, किन्तु, जैसा कि कहा जाता है, भूख तो किसी को भी चैन नही लेने देती। मैंने सबको बराबर-बराबर मकारोनिया दे दी और उन्ह चखा। सब्वल को तो हमेशा ही बहुत भूख लगी रहती थी, सो वह तो उन पर टूट पडा। किन्तु देखा कि फुक्स अपनी शान दिखा रहा है, उसने उन्हे सूघा और नाक चढा ली।

"ये भी कोई मकारोनी है?" वह बोला, "यह तो भोंडा बनावटी माल है। जनाब सार्जेट साहब, आपके यहा इतना अच्छा जलवायु है, किन्तु आप यह सब बेहूदा चीजे खाते और मक्ई बोते है। यहा तो मकारोनियो का ऐसा बढिया बागान

लगाया जा सकता है कि सारे इटली देश के लिये काफी हो जाये। आप कर्नल साहब को बताइये कि यदि उन्हें आपत्ति न हो तो मैं प्रयोग के लिये उन्हें बोकर देखूं। मेरे पास पौधे भी हैं लेकिन वे पोत पर रह गयी हैं।"

मैं आंखें फाड-फाडकर देखता रह गया – कैसा सफेद झूठ बोल रहा है यह नौजवान! किन्तु इस उठाईगीरे को विश्वास हो गया और वह सचमुच यह बताने के लिये भाग गया। और अब आप कल्पना कीजिये – हम फुक्स के हवाले कर दिया गया उसके लिये जमीन का एक टुकडा तय हो गया "बला" से मकारोनिया लायी गयी और सभी ओर पहरा लगा दिया गया। कर्नल खुद आया।

तो बोइये उसने कहा किन्तु यह ध्यान में रखिये कि अगर धोखा देंगे तो खाल उधडवा दूंगा।

मैंने अनुभव किया कि यह तो सचमुच खाल उधडवा देगा। इसलिये फुक्स को सावधान करने का निर्णय किया।

हटाइये आप यह सब मैंने फुसफुसाकर कहा, "किसी बडी मुसीबत के सिवा कोई और नतीजा तो नहीं निकलेगा "

किन्तु फुक्स ने केवल हाथ झटक दिया –

' बिल्कुल निश्चिन्त रहिये क्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच – किन्तु चुपके-चुपके सब काम कीजिये! '

सो हमने इतमीनान से क्यारियां बनायीं। फुक्स ने सबके सामने मकारोनिया तोडी उन्हें बोया और सींचा। आप सोचिये तो, तीन दिन बाद अंकुर निकल आये! शुरू में छोटी-छोटी डंडियां और उसके बाद पत्ते

फुक्स इधर-उधर आता जाता था, जडों को मिट्टी से ढकता था और इतालवियों को बताता था –

"यह कोई सस्ते ढंग की बनावटी नहीं, असली चीज है! जब पौधे बडे हो जायें, मनुष्य के कद जितने ऊंचे, तब इन्हें काटियेगा, पत्तों को तोडकर चारे के रूप में पशुओं को खिला दीजिये और डंठलों को सीधे पतीले में डाल देने पर आपको बढिया भोजन तैयार मिलेगा।"

इतालवियों ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया। सच तो यह है कि मुझे भी यकीन हो गया। यह तो हाथ-कंगन को आरसी क्या वाली बात थी। तथ्य सामने था, मकारोनिया उग रही थी। सो कर्नल ने पूछा –

"सारे खेत में ही क्या इन्हें नहीं बोया जा सकता?"

"बोया क्यों नहीं जा सकता, जरूर बोया जा सकता है," फुक्स ने उत्तर

तिथि
रेखांश अक्षांश
उल्लेखनी
बातें
यह देखिये, फ्लावन्स
मकारोनिया बो रहा है
उगी हुई मकारोनी

लगाया जा सकता हे कि मारे इटली देश के लिये काफी हो जाये! आप कर्नल साहब को बताइये कि यदि उन्हे आपत्ति न हो, तो मैं प्रयोग के लिये उन्ह बोकर देखू। मेरे पास पोधे भी हे, लेकिन वे पोत पर रह गयी ह।"

मै आखे फाड-फाडकर देखता रह गया – कैसा सफेद झूठ बोल रहा है यह नौजवान! किन्तु इस उठाईगीरो को विश्वास हो गया और वह सचमुच यह बताने के लिये भाग गया। और अब आप कल्पना कीजिये – हमे फुक्स के हवाले कर दिया गया, उसके लिये जमीन का एक टुकडा तय हो गया, "वला" से मकारोनिया लायी गयी ओर सभी ओर पहरा लगा दिया गया। कर्नल खुद आया।

"तो बोइये," उसने कहा, "किन्तु यह ध्यान मे रखिये कि अगर धोखा देगे, तो खाल उधडवा दूगा।"

मेने अनुभव किया कि यह तो सचमुच खाल उधडवा देगा। इसलिये फुक्स को सावधान करने का निर्णय किया।

"हटाइये आप यह सब," मैने फुसफुसाकर कहा, "किसी बडी मुसीबत के सिवा कोई और नतीजा तो नही निकलेगा "

किन्तु फुक्स ने केवल हाथ झटक दिया –

'बिल्कुल निश्चित रहिये, क्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच – किन्तु चुपके-चुपके सब काम कीजिये!'

सो हमने इतमीनान से क्यारिया बनायी। फुक्स ने सबके सामने मकारोनिया तोडी, उन्हे बोया और सीचा। आप सोचिये तो, तीन दिन बाद अकुर निकल आये! शुरू मे छोटी-छोटी डडिया ओर उसके बाद पत्ते

फुक्स इधर-उधर आता जाता था, जडो को मिट्टी से ढकता था और इतालवियो को बताता था –

"यह कोई सस्ते ढग की बनावटी नही, असली चीज ह! जब पौधे बडे हो जाये, मनुष्य के कद जितने ऊचे, तब इन्हे काटियेगा, पत्तो को तोडकर चारे के रूप मे पशुओ को खिला दीजिये और डठलो को सीधे पतीले मे डाल देने पर आपको बढिया भोजन तयार मिलेगा।"

इतालवियो ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया। सच तो यह है कि मुझे भी यकीन हो गया। यह तो हाथ-कगन को आरसी क्या वाली बात थी। तथ्य सामने था, मकारोनिया उग रही थी। सो कर्नल ने पूछा –

"मारे खेत मे ही क्या इन्हे नही बोया जा सकता?'

"बोया क्यो नही जा सकता, जरूर बोया जा सकता ह,' फुक्स ने उत्तर

रेखाश अक्षाश
यह वये, फुक्स
या बो रहा है
उल्लेखनीय
बाते
उगी हुई मकारोनी
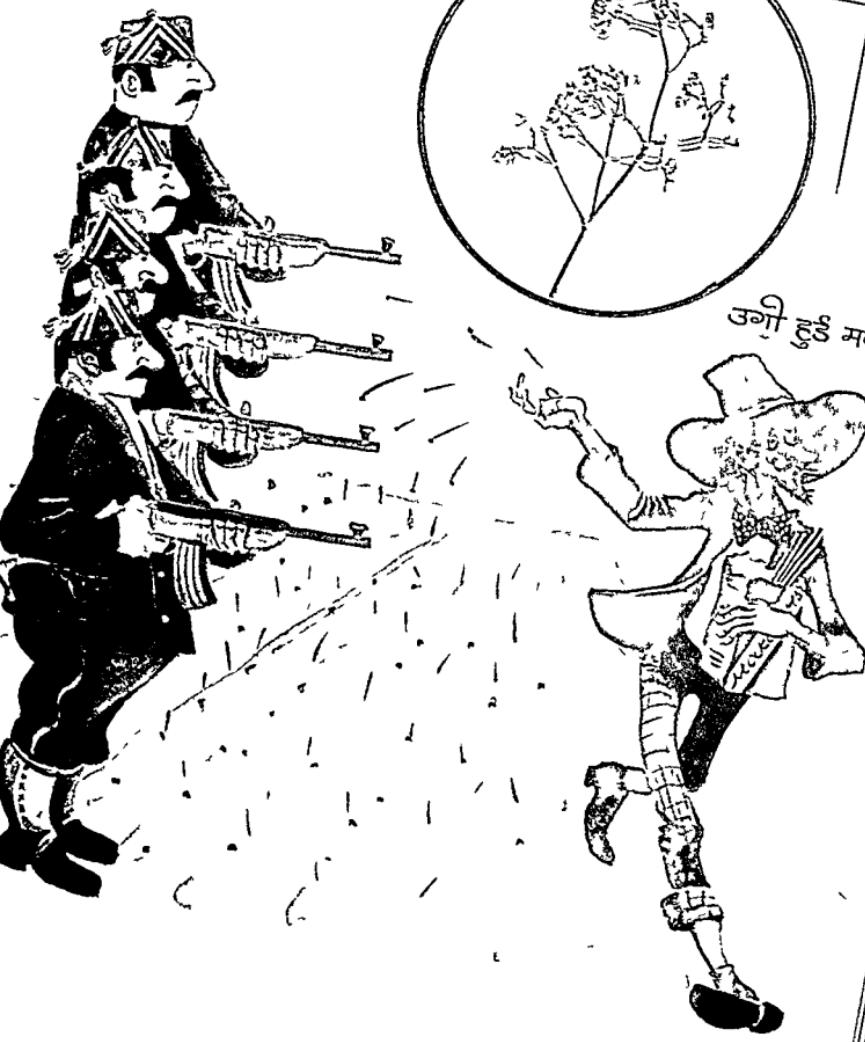
दिया। "किन्तु बीज के रूप मे सामग्री बहुत थोडी है। अगर आपकी मकारोनिया बोयी जाये, तो उन्हे स्पिरिट से सीचना होगा, वरना वे नही उगेगी।"

"इसमे क्या कठिनाई है, मेरे पट्ठे सीच देगे," कर्नल ने कहा और आदेश दे दिया।

अगले दिन स्पिरिट की एक टकी लायी गयी, उनके पास जितनी मकारोनिया थी, सभी बिखेर दी गयी, उन्होने मूसल बनाकर उन्हे कूट डाला, बोया और सिचाई करने लगे। किन्तु खेत मे तो थोडी-सी स्पिरिट जाती और उससे कही अधिक सैनिको के मुह मे पहुचती। शाम को कर्नल भी आ गया, वह भी कुछ घूट चढा गया और फिर तो सारे शिविर मे मौज-मस्ती का रग जम गया – गाने गूजने लगे, शोर मचने लगा और मार-पीट होने लगी। रात को चाद निकल आया, शिविर मे नीरवता छा गयी और खेत मे से केवल खर्राटे ही सुनाई दे रहे थे। हम जल्दी जल्दी तट पर, "बला" पर पहुचे। पाल लगाये और चल दिये।

"फुक्स, आपको तो नाविक नही, कृषिविज्ञ बनना चाहिये। ऐसी दक्षता आपने कैसे प्राप्त की? यह तो चमत्कार ही है कि मकारोनिया उग आयी।"

"चमत्कार-वमत्कार कुछ नही है, क्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच, सिर्फ हाथो की सफाई है," फुक्स ने जवाब दिया। "मेरी जेब मे मुट्ठी भर जई रह गयी थी और जई के साथ तो मकारोनिया ही क्या, सिगरेटो के टोटे भी उग आयेगे।"

तो ऐसा किस्सा रहा। थोडे मे यह कि सकुशल वहा से बच निकले। अगले दिन मैने गार्डफूइ अन्तरीप का चक्कर लगाया और पोत को सीधे दक्षिणी की ओर बढा ले चला।

नौवा अध्याय

पुरानी रीति रस्मो और ध्रुवीय हिम के बारे मे

महासागर ने समगति से बहती अनुकूल हवा से हमारा स्वागत किया। एक दिन बढते रहे, दूसरे दिन बढते रहे। नम हवा कुछ हद तक गर्मी को कम करती थी, किन्तु शेष सभी लक्षण यह इगित करते थे कि हम उष्णदेशीय क्षेत्र मे पहुच गये है। एकदम नीलाकाश, सिर के ऊपर सूरज और सबसे बढकर तो उडती हुई मछलिया। बहुत ही सुन्दर मछलिया! पानी के ऊपर तितलियो की भाति उड रही थी और मानो मुझ बूढे जहाजी की आत्मा को चिढा रही थी। व्यर्थ ही तो उडती हुई मछली को महासागर विस्तार का प्रतीक नही माना जाता।

इन्ही मछलियो ने, बुरा हो इनका, मेरे मन मे तरुणावस्था की स्मृतियो, पहली समुद्र-यात्रा की याद ताजा कर दी भूमध्यरेखा

जैसा कि आप जानते है, भूमध्यरेखा एक काल्पनिक, किन्तु सर्वथा स्पष्ट रेखा है। पुराने समय से उसको लाघते समय जहाज पर एक छोटा-सा शौकिया तमाशा किया जाता है समुद्र-देवता मानो पोत पर आता है और कप्तान के साथ थोडी-सी बातचीत करने के बाद डेक पर ही उन नाविको को नहलाता है, जो पहली बार उसकी सत्ता-सीमा मे आते है।

मैंने अतीत को लौटाने और इस पुरानी रस्म को पुनर्जीवित करने का निर्णय किया। विशेषत इसलिये कि सजावट बडी साधारण होती है और पोशाकें भी सीधी-सादी। इस दृष्टि से किसी तरह की कोई कठिनाई मुझे अनुभव नही हुई। किन्तु अभिनय करनेवालो की बडी कमी थी। पोत पर मैं अकेला ही अनुभवी नाविक था,

मैं ही कप्तान था और इस कारण चाहे-अनचाहे मेरे लिये ही समुद्र देवता बनना जरूरी हो गया।

किंतु मैंने इसका एक मार्ग निकाल लिया—सुबह से ही पानी से भरा हुआ एक बडा पीपा डेक पर रखने का आदेश दे दिया, इसके बाद बीमार होने का ढोंग किया और स्वस्थ होने तक सब्बल को पोत का विधिवत कप्तान बना दिया। सब्बल ने मेरे प्रति सहानुभूति प्रकट की, किन्तु बडी शान से कप्तान के ढग से टोपी डाट ली और बडे रोब से फुक्स को कासे के भाग साफ करने का आदेश दिया।

मैंने अपने को केबिन म बन्द करके तैयारी शुरू कर दी—झाड से दाढी बनायी, त्रिशूल और मुकुट बनाया तथा अपने पीछे मछली जैसी पूछ लगा ली। शेखी मारे बिना मै यह कहूगा कि बहुत ही बढिया नतीजा रहा। मैंने दर्पण मे अपने को देखा, बस एकदम समुद्र-देवता लग रहा था। बिल्कुल जीता-जागता!

मेरे अनुमानानुसार ' बला " ने जब भूमध्यरेखा पार की, तो मैं पूरी सज धज के साथ डेक पर आ गया

असाधारण किन्तु कुछ अप्रत्याशित परिणाम निकला। इस तमाशे के पूर्वाभ्यास और सागर की पुरानी रस्मो की जानकारी के अभाव के फलस्वरूप मेरे नाविको की कल्पना ने मेरे लिये अवाछित दिशा मे उडान भर ली।

मै डेक पर आया।

मेरा बडा सहायक सब्बल बडे गर्व से चालन-चक्र के पास खडा था, एकटक क्षितिज को ताक रहा था। फुक्स पसीना बहाता हुआ बडी लगन से कासे की चीजो को खूब चमका रहा था। उडनेवाली मछलिया पहले की भाति ही लहरो के ऊपर उड रही थी।

जहाज के डेक पर शान्ति का राज था और मेरे वहा आने पर आरम्भ मे किसी ने भी मेरी ओर कोई ध्यान नही दिया।

किन्तु मैने अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने का निर्णय किया—त्रिशूल के डडे को जोर से डेक पर दे मारा और गरज उठा। सब्बल और फुक्स दोनो चौके और आश्चर्य से स्तम्भित रह गये। आखिर सम्भलने पर सब्बल हिचकिचाते हुए मेरी ओर बढा और घबरायी-सी आवाज मे उसने मुझसे पूछा—

"आपको क्या हुआ है, ख्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच?"

मुझे इस प्रश्न के पूछे जाने की आशा थी और इसलिये मैंने कविता के रूप मे पहले ही से इसका उत्तर तैयार कर लिया था—

थि
रेखांश अक्षांश
घटनाएं
उल्लेखनी बातें
भूमध्यरेखा पर मैं समुद्र-देवता के रूप में
और यह भी मैं ही हूं

मै हू सागर-देव, अनूठा रूप-रमण
मेरे वश मे जल, जल-प्राणी, पोत, पवन,
भला किधर से आया, अब किस ओर चला
मुझे बताओ, तुम लोगो का पोत "बला"?

क्षण भर को सब्वल भयभीत हो उठा और फिर यह भय हताशापूर्ण दृढता मे बदल गया। सब्वल चीते की तरह मुझ पर झपटा और मुझे अपनी बाहो मे कसकर पानी से भरे पीपे की ओर खीच ले गया।

"कप्तान को टागो से पकड लिया जाये!" उसने आदेश दिया।

फुक्स ने जब यह आदेश पूरा कर दिया, तो सब्वल ने कुछ अधिक शान्ति से इतना और कहा –

"बूढे को आतपघात हुआ है, उसके सिर को शीतल करना आवश्यक है।"

मैने उनके हाथो से छूटने, उन्हे यह विश्वास दिलाने का यत्न किया कि सदियो पुरानी परम्पराओ के अनुसार मुझे नही, बल्कि भूमध्यरेखा लाघने के सम्बन्ध मे उन्हे नहाना चाहिये। किन्तु उन्होने मेरी बात पर कान नही दिया। सो वे मुझे पीपे के पास घसीट ले गये और पानी मे डुबकिया लगवाने लगे।

मेरा मुकुट भीग गया और त्रिशूल नीचे गिर गया। स्थिति बडी दुखद और निराशाजनक थी। किन्तु मैने अपनी सारी शक्ति बटोरी और दो डुबकियो के बीच के समय मे बडे जोश से आदेश दिया –

"कप्तान को डुबकिया लगवाना बन्द किया जाये!"

और आप कल्पना करे कि इसका प्रभाव हुआ।

"कप्तान को डुबकिया लगवाना बन्द किया जाता है," सब्वल ने फौजी सलामी देते हुए ऊची आवाज मे कहा।

मैं पानी मे डूबा हुआ था सिर्फ टागे ही बाहर निकली हुई थी। मेरा तो दम भी घुट गया होता। यही अच्छा हुआ कि फुक्स ने इस बात को भाप लिया पीपे को टेढा नीच गिरा दिया, पानी बह गया, और मै उसमे फसकर रह गया। एकाकी केकडे की भाति उसमे बैठा था, सास नही ले पा रहा था। कुछ देर बाद सम्भला और केकडे की भाति पीछे को रेगकर बाहर निकला।

आप तो खुद ही समझते है कि मेरी प्रतिष्ठा को इस घटना से कितना बडा धक्का लगा। इसी समय मानो हमारा मुह चिढाने के लिये अनुकूल हवा भी बन्द हो गयी। पूर्ण स्थिरता छा गयी और पोत पर करने-धरने को कुछ नही रहा। सो सुबह

होते ही सब्बल और फुक्स पालथी मारकर डेक पर बैठ जाते, ताश ले लेते ओर पागल की तरह लगातार "बुद्धू" खेल खेलते रहते।

मने एक दिन यह देखा, दूसरे दिन देखा और फिर यह बन्द कर दिया। मे तो वैसे ही इस तरह के उत्तेजनापूर्ण खेलो का विरोधी हू और इस समय तो विशेषत ऐसा था, क्योकि इसकी तरग मे अनुशासन भग होने का भय था। आप इस बात को ध्यान मे रखे कि फुक्स चालाकी करता था और हर बार ही सब्बल को हराकर बुद्धू बना देता था। आदर-सत्कार ही कहा रह जाता था!

किन्तु दूसरी ओर, अगर खेलने की यो ही मनाही कर देता, तो ऊब के मारे उनका दम निकल जाता। मे तो अपने सहायक का बुद्धू होना उसके मर जाने से बेहतर मानता हू।

तब मैने उन्हे शतरज खेलने का सुझाव दिया। कुछ भी क्यो न कहे, यह तो बुद्धिमानो का खेल है, इससे अक्ल तेज होती है ओर पैतरेबाजी की क्षमता बढती है। इसके अतिरिक्त इस खेल की शान्त प्रकृति इसे पारिवारिक वातावरण मे खेलने की सम्भावना देती है।

सो हमने डेक पर एक मेज रख दी, समोवार ले आये, सिर के ऊपर पाल का चदवा-सा तान दिया ओर ऐसे वातावरण मे, चाय की चुस्किया लेते हुए, सुबह से शाम तक रक्तहीन लडाइया लडते रहते।

तो एक दिन म और सब्बल सुबह से ही वह बाजी खेलने बैठ गये, जो पिछले दिन अधूरी रह गयी थी। जानलेवा गर्मी थी और फुक्स, जो खेल मे हिस्सा नही ले रहा था, नहाने के लिये समुद्र मे उतर गया।

शतरज की बाजी मे सब्बल का बादशाह दयनीय स्थिति मे, कोने मे फसा हुआ था। मैं तो अपनी जीत की कल्पना का मजा भी लेने लगा था कि अचानक समुद्र की ओर से सुनाई देनेवाले भयानक चीत्कार से मेरी विचार-शृखला टूट गयी। उधर देखा, तो पानी के ऊपर फुक्स की टोपी दिखाई दे रही थी (वह आतपघात के डर से टोपी पहने हुए नहा रहा था)। हताशापूर्ण चीख के साथ फुक्स पानी पर बडे जोर से हाथ-पैर पटक रहा था, फुहारो का बादल-सा उडा रहा था और यथाशक्ति पूरी द्रुत गति से "बला" के निकट पहुच रहा था। उसके पीछे-पीछे सागर की हल्की नीली सतह को चीरती हुई एक विराटकाय शार्क किमी तरह की आवाज किये बिना बढी आ रही थी।

भाग्य के मारे फुक्स के निकट पहुचकर शार्क पीठ के बल हो गयी, उसने अपना भयानक जबडा खोल लिया और मै समझ गया कि फुक्स की आखिरी घडी आ गयी।

कुछ भी सोचे-समझे विना मैने जो कुछ भी हाथ मे आ गया, वही मेज पर से उठा लिया ओर उस हिसक समुद्री जन्तु की थूथनी पर दे मारा।

आश्चर्यचकित करनेवाला और असाधारण परिणाम निकला – उस भयानक जन्तु के दात तत्काल बन्द हो गये और फुक्स का पीछा करना छोडकर वह उसी क्षण वही चक्कर काटने लगी। वह पानी से बाहर उछली, उसने आखे मूद ली ओर जबडे को खोले बिना दातो के बीच से सभी दिशाओ मे थूकने लगी।

इसी बीच फुक्स सही-सलामत पोत तक पहुच गया, हाथो-पैरो के बल डेक पर चढ गया ओर थकावट के कारण मेज के निकट ही बैठ गया। उसने कुछ कहना चाहा, किन्तु उत्तेजना के कारण उसका कण्ठ सूख गया था। सो मैंने झटपट उसे चाय का प्याला देना चाहा।

"क्या नीबू डालकर दू?" मैंने पूछा। तश्तरी की तरफ हाथ बढाया, किन्तु उसे खाली पाया।

तब सारी बात मेरी समझ मे आ गयी। मृत्यु के मडराते हुए भय के क्षण मे नीबू ही मेरे हाथ मे आ गया था और उसने फुक्स के भाग्य का निर्णय कर दिया था। आप तो जानते ही है कि शार्के खटाई की आदी नही है। शार्को की ही क्या बात है, आप, मेरे नौजवान दोस्त, आप ही पूरा नीबू खाकर देख लीजिये – जबडे ऐसे अकड जायेगे कि मुह नही खोल पायेगे।

सो समुद्र मे नहाने की मनाही करनी पडी। यह सच है कि हमारे पास नीबू तो अभी और भी थे किन्तु ऐसा मानना ठीक नही हो सकता था कि वह हमेशा ऐसी ठीक जगह पर ही जा गिरेगा। यह बात है, जनाब! सो हमने डेक पर नहाने की व्यवस्था कर ली, एक-दूसरे पर पानी से भरी बालटिया डालते। किन्तु इतना तो पर्याप्त नही था और गर्मी ने हमारी बुरी हालत कर रखी थी। मै तो कुछ दुबला भी हो गया और कह नही सकता कि अगर एक सुबह को आखिर हवा न चल पडती, तो इसका क्या अन्त होता।

निठल्लेपन से तग आये हुए नाविक-दल ने असाधारण उत्साह का परिचय दिया। हमने आन की आन मे पाल लगा दिये ओर "बला" पोत रफ्तार बढाते हुए दक्षिण की ओर आगे चल दिया।

सम्भव हे कि मेरे द्वारा चुनी गयी दिशा से आपको आश्चर्य हो रहा हो? हैरान होने की बात नही है, गोलक पर नजर डालिये – भूमध्यरेखा के साथ-साथ पृथ्वी के गिर्द चक्कर लगाने मे बहुत समय लगेगा और ऐसा करना कठिन भी है। ऐसे मार्ग मे कई महीने लग जायेगे। ध्रुव के निकट आप अगर चाह, तो आसानी से पृथ्वी

की धुरी के गिर्द दिन मे पाच बार चक्कर लगा सकते ह। विशेपकर इसलिये कि ध्रुव पर छ-छ महीने लम्बे दिन होते ह।

सो हम ध्रुव की ओर ही बढ चले और हर दिन आगे बढते जा रहे थे। शीतोष्ण अक्षाश गुजर गये और हम ध्रुवीय वृत्त के निकट पहुच गये। वहा तो ठण्ड ने अपना रग दिखाना शुरू किया। सागर भी पहले जैसा नही था – पानी मटमैला था, कुहासा था और बादल नीचे झुके-झुके थे। फर के कोट पहनकर हम ड्यूटी बजाते कान ठिठुर जाते और रस्सियो पर जमी बर्फ की कलम-सी लटकती होती।

किन्तु लौट जाने की बात ही हमारे दिमाग म नही आयी। इसके उलट, अनुकूल हवा का लाभ उठाते हुए हम हर दिन ध्रुव की तरफ ही बढते जाते थे। हल्के-हल्के हिलोरो से हमे कोई घबराहट नही हो रही थी। नाविक-दल बहुत मजे मे था और मै बडी बेचैनी से उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था, जब क्षितिज पर दक्षिणी ध्रुव का हिमावरोध दिखाई देगा।

सो उकाब जसी तेज नजरवाला फुक्स एक दिन अचानक चिल्ला उठा –

"नाक पर मिट्टी!"

मैं कुछ समझ न पाया। सोचा, मेरी या सब्बल की नाक पर कोई गडबड है। मैने हथेली फेरी, उसे पोछा। नही, नाक तो बिल्कुल साफ थी।

किन्तु फुक्स फिर से चिल्ला उठा –

"नाक पर मिट्टी!"

"शायद आप नाक के सामने जमीन कहना चाहते ह?" मने पूछा। "फुक्स आपको ऐसे ही कहना चाहिये था। अब तक तो नाविको की भापा का अभ्यस्त हो जाना चाहिये था। किन्तु मुझे आपकी वह जमीन कही दिखाई नही दे रही "

"बिल्कुल ठीक, नाक के सामने जमीन ह,' फुक्स ने अपनी भूल सुधारी। "वहा देख रहे हे न?"

"सच कहू, तो मुझे दिखाई नही दे रही,' मने उत्तर दिया।

किन्तु कोई आध घण्टा बीता और आप जानते ह कि क्या हुआ? फुक्स की बात ठीक निकली। अब तो मुझे भी क्षितिज पर काली-सी पट्टी दिखाई दी और सब्बल को भी। सचमुच जमीन जमी लगती थी।

"शाबाश फुक्स," मैंने कहा और खुद दूरबीन लेकर उधर देखा। गलती हुई थी! जमीन नही, ठोस जमी हुई बर्फ थी। बहुत ही विराट मेज की शक्ल का हिमशैल था।

मैंने पोत को उधर ही बढा दिया और दो घण्टे बाद अस्त न होनेवाले सूर्य

की किरणों में हजारों रोशनियां-सा चमचमाता हुआ हिमशैल हमारी आखो के सामने था।

सागर के ऊपर आसमानी रंग की उभरी हुई चट्टाने खिलौने दुर्ग की दीवारो जैसी लग रही थी। जमी बर्फ के पर्वत से ठण्ड और मृत्यु-तुल्य शान्ति की अनुभूति हो रही थी। हरी-हरी लहरे उसके दामन से बहुत जोर से टकरा रही थी। कोमल बादल शिखर से चिपके हुए थे।

मैं मन से थोडा कलाकार भी हू। प्रकृति के ऐसे अनुपम दृश्य मेरे हृदय को अत्यधिक स्पन्दित कर देते है। वक्ष पर भुजाए बाधकर मैं हिम के इस विराट रूप को देखता हुआ स्तम्भित-सा रह गया।

किन्तु इसी समय न जाने कहा से एक दुबले पतले सील ने पानी म स अपनी मूर्खतापूर्ण थूथनी निकाली, बेहयाई से ढाल पर चढने लगा, फिसलकर बर्फ पर लेट गया और लगा अपनी बगल खुजलाने!

"भाग रे उल्लू, यहा से!" मैं चिल्ला उठा।

मैने सोचा कि चला जायेगा, किन्तु उसके कानो पर जू तक नही रेगी। बगल खुजला रहा था, मुड मुड करता था और दृश्य के गम्भीर सौन्दर्य को गडबडा रहा था।

अब मैं अपने को वश मे नही रख सका और मैंने एक ऐसी अक्षम्य भूल कर दी, जिसके परिणामस्वरूप हमारी इस यात्रा का बडा ही बुरा अन्त हो सकता था।

'बन्दूक दीजिये!" मैंने कहा।

फुक्स लपककर केबिन मे गया, बन्दूक ले आया। मैंने निशाना साधा ठाय!

सहसा वही पर्वत, जो बिल्कुल ठोस प्रतीत होता था, भयानक गडगडाहट के साथ दो हिस्सो मे बट गया, हमारे नीचे सागर हिलोरे लेने लगा और डेक पर पक्की बर्फ के टुकडे तडा-तड गिरने लगे। हिमशैल ने कलाबाजी सी खायी, "बला" को अपनी लपेट मे ले लिया और हम एक चमत्कारी ढग से हिमपर्वत के शिखर पर पहुच गये।

किन्तु बाद मे प्रकृति का यह प्रकोप शान्त हो गया। मैं भी शान्त हो गया और मैंने इधर-उधर नजर दौडायी। मुझे स्थिति बडी अटपटी लगी -- पोत बर्फ के ऊबड-खाबड ढेरो के बीच ऐसे फस गया था कि उसे हिलाना भी सम्भव नही था सभी ओर अप्रिय, मटमैला महासागर था, हिमपर्वत के दामन मे वही दुष्ट सील दिख रहा था, हमारी ओर देखता तथा बडी बेहयाई से दात निपोर रहा था।

इस सारे किस्से से कुछ परेशान हुआ नाविक-दल चुप्पी साधे था। सम्भवत वे लोग समझ मे न आनेवाली इस घटना का स्पष्टीकरण चाहते थे। मैंने अपने

ज्ञान-भण्डार की चमक दिखानी चाही और वही बर्फ पर एक छोटा-सा व्याख्यान दे डाला।

मैंने उन्हे बताया कि पोत के लिये हिमशैल की निकटता एक खतरनाक चीज है विशेषत गर्मी के मौसम मे। पानी के नीचे का भाग पिघल जाता है, सन्तुलन गडबड हो जाता है गुरुत्व केंद्र बदल जाता है और यह सारा बोझ मानो आधार के बिना ही था। यहा तो गोली की आवाज क्या ऊची खासी भी प्रकृति की इस सारी रचना को नष्ट भ्रष्ट करने के लिये पयाप्त होती है। हिमशैल के उलट-पलट हो जाने मे आश्चर्य की कोई बात नही जी यह मामला है।

सो नाविक-दल ने बडे ध्यान से मेरा स्पष्टीकरण सुना। फुक्स तो विनम्रता के कारण चुप रहा किन्तु सब्बल ने सीधे-सरल स्वभाव के अनुसार कुछ टेढे प्रश्न पूछ लिये।

खैर यह बोला हिमशैल कैसे उलट गया यह तो बीती बात हो गयी। क्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच अब आप यह बताये कि उसे पहले जैसी स्थिति मे कैसे लाया जाये?

मेरे युवा मित्र इस बारे मे तो आदमी सचमुच सोच मे पड जाता है – इतने विराटकाय हिमशैल को कैसे पहली स्थिति मे लाया जाये? किन्तु कुछ करना तो जरूरी था। उम्र भर तो हम बर्फ के शिखर पर बैठे नही रह सकते थे।

सो मै सोच मे डूब गया स्थिति पर विचार करने लगा और इसी बीच सब्बल ने इस मामले मे गम्भीरता के बिना जो सूझ गया वही कर डाला। उसने खुद ही पोत को पानी मे उतारने का निर्णय कर लिया। कुल्हाडा लेकर उसने जोरदार प्रहार किया और कोई दो सौ टन की सिल काट डाली।

सम्भवत इस तरह उसने हमारे हिम-पादपीठ को काटना चाहा था। उसकी भावना प्रशसनीय होते हुए भी सर्वथा निराधार थी। यथार्थ विज्ञानो के पर्याप्त ज्ञान के अभाव के कारण सब्बल अपने प्रयास के परिणाम का पूर्वानुमान नही लगा पाया।

परिणाम उलटा ही हुआ। सिल हमारे हिमपर्वत से जैसे ही अलग हुई, स्पष्ट है कि पर्वत और हल्का हो गया, उसके तैरने की क्षमता और बढ गयी और वह बह चला। सक्षेप मे यही कि जिस समय मे कुछ करने की तरकीब सोच रहा था, उसी बीच सब्बल के प्रयास के फलस्वरूप हमारा पोत कोई चालीस फुट और ऊचा हो गया।

सब्बल को अब होश आया, अपने ऐसे चचल व्यवहार के लिये उसे पश्चाताप हुआ और वह पूरे उत्साह से मेरे आदेशो को पूरा करने लगा।

मेरी योजना तो बहुत ही सीधी-सादी थी – हमने पाल लगाये रस्सियों को कम दिया और हिमशैल के साथ-साथ उत्तर की ओर, उष्ण देशों के निकट चल दिये। सील भी हमारे साथ बह चला।

एक सप्ताह भी नही बीता कि हमारा हिमशैल पिघलने लगा उसका आकार छोटा होता गया, एक सुबह को वह चिटककर टूटा फिर से उलटा हुआ और हमारा "बला" पोत मानो अवतरण-मच मे धीरे से पानी मे उतर गया। सील ऊपर की ओर था, सन्तुलन नही बनाये रख सका फिसला और रोगी की भाति हमारे डेक पर आ गिरा। मैंने उसे गर्दन से पकड लिया, चेतावनी देने के लिये पेटी से पिटाई की और छोड दिया। जाये, तैरता रहे।

सब्बल ने इसी बीच पोत को मोड लिया, 'बला ने फिर से दक्षिण का मार्ग अपनाया और हम दूसरी बार ध्रुव की ओर चल दिये।

दसवा अध्याय,

जिसमे पाठक का एडमिरल दातकाट और "वला" के
नाविक दल का भूख से वास्ता पडता है

फिर से धूसर बादल और कुहासा हमारे सामने था, फिर से फर के कोट पहनने पडे

सो एक दिन पाले की ठिठुरन मे हम धीरे-धीरे बढते जा रहे थे। अचानक जोर का धमाका हुआ। विस्फोट था या विस्फोट नही था, बादल गरजा था या वह नही गरजा था – समझना कठिन था।

हमने थोडी प्रतीक्षा की, कान लगाकर सुना – नीरवता रही। कुछ देर बाद फिर से धमाका हुआ और फिर से निस्तब्धता छा गयी।

मुझे जिज्ञासा हुई, धमाके की दिशा की ओर ध्यान दिया और "वला" को रहस्यपूर्ण घटना-स्थल की ओर ले चला।

सो देखा – क्षितिज पर मानो पर्वत-सा तैर रहा है। निकट पहुचे। नही, पर्वत नही, धुध का बादल है। अचानक उसके बीच से पानी का स्तम्भ-सा ऊपर उठा, फव्वारे की तरह सागर मे गिरा और ऐसा होते समय घुटी-सी गरज फिर सारे महासागर मे गूज गयी और उसने "वला" को एक सिरे से दूसरे सिरे तक झकझोर दिया।

कुछ डर लगा, किन्तु जिज्ञासा और समझ मे न आनेवाले इस घटना-व्यापार का रहस्य खोलकर विज्ञान को समृद्ध करने की तीव्र इच्छा ने मेरी सावधानी की भावना पर विजय प्राप्त कर ली। मैंने चालन-चक्र सम्भाल लिया और पोत को कुहास मे बढा ले चला। बढ रहा था, देख रहा था कि पोत के दोनो पहलुओ पर जमी बर्फ

की कलमे-सी नीचे गिरने लगी ह और स्पष्ट रूप से गर्मी अनुभव होने लगी है। समुद्र मे हाथ डालकर देखा – पानी लगभग उबल रहा था। कुहासे मे आखो के सामने एक विराट सन्दूक-सा उभरा और इस सन्दूक ने सहसा जोर की छीक मारी।

तब सारी बात मेरी समझ मे आ गयी। मामला यह था कि एक ह्वेल शान्त महासागर से यहा आ निकला था दक्षिणी ध्रुव के हिमपुजो मे उसे ठण्ड लग गयी थी, उसे फ्लू हो गया था और अब यहा पडा हुआ छीक रहा था। जब ऐसा था, तो पानी का बेहद गर्म हो जाना भी कोई हैरानी की बात नही थी – फ्लू मे अक्सर बुखार भी बहुत जोर का होता है।

मैं चाहता, तो उस ह्वेल को भाले से बीध सकता था किन्तु बेचारे जानवर की बीमारी की हालत से लाभ उठाना अच्छा नही लगता था। यह मेरे उसूलो मे नही है। इसके उलट, मैंने फावडे पर एस्पीरीन दवाई की बडी सी खुराक रखी, सावधानी से उसकी ओर बढाया और उसके जबडे मे डालने ही वाला था कि अचानक हवा का झोका और लहर आ गयी। सो मेरा हाथ डोल गया एस्पीरीन बिखर गयी और उसके मुह मे जाने के बजाय सास की नली, यानी नथुनो मे जा गिरी।

ह्वेल ने गहरी उसास ली, क्षण भर को बुत बना-सा रह गया उसने आखे सिकोडी और सहसा फिर से सीधे हम पर ही छीक मारी। ऐसे जोर से छीक मारी कि पोत बादलो तक ऊचा उड गया, उसके बाद नीचे आने लगा, उसने चक्कर खाये और अचानक जोर की टक्कर हुई।

धक्का लगने से मैं बेहोश हो गया और जब होश मे आया, तो देखा कि 'बला" एक विराट जहाज के डेक पर टेढा पडा हुआ है। फुक्स रस्सियो मे उलझ गया। सब्बल तो धक्के से गिर भी गया और कुछ अटपटी मुद्रा मे पास मे बैठा हुआ था। दूर तक मार करनेवाली तोपो की रक्षा मे कुछ महानुभावो का दल बडी अकड से हमारी ओर बढा आ रहा था। वे लोग सैनिक चिह्न लगाये हुए थे और वर्दियो को ध्यान मे रखते हुए एडमिरलो से कम नही लगते थे।

मैंने अपना परिचय दिया। अपनी ओर से उन्होने यह बताया कि वे ह्वेलो के लुप्त न होने की अन्तर्राष्ट्रीय रक्षा-समिति के सदस्य है। तत्काल उन्होंने मुझसे यह पूछा – मैं कौन हू, कहा से आया हू, मेरी यात्रा के क्या लक्ष्य है, ह्वेल के ढग के जन्तु तो कही मिले या नही और अगर मिले ह, तो उनकी रक्षा के लिये मैंने क्या किया है।

मैंने अपने शब्दो मे उन्हे बता दिया कि मेरी यात्रा शौकिया है, सारी पृथ्वी के गिर्द चक्कर लगा रहा हू, एक बीमार ह्वेल मिला है और ऐसे रोग के लिये

चिकित्साशास्त्र द्वारा बतायी गयी आषधि देकर मैंने उसकी यथाशक्ति सहायता की है।

उन्होंने मेरी बात सुनी, गुमुर-फुमुर की, पोत के निकट पहरा लगा दिया और सलाह-मशविरा करने चले गये। हम भी बैठकर प्रतीक्षा और आपस में विचार-विनिमय करने लगे।

आभार प्रकट करेंगे। सम्भव है कि पदक भेट करें, सब्बन ने कहा।

पदक का क्या करना है! फुक्स ने आपत्ति की। "मेरे मतानुसार तो नकद रकम के रूप मे अगर कुछ दे तो कही बेहतर होगा

मैंने कुछ नही कहा चुप रहा।

इसी तरह एक घण्टा, दो घण्टे, तीन घण्टे बीत गये। ऊब अनुभव होने लगी। मैं वही चला गया जहा उनकी बैठक हो रही थी। मुझे भीतर जाने दिया गया। मै कोने मे बैठकर सुनने लगा। उनके बीच तो वाद-विवाद हो रहा था। उसी वक्त एक पूर्वी राज्य के प्रतिनिधि एडमिरल दातकाट ने बोलना शुरू किया था।

हमारा साझा लक्ष्य, उसने कहा, ह्वेल के ढग के समुद्री जन्तुओ को लुप्त होने से बचाना है। इस उदात्त लक्ष्य की पूर्ति के लिये हमारे पास कौन-से साधन है? महानुभावो, आप सभी बहुत अच्छी तरह से यह जानते है कि इसका एकमात्र प्रभावपूर्ण उपाय ह्वेल के ढग के जन्तुओ को मार डालना है, क्योंकि उनका अन्त हो जाने पर उनके लुप्त होने का प्रश्न ही नही रह जायेगा। आइये, अब उस घटना को ले, जिस पर हमे सोच-विचार करना है। मेरा अभिप्राय कप्तान गपोडशख से है, जिसका प्रश्न हमारी आज की कार्य-सूची मे है। जैसा कि उसने स्वय स्वीकार किया हे, वह निश्चय ही उस ह्वेल को नष्ट कर सकता था, जो उसे मिला था। किन्तु इस क्रूर व्यक्ति ने क्या किया? उसने लज्जाजनक ढग से अपने उच्च कर्त्तव्य की पूर्ति की अवहेलना की और बेचारे जानवर को खुद ही मरने के लिये उसके हाल पर छोड दिया। क्या हम ऐसे अपराध की ओर से आखे मूद सकते है? क्या हम ऐसे प्रबल तथ्य की उपेक्षा कर सकते है? नही, महानुभावो, हम ऐसा नही कर सकते। हमे अपराधी को दण्ड देना चाहिये। हमे उसका पोत छीनकर मेरे हमवतनो को दे देना चाहिये, जो बडी ईमानदारी से हमारी समिति का काम पूरा करते है'

इसी समय एक अन्य राज्य, पश्चिमी राज्य के प्रतिनिधि ने, जिसका नाम मैं भूल गया हू – शायद लाशचोर था, उसकी बात काटी।

"बिल्कुल ठीक है," उसने कहा, "दण्ड देना चाहिये, किन्तु श्रीमान एडमिरल सबसे महत्वपूर्ण बात तो भूल गये – ह्वेल के ढग के दूसरे जन्तुओ की तुलना मे

उसके सामने आनेवाला ह्वेल लम्बे कपालवाला जन्तु है। इस प्रकार उसका अपमान करके गपोडशख ने पूरी आर्य जाति का अपमान किया है। तो महानुभावो, आप क्या समझते है कि आर्य यह सहन करेगे?

मैंने आगे उनकी बात ही नही सुननी चाही। यो ही साफ दिख रहा था कि चूल्हे से निकलकर भट्ठी मे जा गिरे। धीरे से वहा से खिसक गया, अपने साथियो के पास गया और जो कुछ मालूम करके आया था उन्हे वह बताया। देखा कि मेरा नाविक-दल उदास हो गया है। दोनो गुम सुम बैठे हुए अपने भाग्य के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे थे।

ह्वेल-प्रेमी एडमिरल दिन भर बहस करते रहे। आखिर रात होने पर उन्होने अपना प्रस्ताव स्वीकार किया। हमने तो बुरे से बुरे परिणाम के लिये अपने को तैयार कर लिया था और मन ही मन बला से विदा भी ले ली थी। किन्तु हमारी ऐसी आशका समयपूर्व ही सिद्ध हुई। उनका निर्णय दो टूक नही था। उसमे कहा गया था कि इस प्रश्न के अध्ययन के लिये एक आयोग बनाया जाये और "बला" पोत तथा उसके नाविक-दल को फिलहाल नजदीक के एक वीरान द्वीप पर रखा जाये।

स्पष्ट है कि मैंने विरोध किया, किन्तु क्या लाभ हो सकता था उससे? मुझसे किसी ने कुछ पूछा ही नही। "बला" को क्रेन से उठाकर चट्टानो पर रख दिया, हमे भी वहा उतार दिया, झण्डे लहराये, बिगुल बजाये और चले गये। मैंने देखा कि हमारे बस की कोई बात नही, पशु-बल के सामने झुकना और जैसी स्थिति बन गयी है, उसी के अनुसार तट पर डेरा डालना जरूरी था। आपसे कहे बिना नही रह सकता कि स्थिति बहुत ही बुरी थी – पोत चट्टान के बिल्कुल सिरे पर था, मस्तूल सागर के ऊपर दिख रहा था और हल्की सागर-तरग तट से टकरा रही थी।

सो हम तैयार होकर अपने इस द्वीप की छान-बीन करने निकले। घूमते रहे, घूमते रहे, कुछ भी अच्छा दिखाई नही दिया। सभी जगह ठण्ड थी, किसी तरह की सुविधा नही थी, सभी ओर केवल चट्टाने थी।

केवल एक ही चीज की कमी नही थी, ईधन की। मालूम नही कि उस द्वीप पर नष्ट हुए जहाजो के इतने ढाचे कहा से आ गये थे।

किन्तु देखा जाये, तो हमे ईधन का क्या करना था। खाने-पीने की चीजो के हमारे भण्डार समाप्त हो गये थे, आस-पास न कोई वनस्पति थी और न ही जीव-जन्तु। रहे पत्थर, तो उनको चाहे कितना ही क्यो न उबाला जाये, उनसे पेट तो भरने से रहा।

कहा जाता है कि खाने के वक्त ही भूख चमकती है। शायद ऐसा ही हो।

किन्तु इस मामले म मेरी शरीर-रचना कुछ भिन्न है। भूखा होने पर ही मुझे भूख अनुभव होती है।

इस असाधारण शरीर-रचना के विरुद्ध जूझने के लिये मैंने पेटी को और अधिक कस लिया उसे सहन करने लगा। मस्तूल और फुगम भी भूख का रोना रोने लगे। मछली पकडने का प्रयास किया – कोई फसी ही नही। मस्तूल को याद आया कि पुराने वक्त मे ऐसी स्थिति मे जूतो के तलो का शोरबा उबाला जाता था। सो जूते लेकर उन्हे दो दिन तक उबालते रहे – कुछ भी नतीजा नही निकला। बात समझना भी कुछ कठिन नही था – पुराने जमाने म तो जूते बैल के चमडे से बनाये जाते थे, किन्तु हमारी तो सारी समुद्री पोशाक ही नकली रबड की बनी हुई थी। इसम कोई सन्देह नही कि बरखा-बूदी और नमी के मौसम मे ऐसी पोशाक सुविधाजनक रहती है – भीगती नही किन्तु जहा तक ऐसे जूतो के भोजन सम्बन्धी गुणो का प्रश्न है, तो साफ ही कहना होगा कि उनमे न तो कोई स्वाद होता है और न कोई पौष्टिक तत्व ही।

यह समझना कुछ कठिन नही कि सूना-सूना-सा लगने लगा, हम अपने पोत के इर्द-गिर्द घूमते थे क्षितिज को ताकते थे और एक-दूसरे का मुह देखते थे। भूख का भूत हमारी आखो के सामने घूमने लगा। रातो को भयानक सपने आते

एक दिन क्या देखा कि एक हिमखण्ड हमारे द्वीप के निकट आ रहा है। हिमखण्ड पर पेगुइन बैठे थे। वे तो मानो निरीक्षण के लिये एक पक्ति-सी बनाये थे, सिर झुका रहे थे।

मैंने भी सिर झुका दिया। किन्तु मन मे यह सोच रहा था कि महानुभाव पेगुइनो, आपके साथ निकटता मे कैसे परिचय किया जाये? तट खडा था, नीचे उतरना सम्भव नही था और पेगुइनो को चाहे कितना ही क्यो न आकर्षित किया जाये, वे अपने आप तो उडकर हमारे पास आयेगे नही। उनके पख तो दिखावटी होते है, अधिकतर तो केवल बनावट के लिये। दूसरी ओर, उन्हे योही छोडते हुए भी दिल को कुछ होता था – खासे चर्बी चढे और मोटे-ताजे पक्षी थे, मानो कह रहे थे कि हमे भून लो।

हम चट्टान के सिरे पर खडे होकर उन्हे ललचायी नजरो से देखने लगे। हिमखण्ड हमारे द्वीप के पास, बिल्कुल मस्तूल के नीचे आकर रुक गया। पेगुइन शोर मचाने, इधर-उधर आने-जाने, पख फडफडाने लगे। वे भी हमारी ओर देख रहे थे।

सो मैने थोडा विचार किया, दिमाग मे जरूरी हिसाब-किताब जोडा और एक तरह की मशीन, पेगुइन उठाने का क्रेन बनाने का निर्णय किया।

पेगुइनो को उठाने का
क्रेन ऐसे काम करता है

सो हमने एक खाली पीपा लिया, उस पर अतिरिक्त चालन-चक्र लगाया, पीपे के तल मे सूराख किया, उसे मस्तूल पर टिकाया और उसके ऊपर रस्सियो की सिलसिलेवार सीढी डाल दी। अपनी इस रचना की मैने आजमाइश करके देखी। मुझे लगा कि उसे कारगर होना चाहिये। किन्तु पेगुइनो को इस यन्त्र की ओर खीचने के लिये कोई सामग्री नही थी। कौन जाने, वे किस चीज मे रुचि लेते है। जूता नीचे उतारा – उन्होने कोई ध्यान नही दिया। दर्पण दिखाया – सो भी बेकार रहा। गुलूबन्द और कीमा बनाने की मशीन उनके सामने रखी – कोई परिणाम नही निकला।

इसी समय मेरे मस्तिष्क मे एक विचार कौधा।

मुझे याद आया कि हमारे केबिन मे 'पोलिश चटनी मे उबली हुई पाइक मछली' का चित्र लटका हुआ है। खुद चित्रकार ने मुझे यह भेट किया था। बहुत ही सजीव चित्र था।

सो मैंने यह चित्र रस्सी के साथ नीचे लटका दिया। पेगुइनो ने दिलचस्पी ली, हिमखण्ड के छोर की ओर हिले-डुले। सबसे आगेवाले पेगुइन ने रस्सीवाली सीढी मे अपना सिर घुसेडा, पाइक की ओर आकर्षित हुआ। जैसे ही उसने पख घुसेडे कि मैने पीपे को लुढका दिया एक पेगुइन फस गया था !

अब तो अच्छा सिलसिला चल पडा। मै मस्तूल पर बैठा था, एक हाथ से पीपा घुमाता था, दूसरे से मानो कन्वेयर से तैयार माल उतारता था, फुक्स को देता था और वह सव्वल को, जो गिनती करता, लिखता तथा उसे तट पर छोड देता था। तीन घण्टो मे सारा द्वीप बसा लिया।

जी, ऐसी बात है। पेगुइनो को बसाने का काम समाप्त कर लिया, तो जीवन ने दूसरा ही रग ले लिया। पेगुइन चट्टानो पर घूमते थे, सभी ओर इन पक्षियो की चहक और रौनक थी शोर-गुल था, जी खुश होता था सव्वल मे भी सजीवता आ गयी, उसने पेशबन्द बाध लिया और लगा अपनी पाक-कला दिखाने। पहले पेगुइन को तो सीख पर भून लिया, वही खडे-खडे चखा और खा गये। इसके बाद सव्वल की सहायता करने लगे, लकडियो का टीला ही ला पटका। उसने अधिक सूखी लकडिया चुनकर अलाव जला लिया। आपको क्या बताऊ कि क्या कमाल का अलाव था। ज्वालामुखी की भाति धुए के स्तम्भ उठ रहे थे, चट्टाने बुरी तरह से तप उठी थी, बस, दहकती ही नही थी। द्वीप के शिखर पर एक छोटी सी हिमानी थी, वह गर्मी से पिघल गयी, खूब गर्म हो उठी और इसमे उबलते पानी की झील सी बन गयी। सो मैंने इससे लाभ उठाने और यहा स्नानघर की भी व्यवस्था करने का

निर्णय किया। पहले तो कपडे धोये, उन्हे सूखने के लिये डाल दिया और खुद बैठकर भाप का मजा लेने लगे। मुझसे कुछ थोडी-सी भूल हो गयी। मुझे इस फेर मे अधिक नही पडना चाहिये था। कुछ भी हो दक्षिणी ध्रुव ठहरा। वहा मौसम बदलता रहता है, यह ध्यान मे रखना चाहिये था किन्तु मैंने इसकी उपेक्षा कर दी और खुद ही अलाव मे लकडिया डाल दी। बात यह है कि मुझे ज्यादा गर्म गुसल पसन्द है।

इसका परिणाम भी शीघ्र ही सामने आ गया। चट्टाने ऐसी गर्म हो गयी कि पाव भी रखना कठिन था। ताप ऊपर को चला गया ऐस भनभनाने लगा मानो पाइप मे भनभनाहट हो रही हो। बात समझ मे आती थी – वायुवीय सन्तुलन गडबडा गया था। वातावरण से ठण्डी हवा के झोके आये, बादलो को लाये और मूसलधार बारिश शुरू हो गयी। सहसा बहुत जोर का धमाका हुआ।

ग्यारहवा अध्याय,

जिसमे कप्तान गपोडशख अपना पोत और अपना बडा सहायक खो बैठते हैं

धमाके से वहरा हुआ और चोधियाया-सा मैं तत्काल ही अपन को नही सम्भाल सका। कुछ देर बाद मेरे होश ठिकाने आये, तो मैंने देखा कि पोत और आधा द्वीप गायब ह। केवल भाप उठ रही थी। सभी ओर से झझा के तेज झोके आ रहे थे कुहासा टुकडे-टुकडे होकर भाग रहा था, सागर उवल रहा था और उसमें उवली हुई मछीलया तैर रही थी। बेहद तपा हुआ ग्रेनाइट ठण्ड के आकस्मिक प्रबल प्रभाव को सह न पाया चटका और टूटकर दूर चला गया। बेचारा सब्वल तो सम्भवत इस दुर्घटना मे मारा गया और पोत नष्ट हो गया। सक्षेप मे यही कि सपनो का अन्त हो गया। किन्तु फुक्स बच निकला था। देखा कि वह एक तख्ते से चिपक गया है और पानी के भवर पर उसी पर चक्कर खा रहा है।

बस, मैने भी झटपट तरना शुरू किया, ढग के तख्ते तक पहुचकर उस पर लेट गया और प्रतीक्षा करने लगा। बाद को सागर कुछ शान्त हो गया और पवन के वेग मे कमी आ गयी। मैने और फुक्स ने उवली हुई इतनी मछलियाँ इकट्ठी कर ली, जितनी का वजन हमारे तख्ते सह सकते थे, एक-दूसरे के निकट आ गये और अपने को प्रकृति की अधी शक्ति की दया पर छोड दिया। मैं तख्ते पर गुड़ी-मुड़ी हो गया, हाथो पैरो को समेटकर लेट गया। फुक्स ने भी ऐसा ही किया। लहरो की इच्छानुसार एक दूसरे के पास-पास अज्ञात दिशा मे तैरते जा रहे थे और पुकारकर एक दूसरे से पूछते थे—

"हाऊ डू यू डू, फुक्स ? क्या हालचाल हे, फुक्स ?"

"आल राइट, क्रिस्तोफोर वोनीफात्येविच ! सब ठीक-ठाक ह।"

ठीक तो ठीक मही, किन्तु आपसे क्या छिपाना, तख्तो पर हमारा यो तैरना खासा दयनीय था। ठण्ड थी, भूख थी और सिर पर खतरा मडरा रहा था। सबसे पहले तो यह मालूम नही कि हम कहा पहुचेगे और पहुचेगे भी या नही ? दूसरे, शार्क मछलिया भी हो सकती थी, इसलिये तख्ते पर लेटे रहो, हिलो-डुलो नही। हिलो-डुलोगे, तो हिंसक समुद्री जानवरो का ध्यान अपनी ओर खीच लोगे और तब पता भी नही चलेगा कि बाहे या टागे कहा गायब हो गयी।

सो हम ऐसे काहिली ओर मरे मन से तैरते जा रहे थे। एक दिन तैरते रहे, दो दिन तैरते रहे और उसके बाद गिनती ही भूल गये। कलेडर तो हमारे पास था नही ओर जाच के लिये मे तथा फुक्स अलग-अलग गिनती करते थे तथा सुबह को एक-दूसरे से पूछकर परिणाम की तुलना कर लेते थे।

एक निर्मल रात को फुक्स सो रहा था और मैं उनीदे के कारण खिन्न होकर निरीक्षण करने लगा। स्पष्ट है कि आवश्यक साज-सामान, अश-तालिका के बिना ऐसे निरीक्षण के परिणाम की अचूकता सन्देहपूर्ण ही हो सकती हैं, फिर भी एक बात मै पूरी तरह से निश्चित कर पाया – हम उसी रात को तिथि-रेखा को लाघ रहे थे।

मेरे नौजवान दोस्त, शायद आपने यह सुना होगा कि इस स्थान पर सागर अपने को किसी विशेष रूप मे प्रस्तुत नही करता और इस रेखा को भी केवल मानचित्र पर ही देखा जा सकता है। किन्तु समुद्र-यात्रा की सुविधा के लिये यहा कलेडर से कुछ खिलवाड किये जाते ह। पश्चिम से पूरब की ओर समुद्र-यात्रा करते समय एक ही तिथि को दो बार गिना जाता ह और पूरब से पश्चिम की ओर जाते हुए इसके उलट किया जाता है – एक दिन बिल्कुल छोड दिया जाता है और 'कल' के बजाय "परसो माना जाता हे।

सुबह होने पर मैंने फुक्स को जगाया ओर सलाम दुआ के बाद उससे कहा –

"फुक्स, यह ध्यान मे रखिये कि हमारे यहा आज नही, कल हैं।"

वह आखे फाड-फाडकर मुझे देखने लगा। सहमत नही हुआ।

"यह आप क्या कह रहे है क्रिस्तोफोर वोनीफात्येविच,' वह बोला। 'किसी और बात मे आपसे बहस नही करूगा, किन्तु हिसाब मे आप मुझसे बाजी नही मार सकते !"

मैंने उसे बात स्पष्ट करने का प्रयास किया, किन्तु समझ गया कि नाविकी

के नान के विना यह वात उसके पल्ले नही पडेगी। फिर व्याख्यान देने के लिय न तो उचित वातावरण था आर न मूड ही। हा, व्यथ के वाद विवाद मे वचने के लिये मैंने दिनो की गिनती करने की ही मनाही कर दी। अगर हम कही पहुच गये, वच गये, तो वहा हम लोग दिन ओर तिथि भी वना देगे किन्तु देखा जाये, तो यहा मागर मे इस वात से कोई अन्तर नही पडता था कि शार्क कब हमे अपना निवाला वनाती है वीते हुए कल या आनेवाले कल को, तीन तारीख या छ तारीख को।

सक्षेप मे यह, जसा कि किस्सो-कहानियो म कहा जाता है, मालूम नही बहुत ममय तक हम तैरते रहे या थोडे ममय तक, किन्तु एक मुबह को मेरी आख खुली, तो क्षितिज पर धरती की झलक मिली। वाह्य रेखाओ म ऐसे लगा, मानो सडविच द्वीप हो। शाम होते तक निकट पहुच गये – वही था हवाई द्वीप।

कहना चाहिये कि किस्मत ने माथ दिया। वहुत अच्छी है यह जगह तो। यह सही है कि पुराने जमाने मे यहा किमी ने किसी को खा लिया था। कप्तान कूक को खा लिया गया था

किन्तु अव तो वहुत समय से वहा के स्थानीय लोग लुप्त हो चुके है, गोरो के खाने के लिये कोई नही और गोरो को खानेवाला कोई नही है। इसलिये मव मामला ठीक है। वाकी चीजो मे तो वहा स्वर्ग है – वनस्पति वडी ममृद्ध है, अनानास, केलो और ताड के पेडो की भरमार है। सबसे वडी चीज तो उआइकीकी तट है। दुनिया भर से लोग वहा नहाने के लिये आते है। ममुद्र-तरग अद्भुत है। वहा के लोग तख्तो पर खडे रहकर तरगो पर फिसला करते थे।

स्पष्ट ह कि ऐसा भी कभी होता था फिर भी शावाश ह उन्ह – खडे खड फिसलते थे! और हम? लेटे हुए थे, बिल्ली के बच्चो की तरह हाथो-परो के बल रेगते थे। मुझे तो वडा अटपटा सा भी लगा। मो मै तनकर सीधा हो गया, बाहे दाये-बाये कर ली और कल्पना कीजिये – खडा रह गया। बहुत वढिया ढग से खडा रह गया!

तव फुक्स भी अपने तख्ते पर खडा हो गया। वह टोपी थामे था, ताकि उड न जाये आर अपने को सन्तुलित करता था। मो हम इस तरह, मानो ममुद्र के देवताओ की भाति महासागर की ऊची लहरो, फेन के छीटो मे वढते जा रह थे। तट अधिकाधिक निकट आता जा रहा था, लहर फटी, बिखर गयी और हम मानो बिना पहियो की हिमगाडी पर मवारी करते हुए तट पर पहुच गये।

बारहवा अध्याय,

जिसमे गपोड्शव और फुक्स छोटा सा कन्सर्ट पेश करते हैं और उसके बाद जल्दी से ब्राजील पहुचना चाहते हैं

तट पर बगलो मे रहनेवाले और नहाने के सूट पहने हुए लोगो ने हमे घेर लिया। वे हमे बहुत ध्यान से देखते थे, तालिया बजाते थे, फोटो खींचते थे और सच तो यह है कि हम बहुत ही दयनीय मे लग रहे थे। वर्दियो और विशेष चिह्नो के बिना हमे बडा अजीब-अजीब-सा प्रतीत हो रहा था। इतना अटपटा लग रहा था कि मैने अपना नाम और ऊची सामाजिक स्थिति छिपाने तथा एक तरह से अज्ञात रहने का निर्णय किया।

जी, हा। सो मैंने होठो पर उगलिया रखी और फुक्स को सकेत से यह बताया – चुप रहिये। किन्तु मैं कुछ ढग से ऐसा नही कर पाया, अजीब सा ऐसा सकेत हो गया मानो मैने हवा मे चुम्बन उडाया हो तट पर खुशी की एक नयी लहर सी दौड गयी, तालिया बजी, सब चिल्ला उठे –

'बहुत खूब! शाबाश!'

मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा था, किन्तु ऐसा दिखावा कर रहा था मानो कोई हैरानी ही न हो रही हो, चुप्पी साधे था और स्वय इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि आगे क्या होगा।

इसी समय कोट-सा पहने हुए एक नौजवान हमारे पास आकर लोगो को बताने लगा –

"यद्यपि इस प्रकार की धारणा फैली हुई है कि सैडविच द्वीपो के स्थानीय लोग सभ्यता के विकास-काल से लुप्त हो गये है, तथापि यह बात सही नही है।

ऊआइकीकी स्नान-तट के प्रबन्धको ने जनता को आनन्द का अवसर प्रदान करने के लिये यहा के दो स्थानीय लोगो को ढूढ निकाला हे, जिन्होंने अभी-अभी प्राचीन राष्टीय खेल को आपके मामने वहुत सुन्दर ढग से प्रस्तुत किया है।"

में सुन रहा था, मौन साधे था और फुक्स भी चुप था। कोट पहने हुए वह नौजवान भी कुछ देर को चुप रहा ओर फिर ऐसे वोलने लगा मानो पुस्तक पढ रहा हो –

"सैडविच द्वीपो के स्थानीय लोग, हवाई के रहनवाले या जिन्हे अभी तक कानाकी भी कहा जाता हे, सुघड-सुडौल शरीर और नमदिलवाले लोग हे और सगीत का गुण उन्हे प्रकृति की ओर से मिला होता है "

मने इस वर्णन को अपने पर लागू किया, तो लगा कि बात कुछ बनती नही। मैं नर्मदिल हू, यह तो ठीक हे, किन्तु जहा तक सुडोलता और सगीत के गुण का प्रश्न है, तो यह व्यर्थ की वात है। मेन आपत्ति करनी चाही, पर चुप्पी लगा गया। वह उसी उत्साह से कहता जा रहा था –

"ये कानाकी आज शाम को हवाई के गिटारो पर कन्सर्ट पेश करेगे। इसके लिये ग्रीष्मकालीन थियेटर के टिकट-घर से टिकट खरीदे जा सकते ह, टिक्ट विशेष महगे नही है, बरामदे मे नाच की व्यवस्था है, कैन्टीन खुला रहेगा, शीतलता प्रदान करनेवाले पेय उपलब्ध होंगे '

सो, ऐसी वात है। उसने कुछ और भी कहा, इसके बाद हमारे हाथ थामकर एक ओर को ले गया और पूछा –

"तो कैसा रहा?"

"कुछ बुरा नही," मैने उत्तर दिया, "आभारी हू आपका।"

"तो सब कुछ ठीक है! कृपया यह वताइये कि आप ठहरे कहा ह?"

"अभी तक तो शान्त महासागर मे, किन्तु आगे क्या होगा, मालूम नही। सच बात तो यह है कि मुझे कुछ अच्छा नही लग रहा हे '

'यह आप क्या कह रहे ह!" उसने आपत्ति की। ''शान्त महामागर' तो बहुत ही वढिया होटल है। उससे बेहतर तो आपको शायद ही मिलेगा। आप मरी बात का विश्वास कीजिये। क्षमा चाहता हू, किन्तु अब हमे चलना चाहिये। आध घण्टे बाद कार्यक्रम शुरू होनेवाला है।"

मो वह हमे कार मे बिठाकर कही ले गया। वहा हमारे हाथो मे गिटार पकडा दिये गये, हमे फूलो से सजा दिया गया, रगमच पर ले जाकर पर्दे हटा दिये गये

मैंने देखा कि गाना पडेगा। किन्तु क्या गाया जाये? कोढ मे खाजवाली वात,

मे बुरी तरह घबरा गया और मुझे मारे गाने भूल गये। फुक्स यो तो दबग नौजवान था, वह भी चकरा गया, मेरी ओर देखता हुआ फुसफुसा रहा था –

शुरू कीजिये, निस्तोफोर बोनीफात्येविच आगे मैं खीच लूगा।"

हम दस मिनट तक चुपचाप बैठे रहे। हॉल म उपस्थित श्रोता बेचैन हो रहे थे, झल्ला रहे थे – कही हगामा ही न हो जाये। सो मैंने आखे मूद ली और सोचा – ' जो होना हो, सो हो तारो को झनझनाया और भारी मन्द्र स्वर मे गाने लगा –

"चरागाह मे पक्षी कोई बैठा था '

आगे क्या गाऊ मैं नही जानता था।

यही कुशल हुई कि फुक्स ने सहायता की – खूब जोर से अगली पक्ति खीची

' गाय निकट जा पहुची, करके धीमी चाल "

इसके बाद हम दोनो मिलकर गा उठे –

"उसने तो झटपट उस पक्षी की पकडी टाग
वाह री गाय, वाह री गाय, किया कमाल "

और आप कल्पना करे कि तालियो की गडगडाहट का तूफान सा आ गय

इसके बाद कार्यक्रम का सचालक रगमच पर आया।

'यह यहा का पुराना गाना है," उसने कहा, "जिसमे पक्षियो के शिकार के भूले-बिसरे ढग की चर्चा की गयी है। हवाई द्वीप के सगीत-भाव को बहुत ही अच्छी तरह स्पष्ट करता है "

सो ऐसी बात है। इसके बाद श्रोताओं के अनुरोध पर हमने और भी गाया, सिर झुकाया ओर दफ्तर मे चले गये। वहा हमे कार्यक्रम के लिये पैसे वि गये। हम बाहर निकले, कहा जाये? हम सागर की ओर वापस चल दिये। कुछ भी हो, सागर तो अपना घर ठहरा और स्नान-तट के लिये हमारी पोशाके भी बिल्कुल उपयुक्त थी।

"हवाई" के गीतों का कन्सर्ट

हम रेत पर चले जा रहे थे। तट पर कोई नही था। काफी देर हो चुकी थी। बाद मे हमे कोई दो व्यक्ति तो फिर भी बैठे दिखाई दिये। हम उनके पास जाकर उनसे बातचीत करने लगे। उन्होने प्रबन्ध और प्रबन्धको की आलोचना करते हुए कहा –

"शैतान ही जाने कि यह क्या किस्सा है। हम कलाकार है और हमने यहा हवाई के मूलवासियो के रूप मे अपने को प्रस्तुत करने का अनुबन्ध किया था। महीना भर तख्तो पर सागर मे फिसलने का अभ्यास किया, गाने याद किये और परिणाम आप स्वय ही देख रहे है "

अब सारी बात मेरी समझ मे आ गयी। मामला स्पष्ट करना चाहा, किन्तु अचानक इसी समय अखबार का एक टुकडा हवा के कारण मेरे पैरो के नीचे सरसरा उठा। मैने तो बहुत दिनो से अखबार हाथ मे ही नही लिया था। अवहेलना नही कर सका, उठा लिया। रोशनी के नीचे खडा होकर पढने लगा। विश्वास करेगे कि वहा एक फोटो छपा था और फोटो मे मेरा बडा सहायक सब्बल और उसके पास ही "बला दिखाई दे रहा था तथा ब्राजील के तट के समीप दुर्घटना का दुखद वर्णन था। फुक्स और मेरे बारे मे भी कुछ शब्द थे। शब्द भी तो कैसे! मेरी तो आखे भी छलछला आयी – कितने मर्मस्पर्शी शब्द थे "साहसी समुद्र-नाविक ", "लापते है '

सो, ऐसी बात है। अखबार मे यह विज्ञापन भी पास ही मे छपा हुआ था।

"शान्त महासागर के वायु-यातायात का उपयोग कीजिये। सयुक्त राज्य अमरीका और ब्राजील की नियमित उडाने।"

"सुनिये फुक्स," मैने कहा, "जाकर ब्राजील के लिये हवाई जहाज के टिकट खरीद ले और कुछ कपडो का भी आर्डर दे दीजिये। मेरे लिये फौजी जाकेट और ओवरकोट का और अपने लिये इच्छानुसार।"

फुक्स को काम करने का अवसर पाकर प्रसन्नता होती थी, वह भाग गया और मे तट पर उन बनावटी हवाई वासियो को बातो मे उलझाये रखने के लिये रह गया सोचा, नही तो ये थियेटर मे जा पहुचेगे, सारी कलई खुल जायेगी, झगडा होगा, यहा रुकना पडेगा, परेशानी होगी

"मेरी बात सुनिये," मैने उन्हे सुझाव दिया, "आज का दिन तो आपका यो भी नष्ट हो ही गया। इसलिये यहा बैठे रहने के बजाय आइये, हम नाव लेकर उस पर सैर करे। देखिये तो मौसम कितना सुहाना है, प्यारा-प्यारा, और चाद चमक रहा है "

सो उन्हे राजी कर लिया। इसी वक्त फुक्स लौट आया और उसने अपनी सफलताओ की सूचना देते हुए बताया–

"सूट बनाने का आर्डर दे दिया है, आज ही तैयार हो जायेगे, किन्तु टिकटो का मामला कुछ गडबड है, क्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच। कल शाम के लिये एक टिकट खरीद लिया है, दूसरा टिकट नही है, सब बिक चुके है "

"कोई बात नही," मैने कहा, "इस मामले पर हम बाद मे विचार कर लेगे और आइये, अभी तो हम नाव मे सैर करने चले।"

सो हमने नाव ली और नौका-विहार को चल दिये। और खूब सैर की। रात भर सैर करते रहे, पूरा दिन सैर करते रहे इर्द-गिर्द सब कुछ देख लिया और ठीक वक्त पर, जब वायुयान के उडने मे दो घण्टे शेष रह गये थे, वापस आ गये। उन कलाकारो से हमने विदा ली दर्जी के पास भागे गये और उस दुष्ट ने या तो शराब चढा ली थी या कोई ओर कारण रहा होगा किन्तु कुछ भी सिया नही था।

म उस पर बिगड उठा, उसे डाटने-डपटने लगा, किन्तु वह तो केवल हाथ झटकता रहा।

'क्षमा कीजिये," वह बोला, "मै तो कल आपकी राह देखता रहा, आपको कल ही आना चाहिये था। आज तो मेरे पास कुछ भी तैयार नही।'

मैंने देखा कि इस तरह के तर्क-वितर्क से कोई लाभ नही होगा।

"जो कुछ है, वही दो," मैंने कहा। "जाघिया पहने हुए तो मैं हवाई जहाज मे बैठने नही जाऊगा।"

सो उसने अलमारी को खोला, चीजो को उलटा-पलटा और एक बरसाती निकाली।

"तैयार चीजो मे से केवल यही बाकी रह गयी ह," उसने कहा। "पिछले साल एक भले आदमी ने इसका आर्डर दिया था, किन्तु अब तक लेने नही आया।"

मैंने उसे ध्यान से देखा – कपडा अच्छा और सिलाई फैशनदार थी।

"अच्छी बात है," मैने कहा, "म इसे ले लेता हू। जितने उचित समझे, इसके पैसे ले ले।" मै बरसाती लेकर चल दिया।

"आप इसे पहनकर तो देख लेते," फुक्स ने सलाह दी। "सम्भव है कि माप की न हो।"

मैंने अनुभव किया कि वह काम की सलाह दे रहा है। सो वही एक बरगद की छाया मे खडे होकर मैंने उस नयी बरसाती को खोला और पहना। मैंने देखा

कि एक नयी मुसीबत सामने आ खडी हुई है – वह भला आदमी, जिसने बरसाती का आर्डर दिया था, या तो मुझसे दुगुना लम्बा था, या फिर उसने लम्बे हो जाने की सम्भावना को ध्यान मे रखते हुए इतनी लम्बी बरसाती सिलवायी थी, कुछ कह नही सकता। किन्तु उसकी यह बरसाती मुझ पर ढग से फिट नही बैठ रही थी।

दूसरा कोई रास्ता भी तो नही था। वापस ले जाता, तो भी और कुछ चुनने को नही था, नीचे से काट देता, तो बडी भद्दी बन जाती। ऐसी बरसाती पहने हुए तो शायद मुझे हवाई जहाज मे नही चढने देते और ऐसे ही पहन लेने पर एक कदम भी चलना कठिन था, उसके पल्लुओ मे पाव उलझ सकता था। जल्दी से कुछ न कुछ सोचना जरूरी था। नही तो वायुयान उड जाता, टिकट बेकार हो जाता और मै वही अटका रह सकता था।

शाबाश है फुक्स को, उसने तरकीब निकाल ली।

"अजी, यह तो बहुत ही कमाल की बात है," वह बोला। "इस बरसाती को पहनकर तो एक ही टिकट मे हम दोनो यात्रा कर लेगे। कृपया अनुमति दीजिये, थोडा नीचे बैठ जाइये ऐसे मुझे कधो पर चढने दीजिये।"

सो वह मुझ पर सवार हो गया, बरसाती को जैसे-कैसे पहन लिया, सारे बटन बन्द कर लिये और उसे ठीक करते हुए बोला –

"चल दीजिये सो भी जल्दी-जल्दी, नही तो पुलिसवाला हममे दिलचस्पी लेने लगा।'

हम चल दिये।

हवाई अड्डे पर आये हवाई जहाज के पास पहुचे। फुक्स ने टिकट दिखाया, हमे वायुयान मे ले जाकर सीट दिखा दी गयी। सो किसी तरह से बैठ गये – यो कहना चाहिये कि मैं बैठ गया, जबकि फुक्स सीट पर खडा रहा और उसका सिर छत को छू रहा था।

मैंने दरार मे से झाका – बाकी मुसाफिर भी अपनी सीटो पर बैठ चुके थे। हमे छोडकर कुल पाच व्यक्ति और थ। हवाई जहाज मे बडी सफाई थी, दर्पण लगे थे, सभी तरह की सुविधाए थी और यात्री भी ढग के थे

कुछ देर बाद इजन गडगडा उठे, हवाई जहाज भागने लगा, पानी पर छप-छप हुई और वह हवा मे उठ गया। हम उड रहे थे, सभी ओर रात थी। आकाश मे सितारे थे। इजन शोर मचा रहे थे और शेष तो शान्ति छायी थी। यात्री सो गये थे, मेरी भी आख लग गयी, केवल फुक्स ही जाग रहा था।

सुबह तक हम ऐसे ही उडते रहे और सुबह होने पर जागे। मै सुरगम मे

घटनाए
मेरे पाइप के धुए ने ऐसा आभास दिया मानो आग लग गयी हो

से देख रहा था, कान लगाकर सुन रहा था – कक्ष मे स्पष्ट सजीवता दिखाई दे रही थी, सभी खिडकियो के साथ चिपके हुए थे, एक-दूसरे को कुछ दिखा रहे थे और उनके सकेतो आदि से ऐसा लग रहा था कि वे कौर्डिलेरा पर्वतमाला के दृश्यो से आनन्दित हो रहे है। फुक्स भी खिडकी की तरफ झुक गया और परिस्थितिवश मुझे ऐसे दृश्य की अवहेलना करनी और किसी अपराधी की भाति मानो जेल जैसे अधेरे मे बैठना पड रहा था।

सो मेरे दिल को ऐसे ठेस भी लगी और ऊब भी अनुभव होने लगी। मैं अपने दिल को तसल्ली देने लगा – सोचा देखते रहे देखते रहे मैं भी अपना मन बहलाने का कोई साधन ढूढ लेता हू। मैंने पाइप निकाला, उसमे तम्बाकू भरा, सुलगाकर कश खीचने लगा और विचारो मे खो गया। अचानक मुझे कक्ष मे घबराहट की अनुभूति हुई। यात्री अपनी सीटो से उठ गये थे, शोर मचाते थे और बार-बार "आग" शब्द सुनाई पड रहा था।

मै अनुभव कर रहा था कि फुक्स मेरी बगलो मे ऐसे एडिया मार रहा है, जैसे गधे की बगलो मे एडिया मारी जाती है। मैंने उसे चुटकी काटी और स्वय देखने के लिये सुराख मे से झाका और सब कुछ समझ गया। मेरे पाइप का धुआ सभी सूराखो मे से निकल रहा था और सचमुच आग लग जाने जैसा प्रभाव पैदा कर रहा था।

तेरहवा अध्याय,

जिसमे कप्तान गपोडशख बडी होशियारी से अजगर से निपटते और अपने लिये नाविको की नयी जाकेट बनाते ह

मैंने झटपट राख झाडी, पाइप को जेव मे डाला और एडी मे आग बुझा दी। चुपचाप वैठ गया। इसी वात हवावाज ने केविन मे झाका। मुझे थोडी-मी तसल्ली हुई। सोचा, कुछ भी हो, अनुभवी आदमी है, इससे भी अधिक अटपटी स्थितियो से इसका वास्ता पडा होगा, घवराया नही होगा, इन लोगो को शान्त कर देगा और सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा किन्तु कल्पना कीजिये, वह तो खुद ही घबरा गया।

मैंने देखा कि उसके चेहरे का रग उड गया है, वह घबराकर चिल्ला उठा और झटपट उसने किसी लीवर को जोर से खीचा। इसके फौरन वाद इजनो का शोर बन्द हो गया और केवल हवा ही सीटी बजाती सुनाई देने लगी। इसके पश्चात ऊपर की ओर कही ऐसा धमाका हुआ मानो तोप दगी हो, केविन जोर से हिला-डुला, तेजी से आगे वढा और धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा।

मुसाफिर वेहद हैरान थे, मगर मै तो फौरन भाप गया कि क्या मामला है। अव तो इस चीज मे कोई हरान नही होगा, किन्तु उस समय यह प्रविधि के क्षेत्र मे नवीनतम उपलब्धि थी – हवाई जहाजो मे कुछ ऐसी व्यवस्था की गयी थी। इसे "नीचे जाओ" कहा जाता है। यदि कोई दुर्घटना हो जाती है – विस्फोट होता है, आग लगती है या पख अलग हो जाता है – तो हवावाज किसी एक ही बटन को दबाकर केविन को अलग कर देता है और वह पैराशूट की मदद मे अपने आप ही नीचे उतर जाता है। इसमे तो दो राये नही हो सकती कि यह उपयोगी व्यवस्था है, किन्तु हमारे हवाई जहाज के मामले मे स्पष्टत उसका समय मे पहले उपयोग किया गया था।

कोई दूसरा मोका होता, तो मै हवावाज से वहस करता, उसे उसकी भूल वताता, किन्तु यहा तो आप खुद समझते है, मैं कुछ भी नही कर सकता था। हवाई जहाज अपने हवाई मार्ग पर आगे उडता जाता था, केवल पंख चमक रहे थे। हम धीरे-धीरे नीचे होते जाते थे। मेरे पाइप द्वारा छोडा गया धुआ कुछ कम हो गया था, किन्तु यात्री तो शान्त होने का नाम ही नही ले रहे थे। इसके उलट, मैने देखा कि घवराहट वढती जा रही है और कहा जा सकता है कि वह दवी-घुटी वदहवासी मे वदलती जाती थी। फुक्स भी वेहद घवरा रहा था, रह-रहकर अपनी सीट से उठता था।

केवल मैं ही शान्त था और समझ रहा था कि अव आगे जाने की वात तो खत्म हो गयी, टिकट अव आगे काम नही आयेगा। वैसे भी हमम से एक टिकट के विना था और केविन के उतरने पर हमे अपनी सफाई देनी होगी। यह तो अच्छी वात नही थी। पूछ-ताछ शुरु हो जायेगी, अपराधी की खोज होने लगेगी, मामला यह रुख ले लेगा कि दुर्घटना के लिये मैं ही जिम्मेदार हू और तव किसी तरह भी पिड नही छूटेगा।

सो मैन कोई पराया व्यक्ति होन का ढाग करन का निर्णय किया। इसक लिय मौका भी वहुत अच्छा था — यात्रियो का ध्यान वटा हुआ था, हर कोई अपने वारे मे सोचता था, अधिकतर के तो होश-हवास ही गायव थे और फिर वाहर निकलने के लिये केविन की छत मे दरवाजा भी विल्कुल हमारे ऊपर था।

मेरे नौजवान दोस्त, आपको आमेजन नदी मे कभी यात्रा नही करनी पडी? नही। वहुत अच्छी वात है और इसके लिये यत्न भी नही कीजिये। मै ऐसा करने की सिफारिश भी नही करूगा।

लेकिन जानते ह कि मुझे ऐसा करना पडा।

फुक्स और म द्वार से वाहर निकले और हमने इधर-उधर नजर दौडायी। देखा कि हमारे नीचे नदी है और केविन नीचे-नीचे होता जा रहा है। आखिर वह नदी पर उतर गया।

मैं द्वार पर से झुककर चिल्लाया —

"स्वागत है आपका, महानुभावो! ऐसे निर्जन और दुर्गम स्थानो पर आपका स्वागत है।"

अब यात्री भी एक-एक करके बाहर निकलने लगे। उन्होने देखा कि हवाई जहाज का केबिन सही-सलामत नदी की सतह पर उतर गया है, इसलिये वे शान्त होने और आखे फाड फाडकर हमारी ओर देखने लगे। मैंने अनुभव किया कि अब

जान पहचान करने का समय आ गया है। आप तो समभते ही है कि म उन्हे सचाई नही बता सकता था, किसी तरह इस स्थिति से बच निकलना था।

"तो महानुभावो," मैंने कहा, "मे आपको अपना परिचय देने की अनुमति चाहता हू। मै हू भूगोल का प्रोफेसर क्रिस्तोफोर गपोडशख। वैज्ञानिक लक्ष्य मे यहा यात्रा कर रहा हू। यह मेरा नौकर और पथ-प्रदर्शक रेड इडियन फुक्स ह। तो हमारा परिचय हो गया। मे यहा एक अर्से मे रह रहा हू यहा की जिन्दगी का आदी हो गया हू। आशा करता हू कि आपको मेरे मेहमान होने मे कोई आपत्ति नही होगी।"

"कोई आपत्ति नही, कोई आपत्ति नही," उन्होन जवाब दिया। हम बडी खुशी है।"

किन्तु अपनी आखो से मैं यह देख रहा था कि उन्हे विश्वास नही हो रहा है। कनखियो से हमे देख रहे ह बात समभ मे भी आती थी – जाघिया पहन हुए व्यक्ति भला क्या खाक प्रोफेसर होगा? मैने अनुभव किया कि इन लोगो को बातचीत मे लगाना चाहिये, कोई महत्वपूर्ण बात कहनी चाहिये उनका ध्यान किसी दूसरी तरफ ले जाना चाहिये।

"क्षमा कीजिये,' मैंने पूछा, 'क्या सभी यात्री यहा है?

उन्हाने एक-दूसरे की ओर देखा और इसके बाद किसी ने कहा –

"एक लम्बा-तडगा महानुभाव और भी था।'

"हा था, हा था तो," दूसरो ने पुष्टि की, वह तो जिस आग लग गयी थी

"सच! यह बडी दिलचस्प बात है। फुक्स,' मैंने कहा, 'नीचे जाकर देखो कि उस मुसीबत के मारे को किसी तरह की सहायता की तो आवश्यकता नही।"

फुक्स केबिन मे गया, कुछ देर बाद बाहर निकला और चुटकी भर राख देते हुए बोला –

"बस, यही कुछ बाकी बचा है।"

"ओह," मैंने कहा, "कितने दुर्भाग्य की बात है! लगता है कि लम्बा महानुभाव पूरी तरह से जल गया। पर अब हो ही क्या सकता है, भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे आइये, महानुभावो, अब हम पराशूट को बाहर निकाल ले। वह फिर हमारे काम आ सकता है "

सो हमने रस्सिया अलग-अलग कर ली और एक महाजाल की तरह उसे खीचने लगे। मै आदेश देता –

"एक दो, तीन, खीचो! थोडा और जोर लगाओ "

मन देखा कि व तो बहुत कोशिश कर रहे है, किन्तु आदत न होने के कारण उन्हे बहुत सफलता नही मिल रही थी।

अचानक क्या देखा कि उन्होने रस्सिया छोड दी हे, पीछे, कहा जा सकता है कि पृष्ठ भाग की तरफ, भागने लगे हे, वहा जमघट बनाकर खडे हो गये और डर से काप रहे हे। फुक्स तो केबिन के द्वार मे ही घुस गया, वहा से बाहर झाकता और पैराशूट की तरफ इशारा करता था। यात्री-महिला तो पजो के बल खडी हो गयी, उसने उगलिया फैला ली, हाथो को ऐसे हिला रही थी माना उडना चाहती हो और चिल्लाती थी –

' ऊई मा!

मेने मुडकर देखा – सचमुच ' मा" की याद आती थी। बात यह थी कि एक अजगर, बहुत ही बडा अजगर, तीसेक मीटर लम्बा अजगर पैराशूट मे आ घुसा था। वह वैसे ही गुडी-मुडी हो गया था, जैसे अपने घोसले मे, हमारी ओर देखता था मानो बलि चुन रहा हो।

मेरे पास कोई हथियार नही था, मुह मे सिर्फ पाइप ही था

"फुक्स, मै चिल्लाया, "कोई भारी चीज दो!"

उसने द्वार मे से सिर बाहर निकाला, कोई गोला-सा दिया। मैंने उसे हाथ मे लेकर उसके वजन का अनुमान लगाया – खासा वजनी था।

"और दीजिये!" मैं चिल्लाया ओर खुद निशाना साधकर तैयार खडा हो गया

अजगर ने भी निशाना साध लिया। गुफा की तरह मुह खोल लिया मैंने हाथ घुमाया और गोला उसके मुह मे फेक दिया।

लेकिन अजगर के लिये ऐसा गोला क्या मानी रखता है? ऐसे निगल गया मानो कोई बात ही न हुई हो, उसके माथे पर बल तक नही पडा। मैंने दूसरा गोला उधर फेका वह उसे भी निगल गया। मै केबिन-द्वार की ओर लपका, चिल्लाकर फुक्स से कहा –

"जो कुछ भी है, जल्दी से दीजिये!"

अचानक मुझे पीठ पीछे भयानक फुकार सुनाई दी।

मैं मुडा, देखा कि अजगर फूलता जाता है, फुकार छोडता है और उसके जबडे मे से फेन निकल रहा है

"बस, अभी झपटेगा," मैंने सोचा।

किन्तु कल्पना कीजिये कि ऐसा करने के बजाय उसने अचानक गोता लगाया और गायब हो गया।

घटनाएं

उल्लेखनीय बातें

आग बुझानेवाले दो
उपकरणों से अजगर
पर विजय प्राप्त
की गयी

आग बुझाऊ
उपकरण

अजगर की
केंचुली

अजगर के

हम सभी बुत बनकर इन्तजार करने लगे। एक मिनट, दूसरा मिनट गुजरा केबिन के पृष्ठ भाग मे खडे हुए यात्री हिलने-डुलने और खुसुर-फुसुर करने लगे। अचानक वह महिला फिर से पहलेवाली मुद्रा मे खडी होकर पूरे आमेजन को सुनाती हुई चिल्लायी –

"ऊई मा! "

अब हमने क्या देखा कि बहुत बडे आकार, भयानक शक्ल और एक्दम अद्भुत रगोवाला एक चमकता हुआ गुब्बारा पानी के ऊपर तैर रहा ह। वह फूलता जा रहा था

मने सोचा – यह भी एक नया मामला है! भला यह क्या हो सकता है? दहशत-सी महसूस हुई। बाद मे देखा कि इस गुब्बारे की सजीव पूछ हे। वह पानी पर दाये-बाये छटपटा रही थी मैने जैसे ही पूछ देखी, वैसे ही सारी बात मेरी समझ मे आ गयी। गोले तो आग बुझानेवाले थे। वे दोनो अजगर की भोजन-नली मे मिले, वहा एक-दूसरे से टकराये, फटे और उन्होने अजगर को अपने फेन से फुला दिया। आप तो जानते ही ह कि आग बुझानेवाले इन गोलो मे कितना अधिक दबाव होता हे। सो अजगर फूल गया उसमे तैरने की अतिरिक्त क्षमता आ गयी, वह अपनी अटपटी स्थिति को अनुभव करता था, डुबकी लगाना चाहता था, मगर पेट ऐसा करने नही देता था

मेरा डर तो जेसे क्षण भर मे हवा हो गया। मैं केबिन-द्वार के पास गया –

फुक्स,' मने कहा, बाहर निकल आइये। खतरा जाता रहा।"

फुक्स बाहर निकला, अभूतपूर्व दृश्य को देखने लगा ओर मुसाफिरो ने ज्यो ही यह सुना कि डर की बात नही रही, झटपट एक-दूसरे को बधाई देने लगे, मुझसे बडे तपाक से हाथ मिलाने लगे। बस, यही सुनाई दे रहा था –

"धन्यवाद, प्यारे प्रोफेसर! उसके साथ तो आप खूब निपटे।"

' अजी, यह कोई बात नही। यहा, आमेजन नदी पर आदमी हर चीज का आदी हो जाता है। अजगर तो मामूली चीज है, यहा तो इमसे बढकर भी बहुत कुछ हाता है '

तो इमके बाद मेरी धाक जम गयी। सौभाग्य से कपडो की समस्या भी हल हो गयी। यात्री-महिला के पास सूई-धागोवाला डिब्बा था। मैंने सूई लेकर अपन लिये पैराशूट से जाकेट सी ली। कपडा तो बहुत ही बढिया था और बटनो की जगह मैंने केबिन से उतारे हुए कावलो का उपयोग किया। अच्छी चीज बन गयी, मजबूत और सुन्दर, किन्तु ढिबरीकश के बिना उसे उतारना सम्भव नही था।

खैर, यह तो मामूली-सी बात थी, आदमी उसका आदी हो सकता है। फुक्स के लिये दुर्घटना की स्थिति में काम आनेवाले फालतू सामान से तैयार ओवर-आल मिल गया, बिल्कुल वैसा ही, जैसा उसके पास पहले था किन्तु कुछ नया।

इसके बाद हमने पाल बनाये मस्तूल लगाये और चालन चक्र बनाया। यात्री ड्यूटी देते थे, हमारा पोत चलता जाता था हम कछुए और मछलियां पकड़ते थे। वह महिला खाना पकाना सीख गयी कुल-मिलाकर सब ठीक ही था किन्तु पोत ढग का नहीं था – डोलता था और उसकी चाल भी धीमी थी।

सो, ऐसी बात है। फिर भी हम बढ़ते जा रहे थे जैसे तैसे पूरब की ओर अटलांटिक महासागर के तटों की ओर बढ़ते जा रहे थे। हमारा पोत डेढ़ महीने तक ऐसे ही चलता रहा। क्या कुछ नहीं देखा हमने रास्ते में बन्दर भी बेल भी और रबड़ के पेड़ भी! जाहिर है कि जिज्ञासु यात्री के लिये यह सब दिलचस्प, किन्तु कष्टप्रद है!

वहां तो जलवायु यों भी बहुत अच्छा नहीं है और फिर हम बरसात के मौसम में वहां थे। दिन-रात कुहासा होता था, ऐसे लगता था मानो हमाम में हों, बेहद गर्मी रहती थी, सभी ओर मच्छरों के बादल उड़ते थे। इतनी ही खैरियत थी कि किसी को बुखार ने नहीं धर दबाया।

चौदहवा अध्याय,

जिसके आरम्भ मे कप्तान गपोड्शख विश्वासघात का शिकार होते हैं और अन्त मे फिर से "बला" पर पहुच जाते हैं

आखिर हम पारा बन्दरगाह मे पहुच गये। लगर डाला और पोत से उतरे। ईमानदारी की बात यह है कि नगर तो वह बहुत अच्छा नही है, ऐसे ही है। गन्दा धूलभरा, गर्मी से तपता हुआ और सडको पर कुत्ते घूमते है। किन्तु आमेजन के जगलो और घने वनो के वाद यह एक तरह से सस्कृति का छोटा-सा केन्द्र प्रतीत हुआ। वैसे तो वहा की सस्कृति अपने ढग की है – लोग बडे क्रोधी और लडने-मरनेवाले है चाकू-छुरिया और पिस्तोले लिये घूमते हैं, सडक पर जाते हु डर महसूस होता है

जी, ऐसी बात है। सो हमने हजामत बनायी कठिन यात्रा के वाद नहाये-धोये। हमारे साथियो ने हमसे विदा ली, जहाजो पर बैठे और जहा-कहा चले गये। हमने भी वहा से जितनी जल्दी सम्भव हो सकता था जाना चाहा, किन्तु इसमे सफलता नही मिली – जरूरी कागजो के बिना तो जाने नही देते। सो हम छिछले पानी मे फसे केकडो की भाति पराये तट पर घर-बार के बिना, किसी खास काम और जीवन-यापन के साधनो के बिना रह गये। सोचा कि कोई काम करने लगे – लेकिन वहा काम कहा मिल सकता था! रबड के बागानो मे ही खाली जगहे थी, लेकिन इसका मतलब फिर से आमेजन जाना था। वहा हम हो आये थे, इसलिये दूसरी बार जाने को मन नही हो रहा था।

शहर मे इधर-उधर कुछ देर चक्कर लगाने के बाद एक छायादार सडक पर ताड के पेड के नीचे स्थिति पर विचार करने बैठ गये।

अचानक एक पुलिसवाला आया और उसने हमें गवर्नर के यहा चलने के लिये आमन्त्रित किया। जाहिर है कि यह बडी इज्जत की बात थी, किन्तु मुझे ऐसे औपचारिक स्वागत-सत्कार और ऊचे अधिकारियो से मिलना-जुलना बहुत पसन्द नही है। किन्तु यहा तो कुछ हो ही नही सकता था – अगर बुलाया गया है तो जाना चाहिये।

सो हम पहुचे। देखा कि भैसे जैसा एक मोटा आदमी हाथ मे पखा लिये नहाने के टब मे बैठा है, दरियाई घोडे की तरह फूत्कार कर रहा है, पानी छपछपा रहा है, सुड-सुड कर रहा है। समारोही वर्दी पहने उसके दो सहायक अगल-बगल खडे थे।

"आप लोग कौन है, कहा से आये है?" गवर्नर ने पूछा।

मैंने मोटे तौर पर सारी स्थिति बतायी, यह स्पष्ट किया कि ऐसा किस तरह हुआ और अपना परिचय दिया।

"यह मेरा जहाजी फुक्स है, जिसे मैंने काले मे नौकर रखा और मैं कप्तान गपोडशख हू। शायद मेरा नाम तो सुना होगा?'

गवर्नर ने जैसा ही यह सुना, जोर से हाय-वाय की सिर तक पूरी तरह पानी मे डुबक गया, पखा गिरा दिया, पानी मे बुलबुले उठाने लगा उसे उच्छू आ रही थी, वह तो मरते-मरते बचा। भला हो सहायको का, जिन्होने उसे डूबने नही दिया, बचा लिया। उसने सास ली, खासा खासा और उसका चेहरा लाल हो गया।

"क्या कहा, कप्तान गपोडशख? वही गपोडशख? तो अब क्या होगा? गडबड, आग की घटनाए, क्रान्ति, बडे अधिकारियो की ओर से डाट-डपट? जाहिर है कि हम आपके साहस पर मुग्ध है, व्यक्तिगत रूप से मुझे आपके विरुद्ध कोई शिकायत नही, किन्तु सरकारी अधिकारी के नाते आपको फौरन हमारा इलाका छोडने का हुक्म देता हू और इस मामले मे मैं किसी तरह की अडचन नही डालूगा सहायक, कप्तान को यहा से जाने का अनुमति-पत्र दे दीजिये।"

सहायक तो हुक्म बजाने को उत्सुक था, उसने झटपट कागज तैयार किया, मुहर लगायी और मुझे दे दिया। मुझे तो इसी की जरूरत थी। मैंने सिर झुकाया और सलामी दी।

"धन्यवाद, गवर्नर साहब!" मैंने कहा। "इस कृपा के लिये बहुत आभारी हू। आपके आदेश से बहुत सन्तुष्ट हू। अब जाने की अनुमति चाहता हू।"

मुडा और बाहर चला गया। फुक्स भी मेरे पीछे-पीछे था। हम सीधे पोत-

घाट की ओर चल दिये। अचानक मुझे अपने पीछे कुछ शोर और पैरो की धम-धम सुनाई दी। मै मुडा, तो क्या देखा कि कोई चालीस आदमी गैरफौजी कपडे पहने, चौडी-चौडी टोपिया ओढे, घुटनो तक के जूते डाटे, छुरिया और छोटी मशीनगने लिये हुए हमारे पीछे भागे आ रहे ह, धूल उडाते है और पसीने से तर-ब-तर हो रहे ह।

'वे रहे, वे रहे!' ये लोग चिल्ला रहे थे।

समझ गया कि हमारा पीछा कर रहे ह। क्षण भर मे मने अपनी और उनकी ताकत का अनुमान लगाया और इस नतीजे पर पहुच गया कि भागने के अलावा कोई चारा नही। तो हम भागने लगे एक केबिन के पास पहुच गये। मेरा दम फूल गया था, मैं सास लेने के लिये रुका, दिल धक-धक कर रहा था, थक गया था। सो तो होना ही था – एक तो बडी उम्र और फिर सख्त गर्मी। फुक्स को इस कोई फर्क नही पडा था, वह दौडने मे तेज था। फिर भी मैने देखा कि वह इन घटनाओ से बहुत दुखी हो गया ह, उसके चेहरे का रग उडा हुआ है, बेचैनी से इधर-उधर देख रहा है। किन्तु वह सहसा रग मे आया और बडी घनिष्ठता से मे पीठ थपथपाते हुए बोला –

'कप्तान, आप यहा खडे रहिये। म अकेला ही अब दौडूगा और आपको कोई हाथ भी नही लगायेगा।"

और भाग चला केवल उसके तलुओ की ही झलक मिलती थी।

आपसे सच कहता हू कि फुक्स से इस तरह की हरकत की मैने उम्मीद नही की थी, मुझे तो कुछ दुख भी हुआ। सोचा, जो होगा, सो होने दो बचाव का एक ही रास्ता है – ताड वृक्ष पर चढ जाऊ। सो चढ गया। यह भीड अधिकाधिक निकट आती जा रही थी। मैंने पीछे नजर घुमायी, देखा कि व तो हट्टे-कट्टे, बडे गुस्सैल और उजड्ड किस्म के लोग ह। आपसे साफ कहता हू – मेरा दम निकल गया। इतना डर गया कि कमजोरी तक महसूस हुई। समझ गया कि अब आखिरी घडी आ गयी। 'अच्छा है कि यह जल्द ही हो जाये," मैने सोचा। ताड के साथ चिपक गया, लटक गया, दम साध लिया। मुझे सुनाई दिया कि वे बिल्कुल पास ही आ गये है, सू-सू करते हे, पावो से धम-धम कर रहे है। उनकी बातचीत भी मुझे सुनाई दे रही थी – उससे मैं समझ गया कि वे कौन लोग है। मैंने तो सोचा था कि गुडे और लुटेरे है खोपडियो के शिकारी है, किन्तु वास्तव मे पुलिसवाले थे, जिन्होंने साधारण कपडे पहन रखे थे। मालूम नही कि गवर्नर पर गर्मी का असर हुआ था या किसी दूसरी चीज का, किन्तु बाद मे उसने अपनी राय

थि
रेखाश अक्षाश
घटनाए
उल्लेखनीय बाते
भेस बदले हुए चालीस पुलिसवाले पीछा कर रहे
पोस्टर "छुए नही— मृत्यु।"

बदल ली थी, उसे अपनी कृपा पर अफसोस हुआ, हमे ढूढने और मौत के घाट उतारने का आदेश दे दिया था।

किन्तु मैंने देखा कि वे इस मामले मे देर कर रहे है। एक मिनट इन्तजार किया, दस मिनट इन्तजार किया, उन्होने मुझे नही छुआ। मेरी तो बाहे भी थ गयी, मुझे लगा कि वे और न सह सकेगी और मैं गिर पडूगा। सोचा, हर हालत मे अन्त तो एक ही होना है। ताड से नीचे उतर आया और आप कल्पना करे कि उन्होने मुझे हाथ नही लगाया। खडा रहा, राह देखता रहा – मुझे उन्होने कु नही कहा। मे धीरे-धीरे चलता गया ओर वे तो ऐसे दूर भी हट गये मानो मैं आग होऊ।

तब मैं फिर से टहलता हुआ छायादार सडक पर पहुच गया, फुक्स के साथ ताड के जिस पेड के नीचे बैठा था, वही बैठ गया और ऊघ गया। ऐसा ऊघा कि मुझे पता ही नही चला कि रात गुजर गयी। पौ फटने पर फुक्स ने आकर मुझे जगाया और अभिनन्दन करते हुए बोला –

"देखा कप्तान, उन्होने आपको नही छुआ न!"

"लेकिन क्यो, बताइये तो?"

"अभी बताता हू," वह हसते-हसते मेरी पीठ के पीछे गया और उसने मेरी पीठ पर से खोपडी, बिजली के निशान, दो हड्डियो और इस शीर्षकवाला पोस्टर उतारकर दिखाया – छुए नही – मृत्यु!"

यह पोस्टर कहा से मेरी पीठ पर चिपक गया था, इसके बारे मे मैं कुछ नही कह सकता, किन्तु सोचता हू कि छायादार सडकवाले केबिन मे ट्रासफोर्मर लगा हुआ था, वही से पोस्टर चिपका होगा। और कही से नही चिपक सकता था

सो ऐसी बात है, जनाब। तो हम खूब हसे, बातचीत की। पता चला कि फुक्स ने व्यर्थ समय नही गवाया, वह जहाज पर जाने के टिकट खरीद लाया था। घाट पर मैंने अपना अनुमति-पत्र दिखाया और किसी तरह की आपत्ति के बिना हमे जाने दिया गया। इतना ही नहीं, अलग केबिन भी दे दिया गया और हमारे लिये शुभ यात्रा की कामना भी की गयी।

हम ठाठ से वहा जम गये और यात्रियो के रूप मे रियो-द-जानेरियो रवाना हो गये।

सही-सलामत वहा पहुचकर जहाज से उतरे। पूछ-ताछ की।

पता चला कि हमारा "बला" पोत वही निकट ही तट पर आ लगा था। स्पष्ट है कि कुछ टूट-टाट गया था, किन्तु शाबाश है सत्रल को, उसने सब कुछ

ठीक ठाक करके पोत को घाट पर खडा कर दिया था और खुद सन्यासी की तरह जिन्दगी बिता रहा था। वह तो आदेश की प्रतीक्षा कर रहा था और आप स्वय ही समझते है, मैं उसे आदेश देता, तो कैसे!

सो फुक्स के साथ मैंने स्थानीय बग्घी – एक तरह की पट्टियोवाली टोकरी – किराये पर ली, बैलो पर चाबुक बरसाया और चल दिये। हम तट के साथ साथ जा रहे थे और स्थानीय रीति-रिवाजो का दुखद किन्तु शिक्षाप्रद चित्र देख रहे थे कोई दो सौ नीग्रो चीनी और कॉफी से भरी बोरिया गोदाम से तट पर लाते और पानी मे फेक देते थे – वहा बुलबुले उठते थे। सागर का पानी शरबत मे बदल चुका था, सभी ओर मक्खिया तथा मधुमक्खिया थी। हम देर तक यह देखते रहे। जानने की कोशिश की कि यह अजीब किस्म का कैसा मन-बहलाव है। हमे बताया गया कि चीनी के दाम बहुत गिर गये है, माल इतना अधिक है कि उसका क्या किया जाये, यह समझ मे नही आता और इसलिये इस ढग से अर्थव्यवस्था को सुधारा जा रहा है, जीवन-स्तर को ऊचा किया जा रहा है। थोडे मे यही कि सब कुछ ठीक-ठाक था, दूसरा कुछ हो ही नही सकता था।

तो ऐसी बात है। हम आगे चल दिये। क्या देखा कि हमारा सुन्दर 'बला' पोत तट पर खडा है, दृढ आदेश की प्रतीक्षा कर रहा है और कोई लम्बू उसके निकट घूम रहा है। बिल्कुल डाकू जैसा – छतरी जैसी टोपी पहने, बगल मे बडी छुरी लटकाये और झालरवाला पतलून चढाये। हमे देखते ही हमारी ओर लपका। ओह, मैंने सोचा, यह तो गला काट डालेगा।

किन्तु नही, उसने गला नही काटा। यह तो सब्बल था, जो यहा के जीवन का अभ्यस्त हो गया था, जिसने स्थानीय ढग से कपडे पहन रखे थे।

सो हम मिले, एक-दूसरे को गले लगाया, रोये भी। शाम को खूब बाते की – उसने अपने कारनामो की चर्चा की, हमने अपनी घटनाओ की।

तडके ही हमने पोत के पेंदे के नीचे लगे पच्चर हटाये, उसे पानी मे उतारा और झण्डा लहरा दिया। आपसे क्या छिपाना, मेरी तो आखे भी छलछला आयी थी। मेरे नौजवान दोस्त, अपने पोत के डेक पर होना तो बहुत ही खुशी की बात होती है। इससे भी अधिक खुशी की बात यह थी कि हमारा ध्येय आगे बढता जा रहा था। हम साहसपूर्वक अपनी यात्रा आगे जारी रख सकते थे। अब तो केवल रवाना होने की औपचारिकता ही पूरी करनी बाकी रह गयी थी।

यह काम मैंने अपने जिम्मे ले लिया। मैंने बन्दरगाह के सचालक को उनके रीति रिवाज के अनुसार सम्बोधित किया और उसे अपने कागजात दिये।

इस सचालक ने तो मुझे देखते ही मेढक की तरह तोबडा फुला लिया और चिल्लाने लगा –

"तो ये आप हं 'बला' पोत के कप्तान ? शर्म आनी चाहिये आपको! यहा आपके खिलाफ इतनी शिकायते ह। एडमिरल दातकाट ने शिकायत की है कि आपने कोई द्वीप तबाह कर दिया हे, ह्वेल की अवहेलना की हे गवर्नर ने सूचित किया है कि आप मनमर्जी से पारा बन्दरगाह स रवाना हो गये "

' यह क्या कह रहे हे आप, मनमर्जी से ?" मैंने आपत्ति की। "यह देखिये," कहकर मेंने अनुमति-पत्र उसकी ओर बढाया।

उसने उसकी तरफ देखा भी नही।

"नही," वह बोला, मे नही देखना चाहता। कुछ भी नही देखना चाहता। आपके कारण सभी तरह की मुसीबतो का सामना करना पड रहा ह दफा हो जाइये यहा से!" इसके बाद चिल्लाया – "लेफ्टीनेन्ट! 'बला' पोत पर उसके पूरी तरह डूबने तक बालू लादते जाइये!'

मे वहा से चल दिया। जल्दी-जल्दी पोत पर पहुचा। वहा तो लोग बालू ले भी आये थे और कोई कर्मचारी दौड-धूप करता हुआ आदेश दे रहा था।

"आपके पोत पर ही बालू लादने का आदेश दिया गया हे न ? तो आप तनिक चिन्ता न करे," उसने कहा, "म बिल्कुल देर नही होने दूगा, चुटकी बजाते मे सब कुछ हो जायेगा

आपके सामने खुलकर मानता हू कि मैने सोचा – अब पोत का अन्त आ गया। वह डूब जायेगा और फिर निकाला थोडे ही जा सकेगा। किन्तु आप कल्पना करे कि इस स्थिति का भी मैंने सदुपयोग कर लिया।

"जरा रुकिये तो, मेरे दोस्त," मैंने चिल्लाकर कहा। ' बालू लादने के बजाय आप मेरे पोत पर बढिया चीनी की वे बोरिया ही लाद दीजिये, जो नीग्रो सागर मे फंक रहे है!"

' आप ऐसा चाहते है, तो ऐसा ही सही!" उसने जवाब दिया। "अभी लदवा देता हू।"

चीटियो की तरह वही नीग्रो भागे आये और हमारे पोत पर, उसके तलपेट मे, ऊपरी ढाचो और डेक पर चीनी की बोरिया लादने लगे।

हमारा "बला" पोत नीचे ही नीचे बैठता जा रहा था और फिर पानी मे से गडगड करते हुए बुलबुले उठे हमने देखा कि केवल मस्तूल ही बाहर दिखाई दे रहे है।

वाद मे मस्तूल भी गायब हो गये।

सब्वल और फुक्स वडे दुखी मन मे अपन प्यारे पोत को डूवत हुए देख रहे थे, दोनो की आखो मे आसू थे और दूसरी ओर मैं वहुत ही वढिया मूड मे था। मैने तट पर तम्बू लगाने का आदेश दिया। तीन दिन तक उसमे रहे चौथे दिन चीनी घुल गयी और हमने देखा कि हमारा पोत धीरे-धीरे ऊपर आता जा रहा है। सो हमने उसे साफ किया, धोया, पाल लगाये और चल दिये।

हम सागर मे निकले ही थे कि वन्दरगाह का सचालक वगल म तलवार लटकाये भागता हुआ आता दिखाई दिया। वह चिल्ला रहा था –

"नही जाने दूगा।"

उसकी वगल मे हमारा पुराना परिचित, एडमिरल दातकाट भी उछलता-कूदता आ रहा था, उसे डाट-डपट रहा था –

"यह भी कोई काम हुआ, श्रीमान सचालक? ऐसा काम किया है तो पैसे वापस दीजिये।"

"ठीक है," मैने सोचा, एक-दूसरे को भला-बुरा कहते रहिये। मन हाथ हिलाकर उन्हे विदा कहा, पोत को मोडा और पूरी रफ्तार से उसे बढा ले चला।
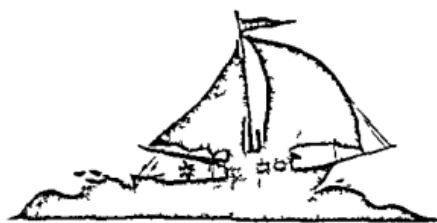
पन्द्रहवा अध्याय,

जिसमे एडमिरल दातकाट 'बला" पर जहाजी बनने की कोशिश करता है

ब्राजील से आगे हमारा रास्ता पश्चिम की ओर था। किन्तु आप समझते है कि महाद्वीप से होकर तो हम जा नही सकते थे, इसलिये हमे दक्षिण की ओर जाना पडा। मैंने मार्ग तय किया, ड्यूटिया लगायी और चल दिये। इस बार हमारा पोत बहुत अच्छे ढग से जा रहा था। हवा तो जैसे आर्डर के मुताबिक बहुत तेज चल रही थी द्रुत गति के कारण जहाज के पीछे रेखा-सी खिचती जाती थी, पाल सनसना रहे थे और रस्सिया तनी हुई थी। दिन-रात मे दो सौ मील का फासला तय हो रहा था और हम खुद हाथ पर हाथ धरे बैठे थे। नतीजा यह हुआ कि सब्बल और फुक्स बिल्कुल काहिल हो गये और अनुशासन भग होने लगा। मैंने नाविक-दल को जहाज के कामो मे जुटाने का निर्णय किया।

"सब्बल, धूप मे काफी तन मवला लिया " मैंने कहा। "कासे के भागो की सफाई का काम सम्भालिये। रगड-रगडकर ऐसे चमकाइये कि आग की लपटे निकलने लगे।"

जी, ऐसी बात है। ऐसा कह दिया मैंने। सब्बल ने सलामी दी – ऐसा ही होगा।

उसने ईट को घिस लिया कपडा उठाया और काम शुरू कर दिया।

मैं झपकी लेने के लिये केबिन मे गया ही था कि डेक पर से घबराहट का शोर सुनाई दिया। उछलकर खडा हुआ, सीढी की तरफ लपका और सामने से फुक्स नीचे आता दिखाई दिया। उसके चेहरे का रग फक था, वह थरथर काप रहा था।

"ख्रिस्तोफार वोनीफात्येविच, कृपया डेक पर चलिये। लगता है कि वहा आग लग गयी है।"

मै लपककर वहा पहुचा। देखा कि सचमुच ही डेक पर दो जगह आग लगी हुई है। सब्वल आग के इन स्थानो से कुछ दूर ऐसे बैठा हुआ कासे की चिडिया को चमका रहा था मानो कुछ हुआ ही न हो। मैने गौर से देखा ही था कि इसी बीच डेक की इस जगह पर भी आग भडक उठी।

आपसे सच कहता हू कि मैं तो चकरा गया।

"सब्वल," मैं चिल्लाया, "बताइये, यह क्या मामला है?"

वह उठकर खडा हुआ, उसने सलामी देकर बडे शान्त ढग से यह रिपोर्ट पेश की –

"आपके आदेशानुसार कासे के भागो को रगडकर ऐसे साफ कर रहा हू कि लपटे निकलने लगे। अब आपका क्या आदेश है?'

मेरा मन हुआ कि सब्वल को डाट-डपटू किन्तु वक्त पर ही अपने को वश मे कर लिया। मैंने अनुभव किया कि इसके लिये स्वय दोषी हू। बात यह है कि लेखक या कलाकार अपनी अभिव्यक्ति मे इस तरह के वाक्य कहने की कुछ छूट ले सकता है, किन्तु हमारे नाविकी के मामलो मे अचूकता सबसे पहली चीज है। हमारे पास कविता रचने का कभी समय नही होता। आदेश देने से पहले सोचना चाहिये कि मुह से क्या कह रहे हो, नही तो कही अगर सब्वल जैसे से वास्ता पड गया, तो क्या होगा! वह हर काम को बहुत ध्यान और बडे ढग से करनेवाला आदमी ठहरा, हर आदेश को शाब्दिक अर्थ मे पूरा करता था और फिर उसमे ताकत भी तो पहलवानो जैसी थी – इसलिये बडी आसानी से दुर्घटना हो सकती थी।

सो मैने अनुभव किया कि अपनी भूल के परिणाम को ठीक करना चाहिये। मैंने फौरन हुक्म दिया –

"कासे के भागो को साफ करना बन्द किया जाये! आग लगने का घण्टा बजाया जाये।"

फुक्स घण्टे की ओर लपका। खतरे के घण्टे की हिदायतो के मुताबिक सब्वल उसी जगह पर रहा, जहा आग लगी थी और मै चालन-चक्र सम्भाले रहा। घण्टा खूब टनटना रहा था, किन्तु उससे लाभ कुछ भी नही हो रहा था। आग फैलती जा रही थी। मशाल की तरह जल रही थी। ऐसे तो वह पालो तक पहुच जायेगी। मैंने देखा कि मामला चौपट है। मैने पोत को चक्कर लगवाया और उसे हवा की

प्रतिकूल दिशा मे खडा कर दिया। आप समझिये कि यह तरकीब काम आयी। हवा ने उसे बुझा दिया। आग की वह लपट जहाज के पिछले भाग मे लम्बी होकर फडफडायी, टूटकर गिरी और बुझ गयी। फुक्स शान्त हो गया। सब्बल यह समझ गया कि उसने कुछ ज्यादा ही जोर लगाया है। सो ऐसी बात है।

इसके बाद हम पहलेवाले मार्ग पर चल दिये, डेक के खराब हिस्सो को हमने बदल दिया और किसी तरह की नयी दुर्घटनाओ के बिना हार्न अन्तरीप को पार कर लिया, न्यूज़ीलैड के पास से गुजरे और आस्ट्रेलिया के सिडनी बन्दरगाह मे पहुच गये।

और कल्पना कीजिये कि बन्दरगाह की दीवार के पास पहुचते ही हमने क्या देखा? आप सोचते होगे–कगारू, प्लैथीपस (स्तनपायी जल-जन्तु) या शुतुरमुर्ग? नही, ऐसा कुछ नही। पोत को तट पर ले गये। देखा, तट पर भीड है और भीड मे सबसे आगेवाली कतार मे स्वय एडमिरल दातकाट विद्यमान है।

वह कैसे, कहा से और क्यो वहा आया–यह तो शैतान ही जाने! किन्तु एक बात निश्चित थी कि यह वही था। आपके सामने स्वीकार करता हू कि मुझे अच्छा नही लगा यहा तक कि बेचैनी-सी भी महसूस हुई।

सो हमने तट पर अपने पोत को ले जाकर खडा कर दिया। एडमिरल भीड मे खो गया। उतरने के लिये जैसे ही तख्ता लगाया गया, मैं फौरन तट पर उतरकर बन्दरगाह मे पहुचा। अधिकारियो को अपना परिचय दिया, अपने पहुचने की सूचना दी और कर्मचारियो मे बातचीत की। जैसा कि होना चाहिये, शुरू मे मौसम, स्वास्थ्य और स्थानीय समाचारो की चर्चा चलायी और बाद मे, बातचीत के दौरान उन्हे टटोला–सोचा शायद यह मालूम कर सकू कि दातकाट यहा क्या कर रहा है और कौन सी नयी बदमाशी की तैयारी मे है।

किन्तु कर्मचारियो ने कुछ भी नही बताया, यही कहा कि उन्हे कुछ खबर नही। मैंने उनके साथ कुछ बातचीत और की तथा सीधे बन्दरगाह के कप्तान के पास चला गया। उसके साथ सलाम-दुआ करने के बाद साफ ही कह दिया–एक जापानी एडमिरल मेरा पीछा कर रहा है।

एक? उसने कहा। "मेरे प्यारे, आप तो बहुत खुशकिस्मत है। मैं तो खुद यह नही समझ पा रहा हू कि इन जापानी एडमिरलो से कैसे अपनी जान बचाऊ और इस सम्बन्ध मे कुछ भी तो नही कर सकता। हमे न तो उनकी मदद करने का आदेश है और न ही विरोध करने का। बडी खुशी से कोई भी अन्य सेवा करने को तैयार हू। सोडा के साथ व्हिस्की पीना पसन्द करेगे? मेरे यहा भोजन

करने आइये, शायद सिगार के कश लगाना पसन्द करेगे? किन्तु एडमिरल से खुद ही निपट लीजिये।"

सो ऐसी बात है। थोडे मे मैने महसूस किया कि बडा अप्रिय किस्सा है। जाहिर है कि जापानी एडमिरल अब हमारे लिये कोई बडी हस्ती नही है। सच कहू, तो हम तब भी उनकी कोई खास परवाह नही करते थे, फिर भी आपसे साफ कहता हू, उनके साथ वास्ता रखना हमे कुछ पसन्द नही था।

मैने इटली के बारे मे तो आपको बताया था। वहा के शासक सारा अफ्रीका, आधा यूरोप और एक-चौथाई एशिया हथियाना चाहते थे पूरब मे जापानी सामन्त (उनकी भाषा मे सामुराई) भी यह सपना देखने लगे थे—पूरा चीन, सारा साइबेरिया और आधा अमरीका उनके हवाले कर दो।

वैसे कल्पना तो कोई भी कर सकता है। कभी-कभी हवाई घोडे दोडाना भी कुछ बुरा नही। किन्तु जब हवाई घोडे दौडानेवाला कोई ऐसा व्यक्ति सैनिक चिह्न लगा लेता है, भरी हुई तोपवाले जगी जहाज पर बैठ जाता हे, तो अप्रिय बात हो सकती है वह अपनी धुन मे कुछ भी सोचता हुआ निशाना साध सकता हे, निशाना साध सकता है और धाय-धाय कर सकता है। गैरियत समझिये कि निशाना चूक जाये। लेकिन कौन कह सकता है कि क्या होगा? ऐसा भी हो सकता है कि कुछ पूछिये नही!

इसीलिये हम कल्पना की ऐसी उडाने भरनेवालो से बचकर निकलने की कोशिश करते थे। किन्तु साफ कहता हू कि हमेशा तो हमे इसमे सफलता नही मिलती थी। उनके बीच कल्पना की उडाने भरनेवाले ऐसे जिद्दी भी मिल जाते है कि उनसे पिड छुडाना मुश्किल हो जाता है। तो मुझे भी इसी तरह का श्रीमान, एडमिरल दातकाट मिल गया। ह्वेल-प्रेमियो की समिति मे ज्योही मिला, त्योही गोद की तरह चिपक गया।

निश्चय ही ये एडमिरल सिर्फ मेरे ही मामलो मे दखल नही देते थे। वे हर चीज मे टाग अडाते थे—किसी को किसी के खिलाफ भडकाते थे, होहल्ले मे किसी को लूटते थे, किसी की जेब काटते थे, इस दिलचस्पी से सूघा साधी करते थे कि कहा खनिज तेल की गन्ध आती है, कहा मछली और कहा सोने की?

स्पष्ट है कि हम अकेले ही यह सब कुछ नही समझते थे। किन्तु वहा इन उडान भरनेवालो की ओर कोई ध्यान नही दिया जाता था—न तो मदद करते थे और न ही बाधा देते थे। यो कहना चाहिये कि जरूरत होने पर दूसरो को डराने और अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये उनकी रक्षा करते थे।

सो ऐसी बात है। यह सब तो मै आपको समझा सकता हू, पर वन्दरगाह कप्तान के साथ ऐसी बातचीत उचित नही थी। मेंने उसे धन्यवाद दिया और विदा ली। ऐसे खाली हाथ ही वहा से चला आया और कोई कदम नही उठा सका।

मैं पोत पर लौटा और चाय पीने बैठ गया। क्या देखता हू कि सभी लक्षणे से जापानी प्रतीत होनेवाला एक छोटा-सा आदमी पोत पर आ रहा है। फटा-सा कोट पहने, हाथो मे टोकरी लिये। उसने सहमते-सहमते पास आकर बताया कि यहा आस्ट्रेलिया मे भूख से मर रहा है और नाविक की नौकरी पाना चाहता है। बहुत ही मिन्नत-समाजत करते हुए उसने यह कहा।

'आप शान्त महासागर मे जायेगे," उसने कहा, "वहा तूफान आयेगे, धुध-कुहासा होगा, अनजाने बहाव होगे आप स्थिति से निपट नही सकेगे। कप्तान मुझे ले लीजिये। मे नाविक हू, आपके लिये उपयोगी सिद्ध होऊगा। मैं धोबी का काम भी कर सकता हू और नाई का भी। हर फन मौला हू "

"अच्छी बात है," मैंने कहा "एक घण्टे बाद आइयेगा, मैं जरा सोच लू।"

वह चला गया। ठीक एक घण्टे बाद मैने क्या देखा कि किसी दूतावास की गार्ड हमारे निकट ही आकर खडी हुई।

मैंने दूरबीन मे से नजर दौडायी – कार मे से हमारा वही जापानी बाहर निकला, उसने टोकरी ली और धीरे-धीरे पोत की ओर चल दिया। बडे आदर से उसने मुझे झुककर प्रणाम किया और फिर वही राग अलापना शुरू कर दिया –

"मुझे अपने पोत पर ले लीजिये नही निपट सकेगे आप तूफानो से "

"सुनिये,' मैने कहा, "आपने मुझे अपनी बात का कायल कर लिया। महसूस कर रहा हू कि मुझे कोई नाविक लेना पडेगा। किन्तु आपको नही लूगा, मेरे नौजवान दोस्त।"

'वह क्यो?"

"ऐसे ही। बात यह है कि आपके चेहरे का रग स्वाभाविक नही है। इस मामले में मेरे दृष्टिकोण कुछ पुराने, किन्तु बिल्कुल सुनिश्चित है – मेरे मतानुसार तो अगर मजदूर लेना है, तो केवल काले आदमी को। नीग्रो को ले लेता, किन्तु बुरा नही मानियेगा, आपको नही लूगा।"

"तो क्या किया जाये," उसने कहा, "अगर ऐसी बात है, तो कुछ नही हो सकता। क्षमा चाहता हू कि आपको परेशान किया।"

वह सिर झुकाकर बाहर चला गया। कुछ देर बाद हम घूमने को तैयार

हाने लगे। हमने अपने कपडे ठीक-ठाक किये, दाढी वनायी और बाल मवारे। पोत की सफाई की, केविन को ताला लगाया। तीनो सडक पर चले जा रहे थे, स्थानीय जीवन के विभिन्न रग-ढग पर नजर डाल रहे थे। आप तो जानते हैं कि पराये देश मे यह सब कुछ बहुत दिलचस्प होता हे। अचानक एक अजीब सा दृश्य दिखाई दिया – बूट पालिश करनेवाला एक नीग्रो बेठा था और उसके सामने हमारा जापानी हाथो-पैरो के वल हुआ नजर आ रहा था। नीग्रो उस पर काली पालिश कर रहा था। सो भी केसे! वात यह है कि वहा बूट पालिश करनेवाले अपन काम के बडे माहिर होते हे – उनके ब्रश के नीचे से चिगारिया निकलती ह किन्तु हमने ऐसे जाहिर किया मानो हमे इससे कोई मतलव नही, पास से गुजर गय, मुह तक फेर लिया। शाम को जहाज पर आये – फुक्स और सब्वल थक गय थे, इसलिये मैं ड्यूटी पर रहा ओर यह सोचते हुए उस नीग्रो का इन्तजार करने लगा कि कैसे उसका अधिक अच्छी तरह से स्वागत किया जाये।

अचानक मुझे बन्दरगाह के कप्तान से एक पकेट मिला। पता चला कि बूढे आदमी को ऊव महसूस हो रही थी, उसने अगले दिन मुझे अपने साथ गोल्फ की बाजी खेलने के लिये आमन्त्रित किया था। आपसे सच कहता हू कि मुझे तो इतना भी मालूम नही था कि यह खेल क्या होता है। कोई बात नही कि मै हार जाऊगा पर साथ ही थोडा सैर-सपाटा हो जायेगा, तट पर कुछ मन बहल जायेगा। थोडे मे यही कि मैंने सहमति दे दी और तैयारी करने लगा।

सब्वल को जगाकर मैने पूछा –

"गोल्फ के खेल के लिये किस-किस चीज की जरूरत होती हे?"

उसने कुछ देर तक सोचने के बाद जवाब दिया –

"ख्रिस्तोफोर वोनीफात्येविच, शायद सूती गेटिस चाहिये और इससे अधिक कुछ नही। मेरे पास जहाजियो की पुरानी, बुनी हुई धारीदार कमीज की आस्तीने ह। इच्छा हो, तो ले सकते हे।"

मने उन्हे नापकर देख लिया। पतलून को जरा लटकते ढग से पहना, कमर पर पिने लगाकर जाकेट को फिट कर लिया और खूब बढिया वात वन गयी। वहुत वढिया खिलाडी, चैम्पियन ही लगने लगा।

फिर भी अपनी तसल्ली के लिये मैंने गोल्फ की निर्देश-पुस्तक देख ली, खेल का परिचय प्राप्त कर लिया। मुझे लगा कि खेल तो वहुत सीधा मादा है – कभी एक, तो कभी दूसरे गड्ढे मे गेद ही डालना था। ऐसा करते समय जो कम चोट लगायेगा, वही जीतेगा। किन्तु केवल गेटिस से काम नही चलेगा – गेद

को चोट लगाने के लिये तरह-तरह के डडो और इन्हे ले जानेवाले सहायक छोकरे की भी जरूरत थी।

सो हम सब्वल के साथ इन डडो की खोज मे चल दिये। सिडनी का सारा शहर छान मारा, किन्तु ढग के डडे नही मिले। एक छोटी-सी दुकान पर चाबुक के डडे मिले, मगर वे पतले थे और दूसरी दुकान मे पुलिस की लाठिया हमारे सामने लायी गयी। किन्तु मुझे उनके उपयोग की आदत नही।

रात होने को आ रही थी। चाद चमकने लगा था। रास्ते पर बडी रहस्यपूर्ण परछाइया पड रही थी। मै तो हताश हो गया था। कहा ढूढे कोई डडे? क्या वृक्षो की टहनिया तोडी जाये?

हमे ऊची बाडवाला एक बाग और बाड के पीछे तरह-तरह के वृक्ष दिखाई दिये। सब्बल ने मुझे ऊपर उठाया, हमने बाड लाघी और झाडियो के बीच से जाने लगे।

सहसा क्या देखा कि एक लम्बा-तडगा नीग्रो चोरी-छिपे आ रहा है और बगल मे गोल्फ के ढेर सारे डडे दबाये है। बिल्कुल वैसे ही, जैसे कि निर्देश-पुस्तक मे दिखाये गये थे।

"ऐ मेहरबान आदमी," मैने चिल्लाकर कहा, "अपना यह खेल का सामान मुझे देने की कृपा नही करोगे?"

किन्तु या तो मेरी बात उसकी समझ मे नही आयी, या फिर उसने ऐसी बात की आशा नही की थी, वह भयानक आवाज मे गुर्राया, डडा सम्भाला, उसे सिर के ऊपर घुमाया और हमारी तरफ लपका शर्माये बिना आपसे कहता हू कि मै डर गया। किन्तु सब्बल ने स्थिति सम्भाली -- उसकी गठडी-सी बनाकर उसे वृक्ष पर फेक दिया। जब तक वह नीचे उतरा, मैने डडे उठा लिये, ध्यान से उन्हे देखा और पाया कि हू-ब-हू वैसे ही है, जैसे कि निर्देश-पुस्तक मे चित्रित थे। कितना बढिया काम किया गया था! मैं उन्हे देखता हुआ अपने विचारो मे खो गया और तब सब्बल ने मुझे ख्यालो की दुनिया से बाहर निकाला।

"ख्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच, आइये चले," वह बोला, "यहा कुछ नमी है, कहीं हमे ठण्ड ही न लग जाये।"

सो हमने फिर से बाड लाघी, बाहर आये, अपने पोत पर लौटे। मैं शान्त हो गया था -- सूट है डडे है, सिर्फ किसी छोकरे की व्यवस्था करना बाकी था हा, अपने दिल मे अभी कुछ बेचैनी जरूर महसूस कर रहा था -- ऐसे ही किसी व्यक्ति को लूट लेना कोई अच्छी बात नही थी। किन्तु दूसरी ओर यह भी सच

तिथि
रेखांश अक्षांश
घटनाएं
उल्लेखनीय बातें
आस्ट्रेलियाई कछुआ
एडमिरल दांतकाट नीग्रो बन रहा है
हमने यहां से सब कुछ देखा

था कि वही पहले हम पर झपटा था और फिर इन डडो की भी मुझे केवल एक ही दिन के लिये जरूरत थी – एक तरह से किराये पर थोडे मे यही कि जरूरी चीजो के मामले मे किसी तरह सब कुछ ठीक हो गया था।

छोकरे की समस्या और भी अधिक अच्छे ढग से हल हो गयी – सवेरा होते ही बहुत विनम्र-सी आवाज मे मैने किसी को पुकारते सुना –

"श्रीमान कप्तान श्रीमान कप्तान !"

मैने जवाब दिया –

"कप्तान यहा हे, भीतर आ जाइये। क्या सेवा कर सकता हू आपकी ?"

क्या देखता हू कि वही मेरा दोस्त है, पिछले दिनवाला जापानी, खुद वही, किन्तु काली त्वचावाले के रूप मे। मैने उसे पालिश करवाते देखा था, अन्यथा पहचान ही न पाता – इतने बढिया ढग से उसने अपनी शक्ल-सूरत को बदला था। कराकुल भेड की खाल जैसे घुघराले बाल, चेहरा पालिश से चमकता हुआ, पैरो मे भूसे के बने हुए स्लीपर और छीट का धारीदार पतलून पहने हुए।

"मैने सुना है, श्रीमान कप्तान," वह बोला, "आपको नीग्रो जहाजी की आवश्यकता है।"

'हा, जरूरत तो है " मैंने जवाब दिया, "किन्तु जहाजी की नही, गोल्फ के लिये छोकरे की। ये डडे उठाओ और चलो मेरे साथ "

सो हम चल दिये। बन्दरगाह का कप्तान मेरी राह देख रहा था। हम उसके साथ कार मे बैठ गये। कोई एक घण्टे मे पहुच गये।

"तो खेल शुरू किया जाये ?" बन्दरगाह के कप्तान ने कहा। "आशा करता हू कि एक सज्जन व्यक्ति होने के नाते आप प्वाइटो की गिनती मे मुझे धोखा नही देगे ?"

उसने अपना गेद गड्ढे मे रखा, जोर से डडा घुमाया और उस पर चोट की। मैंने भी ऐसा ही किया। उसका गेद सीधा और मेरा एक तरफ को गया। मैंने अपने गेद को बहुत ही दूर पहुचा दिया था।

सभी ओर झाडिया, गड्ढे और दर्रे थे। कहना चाहिये कि जगह बहुत ही सुन्दर, किन्तु बेहद कटी-फटी थी। मेरे नीग्रो की बडी बुरी हालत हो रही थी। बात समझ मे आती थी – डडे भारी थे, बेहद गर्मी और उमस थी। उसके चेहरे से ढेरो पसीना बह रहा था, उसका सारा मेक-अप बह गया, पालिश पिघल गयी और वह नीग्रो के बजाय जेबरा-सा प्रतीत होने लगा था – पीले चेहरे पर काली

धारिया नजर आ रही थी। आपसे छिपाऊगा नही, मै भी बुरी तरह थक गया था। क्या देखा कि एक छोटी-सी नदी वह रही है। वहा नदी एक दुर्लभ चीज है।

आओ, यहा थोडा आराम करे, बातचीत कर ले। तुम्हारा नाम क्या है?"

"टोम, श्रीमान कप्तान।"

"मतलब यह कि चाचा टोम। तो चाचा टोम, चलकर नहा-धो ले।"

"ओह नही, श्रीमान कप्तान, मेरे लिये नहाना वर्जित है।"

"अगर वर्जित है, तो वर्जित सही। नही तो नहा लेते। देखो तो तुम बिल्कुल बदरग हो गये हो।"

मुझे यह नही कहना चाहिये था, पर मुह से निकल गया। शब्द वापस तो नही लौटाये जा सकते थे। वह चुप रहा, केवल आखो से ही लपट-सी निकली और नीचे बैठ गया मानो डडो को इधर-उधर रख रहा हो।

मैं नदी की ओर चला गया। पानी ठडा और बिल्लौर की तरह निर्मल था। मैं ताजा दम हो रहा था, दरियाई घोडे की तरह फूत्कार कर रहा था। कुछ देर बाद मैंने मुडकर देखा – वह दबे पाव मेरी ओर आ रहा था और सबसे भारी डडा हाथ मे लिये था। मैंने चाहा कि चिल्लाकर उसे मना करू किन्तु अनुभव किया कि देर हो गयी है। उसने जोर से हाथ घुमाकर डडा मेरी ओर फेका। अगर लग जाता, तो खोपडी फट जाती। किन्तु मै हतप्रभ नही हुआ – झट से पानी मे डुबकी लगा गया।

कुछ क्षण बाद बाहर निकलकर देखा – वह सामने तट पर खडा था, दात दिखाता हुआ, आखे शेर की तरह जल रही थी, लगता था कि अभी मुझ पर झपट पडेगा

अचानक उसके सजे-सवरे बालो पर फटाक से कोई चीज आकर लगी। वह जहा का तहा बैठ गया। मैं भागकर गया, अपने रक्षक को खोजने लगा, किन्तु वहा कोई दिखाई नही दिया, केवल वह डडा ही पडा हुआ था मैंने उसे उठाकर रखा – किसी फर्म के निशान की जगह उस पर स्थानीय धार्मिक चिह्न बना हुआ था। तब बात मेरी समझ मे आ गयी – पिछले दिन मैंने गोल्फ के डडो की जगह पपुआस (स्थानीय आदिवासी) से बूमेरग छीन लिये थे। आप जानते हैं कि बूमरग कैसा अस्त्र होता है? उन्हे तो ऐसे फेकना चाहिये कि निशाना चूके नही। अगर निशाना चूक गया, तो दोनो आखे खुली रखो, नही तो वह लौटकर खापडी पर ऐसे ही जोर की चोट करेगा। जी, ऐसी बात है।

सो मैंने चाचा टोम को ध्यान से देखा। उसकी नब्ज चल रही थी मतलब

यह कि जानलेवा चोट नही थी। टागो से पकडकर मैं उसे छाया मे घसीट ले गया। इसी समय उसकी जेब से कुछ कागज-से बाहर निकलकर गिर गये। मैंने उन्हे उठाकर देखा – परिचय-कार्ड थे। मने उन्हे पढा। बिल्कुल साफ ही लिखा हुआ था –

एडमिरल दालकाट

"तो तुम यहा हो, मेरे प्यारे!" मैंने सोचा। "सो अब लेटे रहो, थोडा आराम करो, मेरे पास तो समय नही है, खेल जारी रखना चाहिये, वरना मेरा खेल का साथी नाराज हो जायेगा।"

जी, ऐसी बात है। मैं आगे चल दिया, गेद को आगे फेक रहा था और खुद अपने पर झल्ला रहा था कि व्यर्थ इस गोल्फ के फेर मे पड गया। किन्तु पीछे हटना तो मेरे स्वभाव मे नही है। सो चोटे लगाता था, उनकी गिनती करता था। साफ बात यह है कि बडा मुश्किल मामला लग रहा था। सहायक के साथ तो फिर भी किसी तरह काम चल रहा था, किन्तु अकेले के लिये बडा बोझिल हो रहा था – चोट जोर से लगानी चाहिये, गेद ढूढना चाहिये और डडे उठाकर ले जाना भी जरूरी था। टागो मे दर्द हो रहा था, हाथ बात नही मानते थे। कुल मिलाकर यह कि मै गेद को नही, बल्कि वह मुझे भगा रहा था। सो उसने मुझे ऐसी जगह भगा दिया, जहा सभी ओर दलदले थी, सेज घास थी, नदिया बह रही थी और उसके तट पर छोटे-छोटे टीले थे।

"तो में नदी तक गेद को पहुचा देता हू, वहा आराम कर लूगा, नहा लूगा," मैंने सोचा।

मैंने जोर से डडा घुमाकर चोट की। सहसा ये सभी छोटे-छोटे टीले उछले और लगे छलागे मारने

बात यह थी कि वे वास्तव मे छोटे-छोटे टीले नही, बल्कि कगारूओ का झुण्ड था। सम्भवत वे डर गये और विभिन्न दिशाओ मे भाग चले। मेरा गेद पूरे जोर मे एक मादा कगारू की झोली मे जा गिरा। वह चीख उठी और पूरे जोर से भागने लगी वह पूछ से भी काम लेती थी ओर टागो मे भी। अगले पजो से झोली को सम्भाले हुए छलागे मारती मेरे सामने से निकल गयी मेरे लिये चारा ही क्या हो सकता था? मैंने डडे फेके और उसके पीछे दौड पडा। गेद खोना तो ठीक नही था। ऐसी बाधा-दौड हुई कि अभी तक याद करके जी खिल उठता है। पैरो के नीचे टहनिया चटकती थी, कक्ड इधर-उधर उछल रहे थे मै थक गया था, किन्तु

हार मानने को तैयार नही था, उसे अपनी नजर से ओझल नही होने देता था। वह आराम करने बैठती मैं भी आराम करने बैठ जाता, वह चल पडती, मैं भी चल पडता

बेचारा जानवर चकरा गया डर के मारे रास्ते से भटक गया। मादा कगारू को जगल मे, झाडियो मे जाना चाहिये था, किन्तु वह खुली जगह मे निकल गयी, बडी सडक पर पहुच गयी, सीधी सिडनी की ओर चल दी।

शहर नजर आने लगा था, जल्द ही गलिया-सडके शुरु हो जायेगी। लोग हमारी ओर देख रहे थे, चीखते-चिल्लाते थे, पुलिसवाला मोटरसाइकल पर हमारा पीछा कर रहा था, सीटी बजा रहा था सम्भवत डरे हुए जानवर ने हवा मे जोरदार कलाबाजी लगायी। मेरा गेद उसकी झोली मे निकलकर बाहर गिर गया, मै उसके पीछे भागा, झुका और उसी क्षण कमर के नीचे मुझे जोर का धक्का लगा। आपसे सच कहता हू कि खूब महसूस हुआ मुझे वह धक्का! बिल्कुल ऐसी हालत हो गयी कि "न तो बैठा जाये और न खडा हुआ जाये!"

फिर भी मै उठा, मैने कपडे झाडे। मेरे इर्द-गिर्द लोगो की भीड जमा हो गयी थी – सब सहानुभूति प्रकट करते थे मदद देने को तैयार थे, किन्तु मुझे सहायता की नही, डडे की आवश्यकता थी – गेद था, गड्ढा भी निकट ही था, किन्तु हिट लगाने के लिये कुछ नही था। खैर, एक सज्जन को मुझ पर दया आ गयी, उसने अपनी छडी दे दी। तिरासीवी हिट पर मैंने खेल खत्म किया।

बन्दरगाह का कप्तान तो स्तम्भित रह गया।

"कमाल का परिणाम है!" वह बोला। "जरा कल्पना कीजिये, इतना कठिन क्षेत्र और क्या सचमुच चौरासी हिटे ही लगायी?"

"बिल्कुल ठीक," मैने उत्तर दिया, "तिरासी हिटे, न तो एक ज्यादा और न एक कम "

कगारू के बारे मे मैं चुप रहा। खेल की निर्देश-पुस्तक और नियमो मे भी कगारू के बारे मे कुछ नही कहा गया था। सो नतीजा यह निकलता है कि अगर जानवर ने किसी इरादे के बिना मदद की है, तो यह उसका अपना मामला है।

सोलहवा अध्याय

जगलियों के बारे म

वन्दरगाह के कप्तान के साथ हमन स्थानीय ममाचारो और दर्शनीय स्थानो की चर्चा की। उमने मुझे सग्रहालय देखने के लिये आमन्त्रित किया। हम चले गये।

वहा मचमुच ही देखने योग्य कुछ चीजे है – वहा वत्तख जैसी चोचवाले प्लैथीपस का स्वाभाविक आकार या नमूना रखा है, डिगो कुत्ता ह और कप्तान कूक का छविचित्र है

किन्तु जैसे ही मैं किसी चीज को बहुत ध्यान से देखने लगता, वैसे ही मेरा साथी मेरी आस्तीन खीचकर मुझे आगे ले चलता।

"आइये चले," वह कहता, "मैं आपको मुख्य चीज दिखाता हू – यहा प्रदर्शित एक जीवित व्यक्ति, पूरे अस्त्रो-शस्त्रो से सजा हुआ जगलियो का मुखिया विशेष रूप से बहुत दिलचस्प है "

हम हॉल मे दाखिल हुए। वहा चिडियाघर जैसा एक पिजरा बना हुआ था और उसमे अद्भुत ढग से बाल सवारे हुए एक हट्टा-कट्टा पपुआस घूम रहा था उसने हमे देखा, मानो लडने के लिये ललकारा, सिर के ऊपर डडा घुमाया मैं पीछे हट गया। किन्तु तभी मुझे होनोलूलू के कलाकारो की याद आ गयी और सच कहता हू कि मैंने इसके बारे मे गलत नतीजा निकाल लिया। "यह भी कोई कलाकार ही है," मैंने सोचा। चुनाचे मैंने चुपचाप, गवाहो के बिना उससे यह पूछने का निर्णय किया कि वह जीवन के ऐसे स्तर तक कैसे पहुच गया।

वडे आदर-सत्कार के साथ मैंने कप्तान से विदा ली।

"साथ देने के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद," मैने कहा, "यहा मुझे बहुत दिलचस्प लगा। किन्तु आपको और रोकने की धृष्टता नही कर सकता। यदि आपकी अनुमति हो, तो मै खुद कुछ और देख लेना चाहता हू "

सो पपुआस के साथ हम अकेले रह गये। हमने बातचीत की।

"सच बताइये," मैने कहा, 'आप असली पपुआस है या बनावटी?"

"कैसी बात कर रहे हे आप," उसने उत्तर दिया, "बिल्कुल असली, मुखिया का बेटा और मैंने इगलैड की ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी मे तालीम हासिल की हे। स्वर्ण-पदक के साथ पढाई खत्म की, शोध-प्रबन्ध लिखकर कानून के डाक्टर की उपाधि पायी और स्वदेश लौटा यहा मेरी योग्यता के अनुसार काम नही है पेट भरने को कुछ नही था और इसलिये यहा काम करने लगा "

"अच्छा! कमाई अच्छी हो जाती है?"

"अजी नही,' उसने जवाब दिया, "गुजारा नही होता। रात को नगर-उद्यान मे चौकीदारी भी करता हू। वहा पैसे ज्यादा मिलते ह और काम आसान है। यहा सन्नाटा छाया रहता है। वहा कल ऐसा हुआ कि कुछ जगली मुझ पर टूट पडे और उन्होने मेरे बूमेरग छीन लिये। आज मेरी समझ मे नही आ रहा था कि कैसे यहा अपना काम करने आऊ। यह तो अच्छा हुआ, कि मुझे यह बात याद आ गयी – विद्यार्थी जीवन के समय से मेरे पास गोल्फ के डडो का एक सेट रह गया था। उन्ही को लेकर यहा आ गया। काम चल रहा हे, दर्शको को कुछ अन्तर नही जान पडता

तो ऐसी बात है। सो मेने विदा ली। वैसे तो अब आस्ट्रेलिया से विदा ली जा सकती थी किन्तु कहना चाहिये, मेरा एक कर्त्तव्य बाकी रह गया था – पपुआसो के मुखिया को उसके हथियार लौटाऊ और यह देखू कि मेरे एडमिरल का क्या हाल है।

चुनाचे हमन पद-यात्रियो के ढग से अपने को तैयार किया अपना पोत बन्दरगाह के अधिकारियो की निगरानी मे छोडा और खुद तीनो रवाना हो गये।

कुछ ही समय पहले हुई घटनाओ के चिह्नो का अनुकरण करते हुए देश के भीतरी भागो की ओर बढत जा रहे थे। यहा मैंने कगारू का पीछा किया था, यहा छोटी-सी नदी है यहा बूमेरग पडा था यहा दातकाट किन्तु वहा न तो बूमेरग था और न दातकाट। इस जगह मैंने आखिरी डडे फेके थे। किन्तु वहा भी कुछ नही था। मानो कोई गाय सब कुछ चाट गयी हो।

खैर, हम इधर-उधर घूमते और सभी ओर ढूढते रहे। नतीजा कुछ नही निकला।

केवल रास्ते से भटक गये। सागर मे तो में अच्छी तरह से रास्ता ढूढ लेता हू, मगर खुश्की पर कभी-कभी भटक जाता हू। वहा सभी ओर मरुस्थल है, रास्ता जानने का कोई उपाय नही है। इसके अलावा गर्मी और भूख भी तग कर रही थी फुक्स और सब्बल धीरे-धीरे बडबडा रहे थे, मगर मे अपने जी को कडा कर रहा था — कुछ भी कहिये, कप्तान से ऐसा ही अपेक्षित था। जी, ऐसी बात है।

तीन सप्ताह तक हम ऐसे भटकते रहे। खूब परेशान हुए, दुबला गये। इस बात से दुखी हो रहे थे कि ऐसे क्यो चल पडे थे, मगर अब तो कुछ नही हो सकता था सो एक दिन हमने खुले मेदान मे पडाव डाला, आराम करने को लेट गये किन्तु गर्मी ऐसी थी मानो हम हमाम मे हो। बेहाल होकर हम तीनो सो गये।

कह नही सकता कि मै कितनी देर तक सोया रहा। किन्तु नीद म मुझे शोर शराबा, झगडा और मानो लडने की ललकारे-चीखे सुनाई दी। मै जाग गया, आखे खोली और क्या देखा कि फुक्स तो एक झाडी के नीचे बच्चे की भाति गहरी नीद सो रहा है, किन्तु सब्बल गायब हे। इर्द-गिर्द देखा — कही भी नही है। तब मैंने दूरबीन लेकर क्षितिज पर दृष्टि डाली और देखा — मेरा बडा सहायक सब्बल अलाव के पास बैठा है और चारो ओर से जगली लोग उसे घेरे हुए हे। उनकी गतिविधियो से ऐसे लग रहा था कि वे मेरे बडे सहायक को नोच नोचकर खा रहे है

क्या किया जाये? मैंने मुह के सामने हथेलियो का भोपू मा बनाया ओर पूरे जोर से चिल्लाकर कहा —

"मेरे बडे सहायक को खाना बन्द किया जाये!"

ऐसे कहकर चिल्लाया और इन्तजार करने लगा

आप विश्वास करेगे, मेरे नौजवान दोस्त, मुझे यह उत्तर प्रतिध्वनित होता सुनाई दिया —

"आपके बडे सहायक को खाना बन्द किया जाता है!"

मैंने देखा कि सचमुच ही उन्होंने उसे छोड दिया था, अपने अलाव को बुझाया और उठकर सब एक साथ ही हमारी ओर चल पडे।

सो हमारी भेट हुई, हमने बातचीत की, गलतफहमी को दूर किया। पता चला कि वे उत्तरी तट पर रहनेवाले पपुआस थे। उनका गाव भी नजदीक हो था सागर भी करीब ही था और सब्बल को खा जाने का उनका बिल्कुल कोई इरादा नही था। इसके उलट, वे तो हमारी कुछ खातिरदारी करना चाहते थे और सब्बल ने उनसे यह अनुरोध किया था कि वे हमारे पडाव से कुछ दूर अलाव जलाये — उसे डर था कि हमारी नीद मे खलल पड जायेगा। ऐसी बात थी।

सो, हम खा-पीकर कुछ तगडे हुए। उन्होंने पूछा—

"कहा से आये हो, कहा जा रहे हो और क्या लक्ष्य है?"

मैने उन्हे बताया कि देश मे घूमते हुए अपने सग्रह के लिये पुराने ढग के स्थानीय अस्त्र-शस्त्र खरीद रहे है।

"तो आप लोग ठीक जगह पर ही आ गये हैं," वे बोले। "वैसे तो हमारे पास ऐसी चीजे नही होती। ऐसी चीजे तो हम बहुत पहले ही अमरीका पहुचा आये है और खुद बन्दूक का इस्तेमाल करने लगे है। किन्तु इस वक्त सयोग से कुछ बूमेरग हमारे पास है "

सो हम गाव चल दिये। वे लोग बूमेरग लाये। उन्हे देखते ही मुझे खेल के अपने डडे याद आ गये।

"आपके पास ये कहा से आये?" मैंने पूछा।

"कोई अजनबी नीग्रो लाया है," उन्होने जवाब दिया। "वह अब हमारे मुखिया का सैनिक परामर्शदाता बन गया है। किन्तु इस समय न तो वह है और न मुखिया ही—दोनो पडोस के गाव मे गये है, वहा फौजी कूच की योजना पर विचार-विमर्श कर रहे है।"

सो मैं समझ गया कि मेरे लडाकू एडमिरल ने यहा डेरा जमा लिया है और महसूस किया कि सही-सलामत अपनी जान लेकर भाग जाना चाहिये।

"यह बताइये, मैंने पूछा, "सिडनी, मेलबोर्न या किसी भी जगह जाने का सबसे निकट का मार्ग कहा है?"

"ऐसा तो केवल समुद्र-मार्ग से ही सम्भव है," उन्होंने जवाब दिया। "थल-मार्ग दूर और कठिन है, रास्ता भूल जायेगे। चाहे, तो यहा से पिरोग ढग की नाव किराये पर ले सकते है। आजकल हवा बहुत अच्छी चल रही है, दो दिनो मे पहुच जायेगे।"

मैने नाव चुन ली। आपको बताऊ, बडी अजीब-सी थी वह नाव। उसका पाल तो बैग जैसा था, मस्तूल गुलेल-सा और पहलू के बाहर बेच सी बनी थी। हवा अगर ताजा हो, तो नाव मे नहीं, बल्कि इस बेच पर बैठना चाहिये। आपके सामने यह स्वीकार करता हू कि इस तरह की नाव पर मुझे कभी भी समुद्र-यात्रा नही करनी पडी थी, यद्यपि पालोवाली नाव मेरे लिये कोई नयी बात नही थी। पर हो ही क्या सकता था, मैने सोचा कि किसी तरह इससे काम चला ही लूगा।

सो हमने बूमेरग लादे, रास्ते के लिये रसद ली, नाविक-दल को उसकी जगह बतायी। मैंने चालन-चक्र सम्भाला और सब्बल तथा फुक्स को स्थिरक भार की जगह
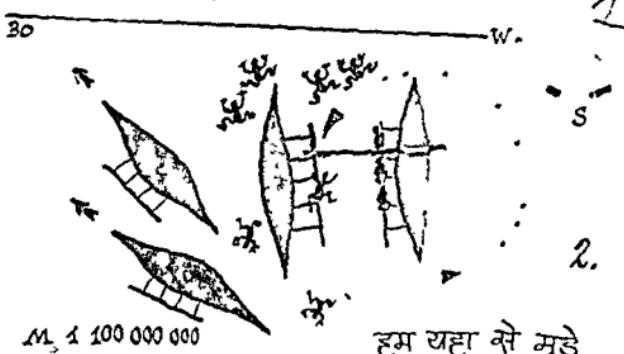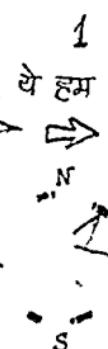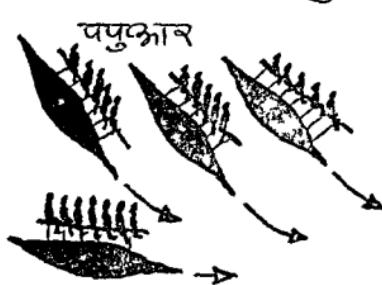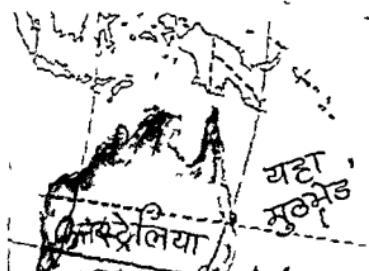
तिथि
रेखाश
अक्षाश
घटनाए
उल्लेखनीय बाते
पपुआर
यहा मुडे
आस्ट्रेलिया
1
ये हम
N
S
30
W.
2.
M 1 100 000 000
हम यहा से मुडे
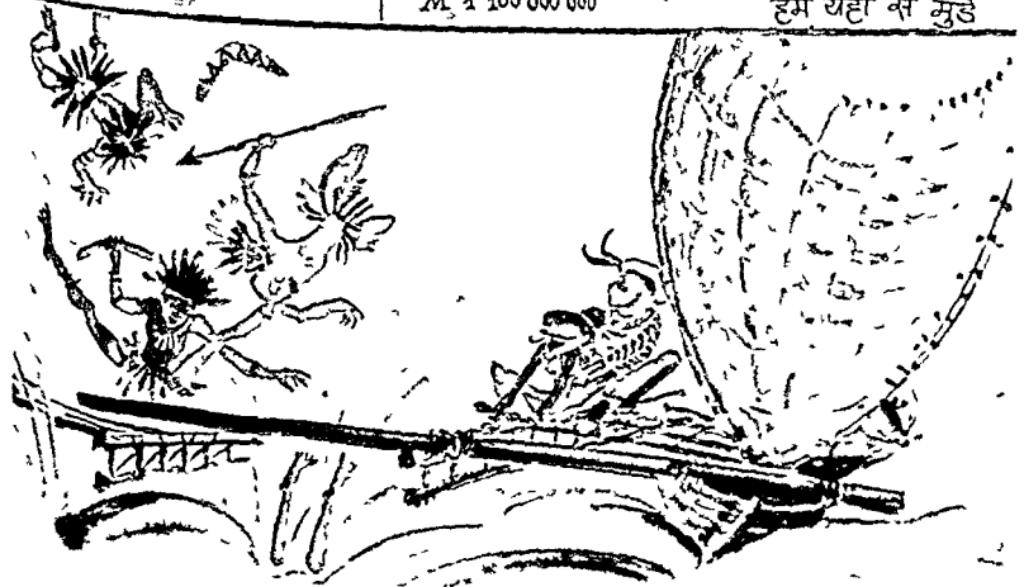
पहलू के बाहर बिठाया। पाल ऊपर उठाये और चल दिये।

तट से रवाना हुए ही थे कि देखा – एक पूरा बेडा ही हमारा पीछा कर रहा है। एक बडी पिरोग नाव सबसे आगे थी और उसके सामनेवाले सिरे पर हमारा घुमक्कड सूरमा – खुद एडमिरल दातकाट पपुआस मुखिया के रूप मे विद्यमान था।

मैंने अनुभव किया कि वे हमे आ पकडेगे। आप तो जानते ही है कि हार मानना दिलचस्प नही है। अगर सिर्फ पपुआस ही होते, तो उनके साथ तो मैं बातचीत करके मामला निपटा लेता – आखिर तो वे आस्ट्रेलियावासी ठहरे, सभ्य लोग है। मगर वह उसके बारे मे कोई क्या कह सकता था? ऐसे झपटेगा कि जिन्दा को ही चबा जायेगा थोडे मे, मैंने देखा कि चाहे-अनचाहे मोर्चा लेना ही होगा।

सो मैने सारी स्थिति पर विचार करके यह निर्णय किया – लोहा लेने, खून बहाने मे क्या तुक है? यह ज्यादा अच्छा होगा कि मै उन्हे पानी मे गोते लगवा दू। ऐसे लडाकुओ का तो सबसे पहले दिमाग ठण्डा करना चाहिये। उस वक्त हवा भी बगल से चल रही थी, काफी तेज थी और उनके सभी नाविक पहलू के बाहर, बेचो पर बैठे थे। वातावरण पूरी तरह अनुकूल था। अगर लम्बा-सा डडा बनाया जाये और जल्दी से मुडा जाये, तो

सक्षेप मे यह कि दो मिनट मे नाव को नये ढग से लैस किया, उसे मोडा और पूरी रफ्तार से उनके निकट जाने लगा। हम उल्टी दिशा मे जा रहे थे, अधिकाधिक निकट होते जाते थे। मैंने चालन-चक्र को तनिक बाये घुमाया और सबसे आगेवाली, दूसरी और तीसरी नाव से स्थिरक भार को नीचे गिरा दिया। देखा कि सामने सागर नही, बल्कि छोटे-छोटे गोले है। पपुआस तैर रहे थे, पानी मे खिलवाड कर रहे थे, खिलखिलाकर हस रहे थे – ऐसे नहा रहे थे कि बाहर ही नही निकलना चाहते थे।

सिर्फ दातकाट ही नाखुश था – नाव पर चढ रहा था, चिल्ला रहा था, फूत्कार कर रहा था मैंने सकेतो द्वारा कामना की – "स्नान शुभ हो", नाव को मोडा और सिडनी की तरफ वापस चल दिया।

सिडनी पहुचकर बूमेरगो के मालिक को वे वापस लौटाये, गोल्फ के जोडीदार से विदा ली और झडा ऊपर उठाया।

निश्चय ही हमे विदा करने को लोग आये, रास्ते के लिये फल और पेस्ट्रिया लाये। मैंने उन्हे धन्यवाद दिया, रस्सा खोला, पाल उठाये और पोत को ले चला।
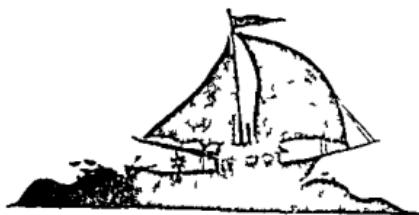
सत्तरहवा अध्याय,

जिसमे सब्बल फिर पोत से अलग हो जाता है

इस बार सब बातो मे असफलता का मुह देखना पडा। हमने न्यूगिनी का तट पीछे छोडा ही था कि बहुत भयानक तूफान ने हमे आ घेरा। हमारा बला" पोत तो मुर्गाबी की तरह लहरो पर डोल रहा था। पानी मे डूब जाता ऊपर आता और फिर से नीचे चला जाता। डेक पर ढेरो पानी गिर रहा था। रस्सिया सनसना रही थी। तूफान से और उम्मीद ही क्या की जा सकती है।

अचानक पोत लट्टू की तरह एक ही जगह पर घूमा और क्षण भर बाद हवा बिल्कुल बन्द हो गयी। तूफान की मक्कारी से अनजान सब्बल और फुक्स ने चैन की सास ली। किन्तु मैं तो समझ गया कि यह क्या किस्सा है और बहुत परेशान हो उठा। हम तूफान के बिल्कुल केन्द्र मे आ गये थे। वहा किसी अच्छी बात की उम्मीद नही की जा सकती थी।

मो तूफान ने अपना रग दिखाना शुरू किया।

थोडी-सी शान्ति के बाद हवा हजारो शैतानो की तरह फिर से सीटिया बजाने लगी, जोर की आवाज करते हुए पाल फट गये, मस्तूल बसी की तरह झुक गया, उसके दो टुकडे हो गये और रस्सो सहित सभी बल्लिया समुद्र मे जा गिरी। यो कहिये कि हमे खूब झकझोरा गया।

गुस्से से पगलाया हुआ सागर जब कुछ शान्त हुआ, तो मैने डेक पर आकर इधर उधर नजर दौडायी। तबाही बहुत ज्यादा और इतनी अधिक हुई थी कि स्थिति को ठीक करना सम्भव नही था। यह सही है कि हमारे पोत के तलपेट मे फालतू

पाल और रस्सिया भी थी, किन्तु आप तो समझते ही है कि मस्तूलो के बिना अकेले पालो से तो काम नही चल सकता था। वहा, बडे महासागरीय मार्गो से दूर, हमारी स्थिति बडी भयानक थी – हम बरसो तक महासागर के बीच ही मुसीबत भोगते रह सकते थे। आप समझते ही है कि यह तो कोई सुखद भविष्य नही था।

धीरे-धीरे आनेवाली मौत का खतरा हमारे सिर पर मडरा रहा था, और जैसा कि ऐसी स्थिति मे हमेशा होता था, मुझे अपने लम्बे जीवन और मधुर बचपन की याद आने लगी।

कल्पना कीजिये कि इन्ही स्मृतियो ने मुझे बचाव की तरकीब सुझा दी।

लडकपन मे मुझे पतग बनाकर उडाने का शौक रहा था। अपने इस बढिया शौक की याद आन पर मैंने राहत की सास ली। पतग! हा, पतग ही हमारे बचाव का साधन है!

विदा-उपहारो की टोकरिया पतग का ढाचा बनाने के काम आयी। इसके बाद हमने लेई बनायी, पोत पर जितने भी कागज थे – अखबार, किताबे, व्यापारिक पत्रादि – सब जमा करके पतग बनाने बैठ गये। डीग नही मारूगा, लेकिन पतग बहुत बढिया बन गयी। मै तो इस फन का उस्ताद ठहरा। पतग जब सूख गयी, तो हमने लम्बा रस्सा चुना और तेज हवा आने पर पतग को उडा दिया

नतीजा कुछ बुरा नही रहा, रस्सा खूब अच्छी तरह से तन गया, हमारा पोत चल पडा और फिर से चालन-चक्र की बात मानने लगा।

मै नक्शा खोलकर वह जगह चुनने लगा, जहा मरम्मत के लिये पोत को ले जाना चाहिये था। अचानक अजीब-सी ध्वनिया सुनाई दी। डेक पर कोई चीज चटक रही थी। मैं चिन्तित होकर ऊपर गया और एक भयानक चित्र अपने सामने देखा – जिस रस्से से हमारी पतग बधी हुई थी, वह चर्खी के साथ उलझ गया था, मेरे पहुचने के वक्त तक घिस गया था और बस, टूटने ही वाला था।

"सबकी जरूरत है! सब ऊपर आ जाये!" मैंने आदेश दिया।

सब्बल और फुक्स भागकर डेक पर आये। दोनो खडे हुए मेरे आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे।

किन्तु आदेश देना कुछ आसान नही था। आप तो समझते ही है कि गाठ लगाने की जरूरत थी। किन्तु इसी वक्त हवा का जोर बढ गया, रस्सा तार की तरह तन गया और आप जानते है कि तार को गाठ नही लगायी जा सकती।

मैंने सोचा कि मामला चौपट हो गया। किन्तु इसी क्षण सब्बल ने अपनी अपार शक्ति का उचित उपयोग किया। उसने एक हाथ से रस्सा पकडा, दूसरे से

तिथि रेखाश अक्षाश
घटनाए
तेज हवा पतग के साथ
सब्बल को भी उडा ले गयी
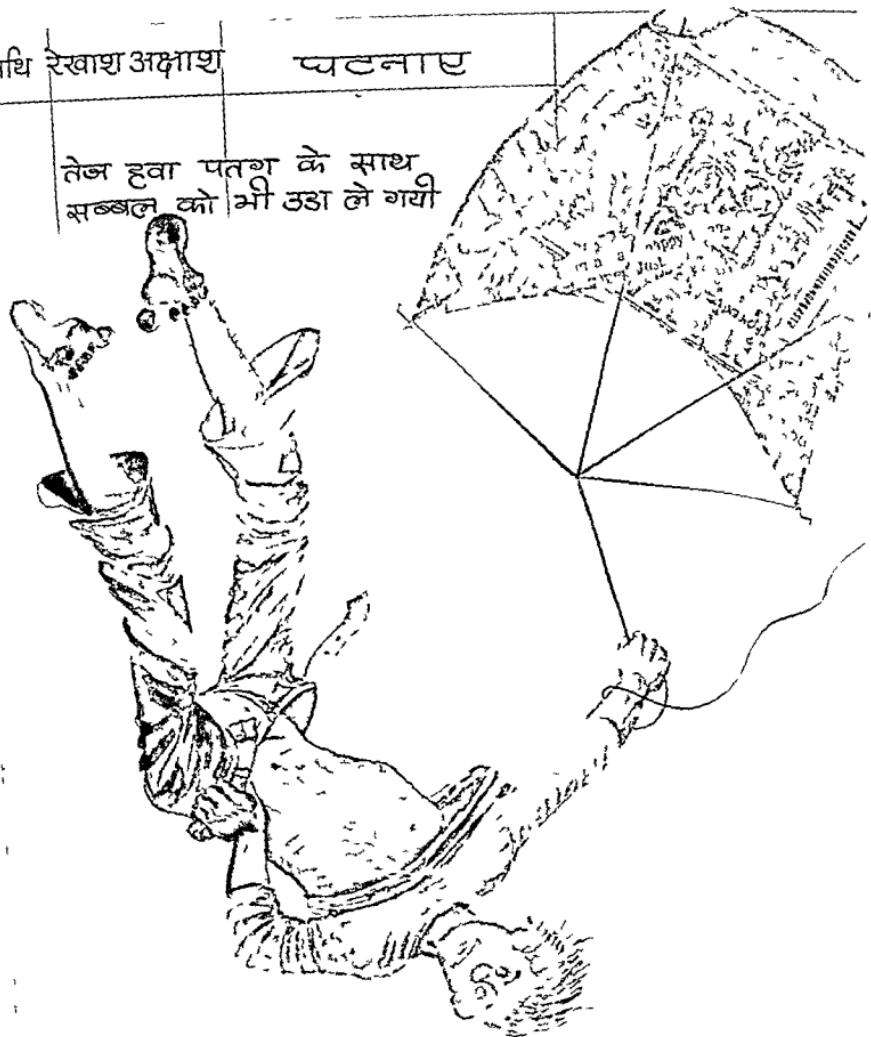
डेक का हत्था, पूरी ताकत से रस्से को खीचा। रस्सा कुछ ढीला पडा

"ऐसे ही थामे रहे, किसी भी हालत मे न छोडा जाये!" मैंने आदेश दिया और खुद गाठ लगाने लगा।

किन्तु इसी समय पोत के पिछवाडे से हवा का वहुत तेज झोका आया, पतग आगे को खिची, क्यारी मे से उखड जानेवाली गाजर की भाति हत्था उखड गया और सब्बल मुश्किल से इतना कहकर--"आदेशानुसार रस्सा थामे हू!" बादलो मे पहुच गया।

मैं और फुक्स स्तम्भित-से देख रहे थे। सब्बल तो बिल्कुल दिखाई नही दे रहा था। बादलो मे एक काले-से धब्बे की झलक मिली और हमारा बहादुर साथी महासागर के बीच ही हमसे जुदा हो गया

आखिर मै सम्भला, मैने कम्पास पर नजर डाली, दिशा की ओर ध्यान दिया और नजर से ही मौसम का अनुमान लगाया। मानना होगा कि निष्कर्ष कुछ अच्छे नही निकले--छ प्वाइटो की शक्तिवाली तेज हवा पच्चीस मील प्रति घण्टा की रफ्तार से मेरे बडे सहायक को सूर्योदय के देश के तट की ओर ले जा रही थी।

हम चालन-शक्ति ओर सचालन के बिना लहरो पर फिर असहाय से इधर-उधर हिचकोले खा रहे थे।

मेरा मूड बेहद खराब हो गया था, दुखी मन से मैं सोने चला गया और जरा आख लगी ही थी कि फुक्स को जगाते सुना। मैंने आखे खोली, उठा और विश्वास कीजिये, अपने दायी ओर मुझे प्रवाल द्वीप दिखाई दिया। जैसा कि होना चाहिये, वहा सभी कुछ था--नारियल के पेड, छोटी खाडी वहा अगर रुकना सम्भव हो सके, तो जैसे-कैसे पाल भी बनाये जा सकते थे। सक्षेप मे यह कि किस्मत मुस्करा दी थी, मगर हाय, यह मुस्कान झूठी सिद्ध हुई।

आप स्वय ही निर्णय कर सकते है--हवा हमे धीरे-धीरे आगे बढा रही थी, हम द्वीप के सामने पहुच गये, वह बिल्कुल निकट लग रहा था, मानो हाथ से छुआ जा सकता था किन्तु यह तो केवल कहने की बात थी--लगभग पाच सौ मीटर तक भला किसका हाथ पहुचेगा थोडे मे, स्पष्ट हो गया कि हम द्वीप के पास से आगे निकले जा रहे है।

मेरी जगह कोई दूसरा होता, तो चकरा जाता, मगर मैं तो ऐसा नही हू। नाविकी का अनुभव यह सिखाता है कि ऐसी स्थितियो मे रस्से के सहारे तट पर लगर फेका जाये। जाहिर है कि हाथ से तो ऐसा करना सम्भव नही--इसके लिये तोप

या राकेट चाहिये। सो मैं लपककर केबिन मे गया और कोई ऐसी चीज ढूढने लगा। मैंने सब कुछ उलट-पलट किया, हर जगह देखा, मगर न तो तोप और न ही राकेट मिला – पहले से इस चीज की ओर ध्यान नही दिया था, रवाना होते वक्त ऐसी कोई चीज साथ नही ली थी। पहनने की चीजे – टाइया, गेलिस, आदि ही हाथ मे आ रहे थे जाहिर है कि इनसे तो तोप नही बनायी जा सकती थी।

किन्तु इस बार भी बचपन की याद को थोडा ताजा करने पर मुझे आगे की कार्य-योजना का सकेत मिल गया।

बात यह है, मैं ऐसा तो नही कह सकता कि बचपन मे मेरी आदर्श गतिविधिया रही थी। इसके उलट, यह छिपाऊगा नही कि सर्वस्वीकृत दृष्टिकोण के अनुसार यद्यपि मैं कोई गुडा तो नही, पर शरारती जरूर था। गुलेल जैसी चीज तो हमेशा मेरी जेब मे रहती थी सो, ऐसी बात है।

मुझे यह याद आया और मानो मेरा मार्ग स्पष्ट हो गया – गेलिस से तोप तो नही बन सकती थी, किन्तु गुलेल? वह तो बन ही सकती थी। सो मैंने खूब कसे हुए छ गेलिस लिये और डेक पर बहुत बडे आकार की गुलेल बना दी।

आगे की बात तो साफ थी – उस पर छोटा-सा लगर टिका दिया, मैने और फुक्स ने मिलकर उसे विच की मदद से कस दिया। मैने आदेश दिया –

"सावधान!"

इसके बाद मैंने रस्सा काट दिया और पतला, किन्तु मजबूत रस्सा साथ मे लिये हुए लगर दूर जा गिरा। मैने देखा कि सब कुछ ठीक है! लगर डाल दिया गया था।

आध घण्टे बाद हम तट पर पहुच गये थे और हमारी कुल्हाडिया अछूते जगल की गम्भीर नीरवता को भग करती हुई गूज पैदा कर रही थी।

जाहिर है कि हम दोनो के लिये यह काम काफी कठिन रहा, किन्तु जैसे-कैसे हमने उसे पूरा कर ही लिया।

तूफान ने हमे बहुत बुरी तरह झकझोर डाला था, पोत के पहलुओ की सेधो को नये सिरे से भरना पडा, सारे पोत पर तारकोल लगाना पडा और मुख्यत तो नयी बल्लियो, मस्तूल तथा उनके ऊपर रस्सो, आदि की व्यवस्था करनी पडी। बडा श्रम करना पडा, लेकिन सब कुछ ठीक-ठाक कर लिया। मस्तूल के मामले मे तो बहुत ही बढिया स्थिति रही – हमने नारियल का एक छोटा-सा सुघड पेड चुना, उसे जडो समेत जमीन से खोद निकाला और ऐसे ही टिका दिया। जैसा कि होना चाहिये, ऊपर रस्सिया बाध दी और नीचे, तलपेट मे स्थिरक बोझ की जगह

नारियल का पेड़
के लिये
मिट्टी

मिट्टी डालकर उसे सींच दिया ओर नारियल के पेड का हमारा यह मस्तूल बढने लगा।

इसके बाद हमने पाल काटे, उन्हे सिया, पोत पर लगाया और चल दिये।

ऐसी सज्जा के साथ पोत का सचालन करना कुछ अजीब-सा था, किन्तु दूसरी ओर आराम भी था – सिर के ऊपर पत्ते सरसराते थे और हरियाली मे आखो को चैन मिलता था कुछ समय बाद नारियल के पेड पर फल पक गये। यह ता मजा ही आ गया – ड्यूटी दी जा रही हो, गर्मी सता रही हो, प्यास परेशान कर रही हो, बस, मस्तूल की ओर हाथ बढाने की देर थी और ताजा दूध से भरा हुआ नारियल हमारे हाथ मे आ जाता था। पोत नही चलता-फिरता बाग हो गया

तो हम ऐसे बढते जा रहे थे, फलाहार से स्वस्थ होते जा रहे थे और उस जगह की ओर जा रहे थे, जहा सम्भवत सब्बल को नीचे उतरना चाहिये था।

एक दिन पोत चलता रहा, दो दिन चलता रहा। तीसरे दिन हमे अपने सामने धरती दिखाई दी। दूरबीन मे से बन्दरगाह, उसमे दाखिल होने के चिह्न और तट पर नगर दिखाई दे रहा था

निश्चय ही बन्दरगाह मे जाना कुछ बुरा न होता, लेकिन मैंने ऐसा न करने का निर्णय किया, नही गया। कुल मिलाकर उन दिनो वहा विदेशियो का कोई बहुत अच्छा आदर-सत्कार नही होता था और फिर श्रीमान दातकाट के साथ तो मेरा अपना हिसाब-किताब भी बाकी था। भाड मे जाये वह।

अठारहवा अध्याय

सबसे अधिक दुखद, क्योंकि "बला" डूब जाता है और इस बार हमेशा के लिये

सो मैं बन्दरगाह मे बचकर निकल गया। पोत को बढाता गया। दिन ढग से गुजर गया, किन्तु रात को कुहासा छा गया। ऐसा कुहासा कि आखे फाड-फाडकर देखने पर भी कुछ नजर न आये। सभी ओर से सकेत दिये जा रहे , भोपू और सीटिया बज रही थी, घटिया बजायी जा रही थी खतरा था, मगर साथ ही मजा आ रहा था। किन्तु यह खुशी बहुत देर तक नही चली। मुझे एक जहाज के बडी तेजी से अपनी ओर आने की भनक मिली। ध्यान से देखा – तारपीडोवाला जहाज पूरी तेजी से आ रहा था। मैने अपने पोत को दायी ओर किया देखा कि वह भी दायी ओर हो गया है। मैंने उसे बायी ओर किया, तो वह भी बाये हो गया।

तो बहुत जोर का आघात हुआ, पोत के पहलू चरचराये, डेक पर पानी ही पानी फैल गया और दो टुकडे हुआ "बला" पोत धीरे-धीरे भवर मे डूबने लगा।

सो मैने देखा कि अन्त आ गया।

"फुक्स " मैंने कहा, "रक्षा-चक्र लो और पश्चिम की ओर तैर जाओ। बहुत दूर नही है।"

"और आप?" फुक्स ने पूछा।

"मेरे पास समय नही है," मैंने कहा। "रजिस्टर मे सब कुछ लिखना चाहिये, पोत से विदा लेनी चाहिये और सबसे बडी बात तो यह है कि मेरा उधर का रास्ता नही है "

"निम्तोफोर वोनीफात्येविच, मेरा भी उधर का रास्ता नही है। उस तरफ जाने को मेरा मन नही हो रहा।'

"व्यर्थ ही आप ऐसा कह रहे हैं,' मैंने आपत्ति की फिर भी वहा तट है, भाति-भाति का सौन्दर्य है, पवित्र फूजीयामा पर्वत है '

"सौन्दर्य को क्या करना है।' फुक्स ने हाथ झटक दिया। वहा तो भूखा मर जाऊगा। काम कोई मिलेगा नही और अपने पुराने फन यानी जुआ खेलने के मामले में उनके सामने मेरी क्या दाल गलेगी। कपडे तक उतारकर चलता कर देंगे। आपके साथ रहना कही ज्यादा अच्छा होगा।

फुक्स की वफादारी ने मेरे दिल को ऐसे छू लिया कि मुझे अपने भीतर नव शक्ति-सचार की अनुभूति हुई। "अजी " मैंने सोचा 'अभी से मौत की बात सोचना बेकार है।" पोत को पहुची हुई हानि के पैमाने का अनुमान लगाया और कुल्हाडा हाथ मे ले लिया।

"सब की जरूरत है।" मैंने आदेश दिया। "सब ऊपर आ जाये' रस्सों को समेटिये, मस्तूल को काटिये।"

फुक्स बडी खुशी से अपना पूरा जोर लगाने लगा। उसने ऐसा उत्साह दिखाया कि मैं हैरान रह गया। यों कहिये तोडना तो निर्माण करना नही होता मन नही टीसता।

कुछ ही देर मे हमारा नारियल का पेड डेक से नीचे जा गिरा। फुक्स उस पर कूद गया और मैंने उसे कुछ मूल्यवान वस्तुए दे दी। रस्सा नम्र पेश दिया, डिब्बे सहित कम्पास, चप्पुओं की जोडी मीठे पानी का एक कनस्तर और कुछ कपडे भी

खुद "बला" पर, उसके डेक पर बना रहा। आखिर महसूस किया कि पोत की आखिरी घडी नजदीक आ रही है — उसका पृष्ठ भाग ऊपर उठ गया ढाचा जल-मग्न होने लगा, बस, अभी यह डूब जायेगा

मेरी आखों में आसू आ गये उसी वक्त मैंने कुल्हाडा लिया और पोत के नाम के अक्षरोंवाला तख्ता अपने हाथ से काट दिया

इसके बाद पानी में कूदा और फुक्स के पास नारियल के पेड पर जा गया। वहा बैठकर यह देखने लगा कि कैसे महासागर बहुत-सी यातनाए सहकर हमारे पोत को निगलता है।

फुक्स भी देख रहा था। उसकी भी आखे छलछला आयी थी।

मैंने उसे तसल्ली देते हुए कहा —

"कोई बात नही। जी छोटा नही करे। हम तो आपके साथ अभी और समुद्र-यात्रा करेगे। यह तो कुछ नहीं, इससे भी कही बुरा हाल हुआ करता है "

जी, ऐसी बात है। हमने उस जगह पर भी नजर डाल ली, जहा लहरे हमारे पोत को निगल गयी और फिर हम ढग से डेरा जमाने लगे। और कल्पना कीजिये कि खासे आराम से हम पेड पर जम गये।

जाहिर है कि पोत के बाद कुछ असुविधा तो अनुभव हो रही थी, किन्तु जो कुछ एकदम जरूरी था, वह हमे उपलब्ध था। कम्पास टिका लिया, जहाजियो की पुरानी कमीज से जैसे-कैसे पाल बना लिया, रक्षा-चक्र को शाखा पर लटका दिया और पृष्ठ भाग के तख्ते को मैंने लिखने की मेज बना लिया।

कुल मिलाकर सब कुछ ठीक था, केवल पाव भीगते रहते थे।

एक दिन हमे अपने पीछे धुआ दिखाई दिया। मैंने सोचा – फिर तारपीडोवाला जहाज आ रहा है, मगर नही, वह तो अग्रेजो के झण्डे तले जहा-तहा भटकनेवाला "व्यापारी" जहाज था। मैं सहायता नही लेना चाहता था, सोचता था कि किसी तरह खुद ही पहुच जाऊगा। किन्तु यहा तो कुछ ऐसी बात हो गयी।

मैंने जहाज को देखते ही ड्यूटी के रजिस्टर मे इसके बारे मे लिखना शुरु कर दिया। दूसरी ओर, उस जहाज के कप्तान का हमारी ओर ध्यान गया, उसने झटपट दूरबीन लकर देखा और स्पष्ट है कि हमारे पोत को, यदि उसे पोत कहा जा सकता था, बहुत अच्छी स्थिति मे नही पाया।

किन्तु कप्तान दुविधा मे था कि हमारी मदद करे या न करे, क्योकि हमने न तो किसी तरह की घबराहट जाहिर की थी और न उसके अनुरूप कोई सकेत ही दिये थे

किन्तु स्थिति ने ऐसा रूप ले लिया कि उसने अप्रत्याशित ही अपना निर्णय बदल दिया।

हुआ यह कि मैंने इसी समय अपनी टिप्पणी समाप्त की और लिखने की मेज यानी तख्ते को खडा कर दिया। अक्षर चमक रहे थे। कप्तान ने हमारे "बला" पोत का नाम पढा और उसे सहायता या सकट का सकेत समझा। इसलिये उसने जहाज को हमारी ओर मोड दिया, आध घण्टे बाद वे हमे अपने जहाज पर ले गये और हम रोम शराब की चुस्किया लेते हुए इस दिलचस्प घटना पर विचार करने लगे

तो ऐसी बात है। नारियल का पेड मैंने उसे भेट कर दिया, उसने उसे सलून मे रखने का आदेश दिया, चप्पू और कम्पास भी मैंने उसे सौप दिये और अपने पास

तिथि
रेखांश अक्षांश
घटनाएं
उल्लेखनीय बातें
'बला' पोत डूब गया, इस बार हमेशा के लिये
नारियल

रक्षा-चक्र तथा पोत के नामवाला तख्ता रख लिया। आखिर तो स्मरणीय चीजे थी।

सो हम बैठे रहे। कप्तान ने बताया कि वह जहाज पर लकडी लाने के लिये कनाडा जा रहा है, इसके बाद समाचार-चर्चा हुई, इसके पश्चात वह चला गया और मैं ताजा खबरे पढने के लिये बैठा रहा।

वहा बैठा हुआ अखबारो को उलट-पलट रहा था। वहा के अखबार भी क्या है! उनमे अधिकतर तो विज्ञापन, अफवाहे और झूठी बाते ही थी और अचानक — पूरे पृष्ठ पर यह शीर्षक दिखाई दिया — हवाई धावा — मुजरिम भाग गया!"

स्पष्ट है कि मैने इसमे दिलचस्पी ली। पढने पर पता चला कि सब्बल को लेकर ही इतना हो-हल्ला मच रहा है। बात यह थी कि अपनी पतग से वह फूजीयामा के निकट ही नीचे उतरा था। जाहिर है कि वहा भीड जमा हो गयी, लोगो ने पतग के टुकडे-टुकडे कर डाले और यादगार के रूप मे झपट लिये।

किन्तु पतग तो अखबारो से बनायी गयी थी! सो पुलिस ने इस मामले को अपने हाथ मे ले लिया और सब्बल पर गैरकानूनी साहित्य लाने का अपराध लगाया। मैं नही जानता कि मामला क्या करवट लेता, किन्तु सौभाग्य से उसी समय आकाश काले बादलो से ढक गया, जमीन के नीचे दबे-घुटे धमाके हुए भीड मे घबराहट फैल गयी और सभी आतकित होकर भाग गये।

पवित्र पर्वत की ढाल पर मेरा बडा सहायक सब्बल और जापानी पुलिस के अफसर ही रह गये।

वे खडे हुए एक-दूसरे का मुह ताक रहे थे। उनके पैरो के नीचे धरती डोल रही थी स्पष्ट है कि हमारे ग्रह की ऊपरी सतह के लिये यह असाधारण स्थिति होती है और वह भिन्न रूपो मे लोगो मे भय उत्पन्न करती है। किन्तु आप जानते ह कि सब्बल ने तो जहाजो पर ही जीवन बिताया था और इस प्रकार के दोलन का अभ्यस्त था इसलिये वह स्थिति की भयानकता का उचित अनुमान नही लगा सका और पहाड की ढाल पर धीरे-धीरे ऊपर चढने लगा। इसी वक्त, जैसा कि कहते है, जमीन ने "जम्हाई ली" और भगोडे सब्बल तथा पीछा करनेवालो के बीच एक चौडी खाई-सी बन गयी। इसके बाद सब कुछ कालिख और अस्पष्टता की चादर से ढक गया।

पुलिस सब्बल के चिह्न खो बैठी और अब उसे खोज रही थी। किन्तु व्यर्थ ही।

उन्नीसवा अध्याय,

जिसके अन्त मे सब्बल अप्रत्याशित ही सामने आता है और अपने बारे मे गाना गाता है

सो अखबारो से मुझे इतना ही पता चला। किन्तु आप जानते है, मेरा मूड खराब करने के लिये इतना ही काफी था। यो भी कुछ कम परेशानी नही थी। कोई मजाक थोडे ही है। पोत डूब गया और यहा साथी तथा सहायक ऐसी मुसीबत मे पड गया। अगर पोत होता, तो दातकाट की परवाह न करते हुए सब्बल की रक्षा को चल देता। किन्तु अब तो लक्षित बन्दरगाह तक पहुचने का इन्तजार करना जरूरी था। वहा से किसी तरह निकलना जरूरी था, हम दोनो की जेब मे पैसे भी कुछ अधिक नही थे और जहाज धीरे-धीरे चल रहा था।

मैं कप्तान के पास गया।

'क्या पोत की रफ्तार नही बढायी जा सकती?" मैंने पूछा।

"मैं तो खुशी से ऐसा करता," उसने उत्तर दिया, "किन्तु मेरे पास कोयला झोकनेवाले बहुत कम हैं, वे काम पूरा नही कर पाते, बडी मुश्किल से भाप बनाये रखते है।"

सो मैंने सोच-विचार किया, फुक्स के साथ सलाह की, एक दिन और आराम कर लिया तथा इसके बाद हम दोनो झोकिये बन गये। वेतन तो कोई अधिक नही था, लेकिन एक तो, खाने-पीने का खर्च बचेगा, दूसरे, काम करते हुए इतनी ऊब नही महसूस होगी और फिर जहाज भी तेजी से चलने लगेगा

सो हम कोयला झोकने की अपनी ड्यूटिया बजाने लगे।

वहा झोकियो को विशेष वर्दी नही दी जाती और हमारे पास तो सिर्फ

वही कपडे थे जो हम पहने हुए थे। सो हमने कपडे उतार दिये और रिफायन वस्त्र के उद्देश्य से केवल जाघिये ही पहने रहे। वैसे तो यह ज्यादा अच्छा ही था, क्योकि वहा भट्ठी के पास बहुत सख्त गर्मी थी। किन्तु जूतो के मामले म हालत मगर थी। पैरो के नीचे कोयले थे गर्म राख होती थी, नगे पाव होने पर गर्मी लगती थी और जूते पहनते हुए दुख होता था।

किन्तु हम घबराये नही हमने चार बालटिया लेकर उन्हे पानी से भर लिया और बहुत अच्छा मामला बन गया। हम बालटियो म खडे खडे हो जाते थ मानो हमने रबड क जूते पहन रखे हो और अगर कोई अगारा उडकर आ गिरता था, तो वह 'शू' करके ही बुझ जाता था।

मैंने तो झोकिये का काम आसानी से निभा लिया – पहली बार तो ऐसा कर नही रहा था। किन्तु फुक्स हिम्मत हारता जाता था। उसने भट्ठी को पूरी तरह कोयले से भर दिया कोयले की परत सी जम गयी और वह उसे बेलचे से हिलाने-डुलाने लगा।

ओह मैंने कहा यहा बेलचे से भला क्या होगा? इस परत को तो तोडना चाहिए। सब्बल कहा है?

आप विश्वास करेगे कि मुझे अपनी पीठ के पीछे किसी की दबी-सी आवाज़ सुनाई दी –

'सब्बल आपकी सेवा मे उपस्थित है!

मैंने मुडकर देखा तो पाया कि कोयले के ढेर मे से मेरा उडा सहायक निकल रहा है – दुबलाया हुआ, कालिख पुता बढी दाढीवाला, फिर भी जीता-जागता सब्बल। मैं तो हैरानी से वही बैठ गया!

जाहिर है कि हमने एक-दूसरे को चूमा। फुक्स की आखो मे तो आसू भी आ गये। तीनो ने मिलकर भट्ठी को साफ किया, फिर बैठ गये और सब्बल ने अपनी मुसीबते सुनायी।

हवाई धावा बोलने और बुरे इरादे से आने की बात छोडकर उसके बारे मे अखबार मे सभी कुछ ठीक छपा था। धावा बोलने की बात ही क्या हो सकती थी – उसे तो हवा उडा ले गयी थी। सो ऐसी बात थी। जब जमीन का डोलना बन्द हुआ, तो वह पहाड से उतरकर शहर चला गया। वह जा रहा था, डरता था और इधर-उधर देखता जाता था। किन्तु जिधर भी देखता, उधर ही पुलिसवाले दिखाई देते, जिधर भी मुडता – कोई भेदिया सामने होता

बात यह है कि अगर वह शान्त रहता, तो शायद किसी की नजर मे आये बिना बच निकलता, किन्तु वहा तो स्नायुओ का इतना बुरा हाल हो रहा था। सो सब्बल की हिम्मत जवाब दे गयी, उसने चाल तेज कर दी और उसे पता

तिथि रेखांश अक्षांश
घटनाएं
उल्लेखनीय बातें
सब्बल के अचानक प्रकट होने से 'बला' पोत का नाविक-दल फिर पहले जैसा हो गया

भी नही चला कि कब वह भागने लगा।

वह भागता था, मुड-मुडकर देखता जाता था और भेदिये, गुप्त पुलिसवाले, पुलिस के लोग, छोकरे, कुत्ते, मोटरे और रिक्शे उसका पीछा कर रहे थे चीख-चिल्लाहट, शोर-शराबा और पैरो की धमाधम गूज रही थी

किन्तु वहा वह जाता भी तो कहा? वह सागर की ओर नीचे भाग गया। बन्दरगाह के कोयला-भण्डार तक जाकर कोयले मे छिप बैठा। उसी वक्त यह जहाज कोयला लेने के लिये वहा जा खडा हुआ। उस जगह रज्जुमार्ग मे कोयला लादा जाता है – जितना सम्भव होता है, डोल में ही कोयला भर जाता है और जहाज के ऊपर पहुचकर वह उसे उलट देता है।

सो सब्बल भी ऐसे ही डोल मे पहुच गया। वह सम्भला ही था, उसने डोल मे से बाहर कूदना चाहा क्योकि उसे ख्याल आया कि फिर उसका पीछा किया जायेगा – मगर डोल इसी बीच चल पडा था, कुछ क्षण बाद उलट गया और सब्बल मुह से आवाज भी नही निकाल पाया कि धम से कोयले की कोठरी मे जा गिरा।

उसने हाथो-पावो को टटोलकर देखा – सही-सलामत थे, जाने के लिये कोई जगह नही थी और साम लेना सम्भव था सो उसने इस विवशतापूर्ण निष्क्रियता से लाभ उठाने, खूब सो लेने का निर्णय किया।

वह कोयले के ढेर मे घुसकर सो गया। मेरा आदेश कानो मे पडने तक वह ऐसे ही सोता रहा।

सो ऐसी बात है। कुल मिलाकर सब अच्छा ही हुआ। "बला" का नाविक-दल फिर से एकसाथ हो गया और हम लौटने की योजनाए बनाने लगे। उसी वक्त हमारी ड्यूटी खत्म हो गयी और मैं सोचने लगा – मैं और फुक्स तो उचित ढग से जहाज पर आये है, क्योकि हमारा पोत डूब गया था, किन्तु सब्बल – एक तो वह टिकट के बिना है और दूसरे, एक तरह से भागा हुआ अपराधी है। कौन जाने, यह कप्तान कैसा आदमी निकले? जब तक सब कुछ अच्छा है, वह भी अच्छा है, किन्तु यदि उसे यह किस्सा मालूम हो गया, तो सब्बल को अधिकारियो के हवाले कर सकता है। तब बचाओ उसे! थोडे मे यह कि मैने सलाह-मशविरा किया।

"वही बैठे रहिये," मैंने कहा। "आप तो अब कोयले मे रहने के अभ्यस्त हो गये है। खाना हम आपको ला दिया करेगे और ड्यूटी एक साथ पूरी किया करेगे। उससे हमारा भी कुछ काम हल्का हो जायेगा – शक्ति की तैतीस प्रतिशत बचत होगी। इसके अलावा किसी मुसीबत का खतरा भी नही रहेगा।

सब्बल तो किसी भी तरह की बहस के बिना राजी हो गया।

"सिर्फ यही है कि वहा ऊब महसूस होगी," वह बोला। "वहा अधेरा है और मै अच्छी तरह से नीद भी पूरी कर चुका हू। समझ मे नही आता कि किस चीज मे अपना मन लगाऊ।'

"इस बारे मे तो कुछ सोचा जा सकता है," मैने उसकी बात काटी। "अधेरे मे कविता रचना बहुत अच्छा रहता है या फिर आप दस लाख तक गिनने की कोशिश करे। उनीदेपन को दूर करने मे इससे बडी सहायता मिलती है "

' क्या मै गाना गा सकता हू, क्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच?" उसने पूछा।

"क्या जवाब दू मै आपको इसका?" मैने कहा। "मै ऐसा करना बहुत अच्छा तो नही समझता, किन्तु यदि आपको ऐसा पसन्द है, तो गाइये, किन्तु उसे अपने तक ही सीमित रखते हुए।"

तो ऐसी बात है। हमने अपनी ड्यूटी पूरी कर ली। दूसरे झोकिये ड्यूटी पर आ गये। सब्बल कोयले की कोठरी मे वापस चला गया और मै तथा फुक्स डेक पर। अचानक क्या देखा कि झोकिये ऐसे भागे आ रहे है मानो किसी ने उन पर उबलता पानी डाल दिया हो।

मैने पूछा –

"क्या हुआ?"

"वहा, कोयले की कोठरी मे कोई भूत-प्रेत आ घुसा लगता है। भोपू की तरह शोर मचा रहा है, किन्तु क्या गाता है, समझ मे नही आ रहा।"

मैं फौरन मामले को समझ गया।

"जरा ठहरिये," मैंने कहा, "मै नीचे जाकर पता लगाता हू कि क्या किस्सा है।"

मै नीचे उतरा और वास्तव मे ही मुझे बडी भयानक आवाजे सुनाई दी – धुन कुछ अस्पष्ट-सी थी, शब्द अटपटे-से थे, किन्तु आवाज नही जानता कि कैसे उसका वर्णन करू। मैने एक बार श्री लका मे हाथियो को चिघाडते सुना था, उसका गाना तो उसे भी मात दे रहा था।

हा, ऐसी बात है। मैने सुना और समझ गया कि सब्बल गा रहा है। सो मैं कोयले की कोठरी मे घुस गया, चाहा कि ऐसी असावधानी के लिये उसको भला-बुरा कहू। किन्तु कोठरी मे पहुचते-पहुचते ही समझ गया कि मैं स्वय इसके लिये दोषी हू – फिर से मैंने उसे दो अर्थ रखनेवाला आदेश दे दिया था। इस मामले मे सब्बल के साथ हमेशा ही कोई न कोई गलतफहमी हो जाती थी।

मैं कोठरी मे घुस रहा था और मुझे यह गाना सुनाई दे रहा था –

> बडा महायक युद्ध-पोत था
> जिसका नाम "रना",
> तूफानी सागर लहरो ने
> जिसका निगल लिया।
> किसी पराये पोत यान पर
> अब तो मैं जाता,
> मग्न कोयले पर बैठा हू
> डरता घबराता।

सच बात तो यह है कि उसकी लानत-मलामत नही हो सकती थी, क्योकि उसका गाना उस तक ही सीमित था यानी वह अपने ही सुर मे गा रहा था, यद्यपि मेरा भाव यह था कि वह ऊचे न गाये। उसने मेरे शब्दो का जो अर्थ समझा, उसके अनुसार सब कुछ ठीक था हा रना को युद्ध-पोत कहकर उसने जरूर थोडी अतिशयोक्ति की थी। युद्ध पोत का क्या सवाल उठता था! वैसे यह तो बात को सुन्दर ढग से कहने का एक तरीका था। गाने मे ऐसा किया जा सकता है। रिपोर्ट पेश करने जहाज के फेरे की सूचना देने और सामान की दस्तावेज तैयार करने के मामले मे इस तरह की अतिशयोक्ति नही की जा सकती। किन्तु गाने मे ऐसा क्यो न किया जाये? बडा युद्ध-पोत भी कहा जा सकता है, वह अधिक प्रभावपूर्ण हो जायेगा।

फिर भी मैंने सव्वल को गाने से मना किया।

"मेरे दोस्त, आप मेरी बात का सही अर्थ नही समझे। अधिक अच्छा होगा कि आप हमारे बारे मे गाये, किन्तु ऐसे कि किसी दूसरे को सुनाई न दे। कही ऐसा न हो कि इसका कोई बुरा नतीजा सामने आये।"

वह चुप हो गया, मेरी बात से सहमत था।

"आप ठीक कहते है," वह बोला, "आपने गाने की अनुमति दे दी और मैंने इसके परिणाम पर विचार नही किया। मै अब गाऊगा नही, गिनती करना ही ज्यादा अच्छा रहेगा "

मैंने बाहर आकर कोयला झोकनेवालो को शान्त किया। उन्हे बताया कि यह तो भट्ठी मे आग भनभना रही थी। मिस्तरी ने भी इसकी पुष्टि कर दी।

"ऐसा भी होता है," उसने कहा।

बीसवा अध्याय,

जिसमे सब्बल और फुक्स खरीदारी मे असावधानी दिखाते हैं और गपोडगग बीज गणित के नियमो की व्यावहारिक जाच करते हैं

आखिर हम कनाडा पहुच गये। मैं और फुक्स कप्तान के पास गये, उससे विदा ली तथा रात के वक्त सब्बल को भी चोरी-छिपे तट पर पहुचा दिया। हम एक शान्त-से भठियारखाने मे जा बैठे स्थिति पर विचार करने और यह सोचने लगे कि आगे क्या किया जाये। हमारा रास्ता क्या होगा, इसकी हमे कुछ परेशानी नही हुई। ऐसे तय किया – कनाडा से अलास्का, अलास्का से बेरिंग जलग्रीवा को लाघते हुए चुकोत्का जायेंगे और वहा तो हम अपने घर मे होगे, वहा तो किसी तरह बात बन ही जायेगी

हमारी यह योजना पक्की हो गयी।

किन्तु यातायात साधन की समस्या ने हमे सोचने के लिये विवश किया। वहा जाडा था, नदिया जम गयी थी, सभी ओर बर्फ थी, रेले थी नही, मोटरगाडी से जाना सम्भव नही होगा। जहाज से जाने के लिये वसन्त तक प्रतीक्षा करनी पडती

हमने सलाह-मशविरा करके स्लेज खरीदने का निर्णय किया। उसमे जोतने के लिये हिरन मिल जायेंगे, तो हिरन ले लेगे और कुत्ते मिल जायेंगे, तो वही सही। सो हम खरीदारी के लिये अलग-अलग दिशाओ मे चल दिये

मुझे स्लेज खरीदनी थी, सब्बल को हिरन और फुक्स को कुत्ते।

स्लेज तो मुझे मजबूत, सुन्दर और आरामदेह मिल गयी। सब्बल कुछ कम सफल रहा। वह औसत मोटापेवाला चितकबरा हिरन ले आया। विशेषज्ञो ने उसे देखा जाचा-परखा और यह निष्कर्ष निकाला – सीगो की दृष्टि से प्रथम कोटि का हिरन है, किन्तु टागो-पैरो की दृष्टि से औसत से कम कोटि का – उसके सुम मकरे थे।

सो हमने उसे आज़माकर देखने का निर्णय किया। उसे स्लेज मे जोता। हिरन उसे आगे बढा ही नही पा रहा था। फूली-फूली बर्फ पर तो किसी तरह कुछ आगे बढा, किन्तु जब नदी की जमी हुई बर्फ पर पहुचे, तो हमारा हिरन एक कदम भी नही उठा पाया। उसके पाव यो ही फिसलते जा रहे थे।

मै समझ गया कि उसके सुमो की नालबन्दी करनी चाहिये, किन्तु नाल तो थे नही।

इस मामले मे पोत के पृष्ठ भाग का तख्ता हमारे काम आया। व्यर्थ ही मैं उसे अपने साथ नही लाया था। तावे के बचे अक्षरो को हमने उस पर से उतारा, उनके चार नाल बनाये और उन्ह सुमो पर लगा दिया। आप समझिये कि इससे मदद मिली, लेकिन बहुत नही। हिरन के सुमो का फिसलना कम हो गया, किन्तु उसकी चाल फिर भी तेज नही हुई। काहिल जानवर पल्ले पड गया था! इसी वक्त फुक्स अपनी खरीदारी करके लौट आया। वह नुकीली थूथनीवाला छोटा-सा कुत्ता लाया। कुत्ते के प्रमाणपत्र के अनुसार वह पुरस्कार-विजेता और सबसे आगे जोता जानेवाला कुत्ता था। सो हमने उसकी विशिष्टता, उसके अग्रिम होने के गुण के अनुरूप उसे ही आगे जोतने का निर्णय किया। किन्तु यह जोतने की बात कह देना आसान है। हिरन के साथ निपटने मे तो हमे जरा भी देर नही लगी – जुए की जगह उस पर रक्षा-चक्र डाल दिया (रक्षा-चक्र भी काम आ गया, ढग से व्यवस्थित धधे मे हर चीज काम आ जाती है), किन्तु कुत्ता काबू मे नही आ रहा था, काटता और दात दिखाता था। कैसे कोई जोतेगा ऐसे को!

फिर भी किसी तरह उसे जोत ही लिया। उसके लिये जुआ बनाया, उसे जबर्दस्ती बमो के बीच धकेलकर जोता और चलने के लिये छोड दिया

सो आपको बताता हू कि अच्छा खासा तमाशा शुरु हो गया! हिरन सुम पटकता था, सीग मारता था, कुत्ता भौकता था और कल्पना कीजिये कि दोनो जानवर तेजी से पीछे को हटते जाते थे।

मैंने तो ऐसे पीछे हटते हुए ही चलना चाहा, किन्तु तजरबे के लिये उनकी जगहे बदलने का निर्णय किया। बेशक ऐसा कहा जाता है कि मदो को आगे-पीछे कर देने से परिणाम नही बदलता, बीज गणित मे तो ऐसा ही होता है, किन्तु यहा बिल्कुल दूसरी बात थी।

सो हमने जगहे बदलकर उन्हे स्लेज मे जोता।

आप जानते है कि क्या नतीजा हुआ? हमारा हिरन दूसरी ही चाल से दौडने लगा, अब उसके सुम ही चमकते दिखाई देते थे।

कनाडा
भले जानवर के
बढ़िया सींग
भेड़िये का बच्चा

कुत्ता उसके पीछे पीछे दौड रहा था। वह दात किटकिटाता था, गुर्राता था, मगर इजन की तरह जोर से स्लेज को खीच रहा था।

सब्बल और मै तो कूदकर बडी मुश्किल से स्लेज पर चढ पाये और फुक्स रस्सा ही पकड पाया। वह आध मील तक तूफान के लगर की भाति ही खिचता चला गया।

आपको बताता हू कि बहुत ही बढिया दौड रही यह! मैने गति-मापक अपने साथ नही लिया था और जमी हुई बर्फ पर उमका उपयोग करना भी कठिन है। किंतु तट की चीजो को ध्यान मे रखते हुए यह कहा जा सकता है कि हमारी गति आश्चर्यचकित करनेवाली थी। गाव-बस्तियो की झलक मिलती थी, कुहासे मे वे मानो क्षण भर को उभरती थी, स्लेज जमी बर्फ पर उछलती थी, हवा कानो मे सीटी बजाती थी।

हिरन के नथुनो से भाप निकल रही थी, सुम चमकते थे और जमी बर्फ पर सुमो पर लगे अक्षर बहुत साफ-साफ अकित होते जाते थे।

कुत्ता भी अपना जोर लगा रहा था, हूकता था, गुर्राता था, उमकी जबान एक ओर को लटक गयी थी, मगर वह पीछे नही रह रहा था।

मक्षेप मे यही कि आन की आन मे अलास्का की मीमा पर पहुच गये। वहा बन्दूके और झण्डिया लिये हुए निर्णायक खडे थे।

मैंने स्लेज को रोकना चाहा – सभी औपचारिकताए पूरी किये बिना सीमा को लाघना अच्छा नही लग रहा था। मैं चिल्लाया –

'धीमे हो जाओ! रुको!"

लेकिन किम पर असर हो सकता था! मेरा हिरन न तो मेरी तरफ देखता और न ही मेरी बात सुनने को तैयार था, ऐमे भागा जा रहा था मानो उसे चाबी लगी हुई हो।

इसी वक्त एक निर्णायक ने रुमाल हिलाया और शेष ने गोलियो की बौछार की मैंने मोचा – अपना खेल खत्म हो गया, किन्तु देखा कि सब कुछ मही-सलामत है। हम इसी तरह तेजी से आगे बढते गये। कोई पाच मिनट बाद एक स्लेज को पीछे छोड गये, उसके बाद अन्य दो को पीछे छोडा और इसके बाद तो इतनी स्लेजो से आगे निकले कि मैंने गिनना ही बन्द कर दिया। दूमरी स्लेजोवाले रफ्तार बढाना चाहते थे और मै खुशी से रफ्तार धीमी कर लेता, किन्तु अपनी स्लेज को किसी तरह मे रोक नही पा रहा था और लीजिये, मोड के पीछे यूकोन किला दिखाई देने लगा। वहा जमी हुई बर्फ पर लोगो की भारी भीड जमा थी। वे जोर-जोर

से हाथ हिला रहे थे, चीखते-चिल्लाते थे और हवा म गोनिया छोडते थे। लोग इतने अधिक थे कि वर्फ उनका वजन वर्दाश्त न कर मकी, धम गयी।

लोगो की भीड तटो की ओर भाग गयी, हमारे बिल्कुल सामने वडा जल-विस्तार बन गया था और हम बडी तेजी मे उसकी तरफ बढते जा रहे थे। मने देखा कि मामला बिल्कुल चौपट होनेवाला हे। सो मेंने निर्णय कर लिया—स्लेज को एक ओर को भुका दिया, वम टूट गये, मैं अपने कर्मियो सहित वर्फ मे जा गिरा और मेरा हिरन कुत्ते तथा स्लेज सहित पानी मे जा गिरा।

वे डूब सकते थे, किन्तु रक्षा-चक्र ने ऐसा होने नही दिया। मैने देखा कि वे तैर रहे है, फूत्कार करते ह, हाफ रहे हे

इसी ममय सद्भावना रखनेवाले दर्शक फदा ले आये, उसमे हिरन के सीगो को फसाकर खीचने लगे और कल्पना कीजिये, उस भले जानवर के वे सीग, जिनकी मजवूती की इतनी प्रशसा की जाती है, बडी आसानी मे अलग हो गये और उनके नीचे से बछडे के सीगो जैसे छोटे-छोटे सीग निकल आये। सौभाग्य से ये सीग मजवूत रहे। उनकी बदौलत पूरी स्लेज को बाहर खीच लिया गया। मेरे हिरन ने अपने को भिभोडा, नथुनो को चाटा और बछडे की तरह दयनीय ढग से रभा उठा।

मैंने उसे ध्यान से देखा और पाया कि वह तो सचमुच बिना पूछवाला बछडा ही है। कनाडा मे सब्बल को धोखा दे दिया गया था। अब तो यह समभना कुछ मुश्किल नही था कि क्यो हमारा हिरन नालो के बिना जमी बर्फ पर बैल की तरह डोलता, नाचता था। लेकिन इस जानवर मे इतनी फुर्ती कहा से आ गयी, जो उसके स्वभाव के अनुरूप नही थी, मैं तत्काल यह नही समभ पाया था।

किन्तु कुत्तो के विशेषज्ञो ने यह बात भी स्पष्ट कर दी। पता चला कि फुक्स की आखो मे भी धूल भोकी गयी थी—उमे कुत्ते की जगह नौउम्र भेडिया दे दिया गया था।

सो कैसी दिलचस्प बात हो गयी थी—कुत्ते के रूप मे नौउम्र भेडिये का कोई महत्व नही, वह कुत्ता नही, उसकी दो कौडी कीमत नही, बछडा अपने तौर पर हिरन नही, किन्तु एक साथ इन दोनो का कितना बढिया परिणाम रहा। बीज-गणित का दूसरा नियम—ऋण के दो चिह्नवाले अक गुणा करने पर गुणनफल धनवाला अक होता है—यहा बिल्कुल ठीक सिद्ध हुआ था।

सो ऐसी बात है। जब हमारे भावावेश कुछ शान्त हो गये, तो हमारे ऐसे समारोही स्वागत का कारण भी स्पष्ट हो गया। उनके यहा उस दिन जाडे की स्लेज-दौडे हो रही थी। हमे इसका न तो ध्यान आया, न सान गुमान ही हुआ, मगर अनजाने ही हमने स्लेज-दौड मे प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया था।

इक्कीसवा अध्याय,

जिसमे एडमिरल दातकाट कप्तान गपोड़शख को काफी कठिन परिस्थिति मे से निकलने मे खुद ही मदद देता है

यूकोन मे हम तीन दिन रहे, खुद आराम किया और जानवरो को भी आराम करने दिया। मेहमानो क नाते हमे पूरी आजादी दी गयी, केवल यह रक्का लिखवा लिया गया कि हम घर से कही गायब नही होगे और मामले को अधिक पक्का करने के लिये ओसारे के पास दो जासूस तैनात कर दिये। खैर, तीन दिन के बाद हमने स्लेज मे जानवर जोते और अपने रास्ते पर चल दिये। यूकोन तो आन की आन मे पीछे रह गया, वेरिंग जलग्रीवा मे पहुचे और सीधे चुकोत्का को चल दिये। सेंट लारेंस द्वीप तक ठीक तरह से पहुच गये, मगर वहा रुकना पडा। जोर का तूफान आ गया, जमी वर्फ की सतह तिडक गयी और हम दरार के सामने ऐसे ही रुकने को विवश हो गये जैसे छिछले पानी मे। एक टीले के दामन मे वर्फ मे ही तम्बू गाडकर हम टूटी हुई वर्फ के जुडने का इन्तजार करने लगे। वैसे तो कोई खास बात नही थी, कही पहुचने की उतावली भी नही थी और रसद भी काफी थी। हमने रास्ते मे सूखे मास का आटा और वर्फ से जमी हुई मछली काफी जमा कर ली थी। थोडे मे यह कि भूख से मरने का तो कोई सवाल नही था, किन्तु ठण्ड ने जरूर परेशान किया। एक-दूसरे के साथ सटे बैठे थे और काप रहे थे। फुक्स को तो खास तौर पर बडी तकलीफ हो रही थी—उसकी दाढी ठण्ड से बिल्कुल जम गयी थी, वर्फ की कलमो मे बदल गयी थी, हमारा नौजवान कुनमुना रहा था, शिकवा शिकायत कर रहा था। मस्त्रल भी जैसे-तैसे ही यह सहन कर पा रहा था जी ऐसी रात थी
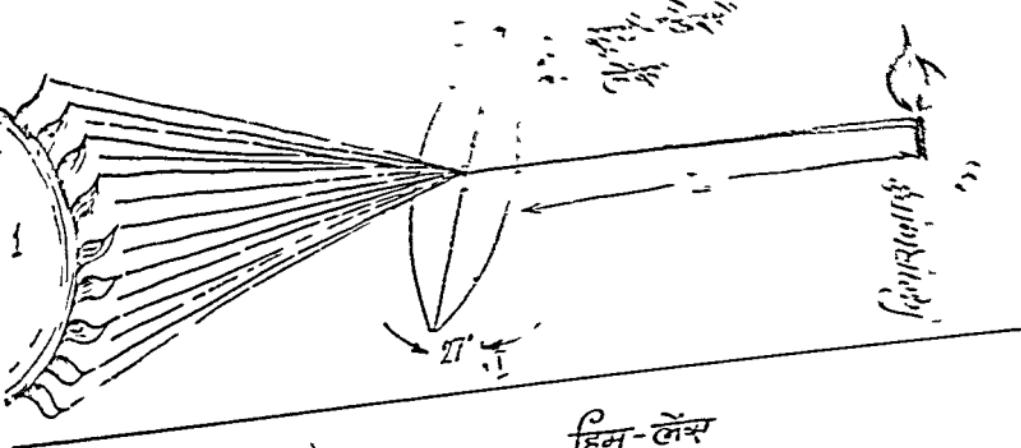
हिम-लेंस

सो मैंने देखा कि कुछ तो करना चाहिये। बैठकर किसी तरह से गर्म होने के विभिन्न उपाय सोचने लगा। लकडी, कोयला, मिट्टी का तेल – यह सब हमारे बस का नही था। तभी मुझे याद आया कि कैसे सरकस मे एक सम्मोहन करनेवाले ने एकटक देखते हुए पानी को उबाल दिया था।

मैंने सोचा कि मैं भी ऐसा ही क्यो न करूं! मेरी इच्छाशक्ति तो बडी दृढ है, लोहे जैसी मजबूत है। मैं भी ऐसी कोशिश करके क्यो न देखू? मैंने सख्त जमी बर्फ पर नजर टिका दी – उसके पानी बनकर उबलने की बात तो दूर, वह तो पिघलने भी नही लगी मैं समझ गया कि वह सब बकवास था, धोखा था, सरकस का एक खेल था। हाथो की सफाई या अधिक सीधे-सादे शब्दो मे फोकुस* था यह शब्द याद आते ही मेरे दिमाग मे एक शानदार विचार कौंध गया।

मैंने कुल्हाडा उठाया जमी बर्फ की एक उपयुक्त सिल चुन ली, उसके गिर्द निशान लगाये, उसे ढग से काटकर लेन्स-सा बनाया और अपने तम्बू मे लौटा।

"तो साथियो, मुझे 'फोकुस' मे मदद दीजिये।"

सब्बल उठा और बडबडाने लगा –

"आश्चर्य होता है मुझे आप पर, ख्रिस्तोफोर बोनीफात्येविच। यहा तो हम ठण्ड से कुलफी बननेवाले है और आप खेल-तमाशे दिखाने के फेर मे पडे है।"

फुक्स भी बडबडाया –

"खेल-तमाशे! लाल सागर मे मैं सिर्फ जाघिया पहनकर नहाता था, तब भी बेहद गर्मी महसूस होती थी और यहा तीन पतलून पहन लेने पर भी तन गर्म नही हो रहा है। ये है खेल-तमाशे!"

किन्तु मैंने उन्हे डाटकर कहा –

"फुजूल की बाते बन्द करे! मेरा आदेश सुने! बर्फ की इस सिल को उठाये और इस तरह थामे रहे! पाच डिग्री बाये को! थोडा और बाये को "

सो उन्होने मेरे हाथो से बना हुआ बर्फ का बडा-सा लेन्स उठा लिया, किरण-पुज को बर्फ पर सकेन्द्रित किया और हमने देखा कि वह जमी बर्फ को पिघलाने लगा, उसमे सूराख होने लगा, भाप की सू-सू ही सुनाई देती थी। किरण-पुज को केतली पर सकेन्द्रित किया, पलक झपकते मे पानी उबलने लगा, ढक्कन तक उडकर दूर जा गिरा। सो इस तरह हमने ठण्ड पर काबू पाया। वहा रहने लगे।

---

* फोकुस – रूसी भाषा के इस शब्द के दो अर्थ है हाथ की सफाई या मदारी का खेल और किरण-केन्द्र। यहा मदारी के खेल से अभिप्राय है। –अनु०

मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा था। शैतान ही जाने, यह कैसे हुआ! मेरी आखो के सामने ही तो "बला" सागर-तल मे चला गया था। आखो की क्या बात है, वे तो धोखा भी दे सकती है। किन्तु ड्यूटी के रजिस्टर मे इस आशय की टिप्पणी भी तो दर्ज है। कुछ भी कहिये, रजिस्टर मे लिखी बात तो दस्तावेज है, महत्वपूर्ण कागज है। फुक्स इसका साक्षी था और अब यह नतीजा निकलता है कि खतरे की घडी मे मै पोत छोडकर भाग गया। सो मैं सोचने लगा, "पास आने पर स्थिति को स्पष्ट कर लेगे।" पोत पास आया, तो सारी चीज ही गडबड-झाला बन गयी। क्या देखता हू कि सब्बल चालन-चक्र सम्भाले है, फुक्स भी निकट ही है और मस्तूल के करीब मैं ही पोत को घाट पर ले जाने के आदेश दे रहा हू।

"ऐसा कैसे हो सकता है!" मैंने सोचा। "शायद खुद मैं ही मैं नही हू?" ध्यान से अपने को देखा – नही, मैं ही हू। तब तट पर मैं नही हू? अपने पेट को छूकर देखा – मगर तट पर भी तो मैं ही हू। "यह क्या माजरा है," मैं सोच मे पड गया, क्या मैं एक नही, दो व्यक्ति हू? नही, यह सब बकवास है, मुझे सपना आया है "

"सब्बल " मैने कहा, "मुझे चुटकी काटिये।"

सब्बल भी हतप्रभ हो रहा था।

फिर भी उसने चुटकी काटी, सो भी इतने जोर से कि मैं बर्दाश्त नही कर पाया, चिल्ला उठा

इसी समय वहा एकत्रित लोगो का सब्बल, फुक्स और मेरी ओर ध्यान गया। उन्होने हमे घेर लिया।

"तो कप्तान वे बोले, "आप यहा उत्पन्न हो गयी स्थिति को शायद स्पष्ट कर सकेगे?"

इसी बीच बला" पोत विधिवत् घाट की ओर बढता आ रहा था। मेरी शक्ल-सूरतवाला दूसरा कप्तान लोगो को सिर झुका रहा था, फौजी सलामी दे रहा था।

"अपना परिचय देने की अनुमति चाहता हू," उसने कहा, "अपने नाविक-दल के साथ दूर-दराज के सागरो महासागरो की यात्रा करके लौटनेवाला कप्तान गपोडशख। शौक के रूप मे दुनिया भर का चक्कर लगाकर पेत्रोपाव्लोव्स्क-कमचात्स्की बन्दरगाह मे पहुच गया हू "

घाट पर खडे लोग "हुर्रा" चिल्ला उठे, लेकिन मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा था।

आपसे यह कहना चाहता हू कि मैं भूतो प्रेतो मे विश्वास नही करता

उल्लेखनीय
घटनाएं
अक्षांश
तिथि
दूसरा सम्बल
दूसरे गपोडशंख के "पेट" में भी निकलते हुए रोये
मेरा उज्वल
दूसरा फुक्स
दूसरे फुक्स की

हू किन्तु इस वक्त मुझे कुछ सोचना पडा। समझने है न कि आदमी सोने भी कैसे नही? मेरे सामने जीता जागता भूत खडा था और बहुत ही बेहयाई से बात कर रहा था।

फिर सबसे बडी चीज तो यह थी कि मैं अपने को बडी बेहूदा स्थिति मे पा रहा था। जैसे कि मैं कोई भांसेबाज, कोई ढोंगी-कपटी होऊ "खैर, कोई बात नही ' मैंने सोचा "देखते है कि आगे क्या होता है।"

सो वे तट पर आये। मैंने स्थिति को स्पष्ट करना चाहा, उनकी ओर बढने की कोशिश की लेकिन लोग मुझे एक तरफ धकेल देते थे। मैंने उन्हे दूसरे गपोडशंख मे यह कहते सुना कि यहा एक अन्य गपोडशंख अपने नाविक-दल के साथ पहले से ही विद्यमान है।

वह रुका उसने अपने चारो ओर नजर घुमायी और अचानक कह उठा—

यह बकवास है! कोई गपोडशंख नही हो सकता मैंने अपने हाथो से उसे शान्त महासागर मे डुबोया था।"

मैं यह सुनते ही सारी बात एकदम समझ गया। देखा कि मेरा पुराना दोस्त, सपने देखनेवाला एडमिरल श्रीमान दातकाट मेरी सूरत बनाकर काम कर रहा है।

सो मै अपने नाविक-दल के साथ भीड को चीरकर आगे बढा और नकली गपोडशंख के बिल्कुल पास जा पहुचा।

' नमस्ते एडमिरल!' मैंने कहा। ' यात्रा कैसी रही ?"

वह चकरा गया मुह मे बोल न फूटा। इसी वक्त सब्बल आगे बढा और उसने कसकर जो घूसा मारा तो दूसरा सब्बल धूल चाटने लगा। उसके नीचे गिरने पर देखा कि पतलून के नीचे से टागो की जगह पायामे बाहर निकले हुए है।

अब क्या था, फुक्स की भी हिम्मत बढ गयी। वह नकली फुक्स पर झपटा, उसकी दाढी पकडकर एक ही झटके मे अलग कर दी।

सब्बल और फुक्स का काम तो आसान रहा—एक लम्बू था और दूसरे के दाढी थी, किन्तु मेरा तो ऐसा कोई विशेष लक्षण नही था "मैं अपनी शक्ल-सूरतवाले की कैसे खबर लू?" मैं सोचने लगा।

जब तक मै यह सोचू, उसने खुद ही इसके लिये मुझसे अच्छा समाधान खोज निकाला। यह देखकर कि उसका भडाफोड हो गया, उसने कटार निकाली, दोनो हाथो से मूठ पकडी और पेट को आर-पार चीर डाला हाराकिरी,* जापानी

* जापान के उच्च वर्गों मे प्रचलित आत्महत्या की विधि। —अनु०

फौजी का असली करतब मैंने तो आखे भी मूद ली। मेरे नौजवान दोस्त, ऐसी चीजो को शान्त मन से नही देख सकता। सो आखे बन्द किये हुए ही खडा रहा इन्तजार करता रहा।

अचानक तट पर जमा लोगो की धीरे-धीरे हसने की आवाज सुनाई दी हसी कुछ ऊची हुई और फिर तो ठहाको मे वदल गयी। तब मैने आखे खोली – फिर भी मेरी समझ मे कुछ नही आया दिन गर्म था, सूरज चमक रहा था, आकाश स्वच्छ था, मगर कही से मानो बर्फ-सी गिर रही थी।

मैंने ध्यान से देखा, तो क्या पाया कि नकली गपोडशख काफी दुबला गया है, मगर जिन्दा है, उसके पेट पर बहुत बडा घाव मुह वाये है और उसमे से सारे तट पर रोये उड रहे है

वस, लोगो ने उससे कटार छीन ली, खासे आदर के साथ उसकी वाह मे वाह डालकर उसे वहा से ले गये। उसके नाविको को भी ले जाया गया। हम सम्भल भी नही पाये थे कि लोग हम खुशी मे उछालने लगे। सो उछाल लिया शान्त हो गये, बातचीत करके स्थिति स्पष्ट की और इसके बाद पोत को देखने चल दिये।

मैंने देखा कि पोत मेरा नही है। फिर भी उससे बेहद मिलता-जुलता है। अगर मैंने अपने पोत पर सारी दुनिया का चक्कर न लगाया होता, तो सच कहता हू, खुद भी धोखा खा जाता। इस पोत को, जैसे होना चाहिए, ढग से रजिस्टर किया और अगले दिन बडा जहाज आ गया।

हमने लोगो से विदा ली। इसके बाद मैं और फक्स वहा से चल दिये तथा जैसा कि आप देख रहे हैं, मैं अभी तक जीवित और स्वस्थ हू तथा दिल से जवान हू। फुक्स भला आदमी वन गया, सिनेमा मे खल नायको की भूमिकाए खेलने लगा – उसकी शक्ल-सूरत इसके लिये बहुत उपयुक्त थी। मल्वल उसी पोत का कप्तान वनकर वही रह गया।

कुछ दिनो बाद मुझे उसका पत्र मिला। उसने लिखा था कि ढग से काम चला रहा है और पोत भी कुछ बुरा नही चल रहा था। जाहिर है कि यह हमारे "वला" पोत जैसा तो नही है, मगर कोई बात नही, फिर भी चल रहा है जी हा।

सो ऐसी बात है, मेरे नौजवान दोस्त। और आप कहते है कि मैंने जहाजरानी नही की। भैया मेरे, बहुत चलाया है मैंने पोत को सागरो-महासागरो मे, और सो भी कैसे! अव तो बूढा हो गया हू, स्मरणशक्ति कमजोर होती जा रही है नही तो आपको सुनाता कि कैसी जहाजरानी की है मैंने!

समाप्त

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय वस्तु, अनुवाद और डिजाइन के बारे में आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये:

प्रगति प्रकाशन
१७, जूबोव्स्की बुलवार
मास्को, सोवियत संघ।